ISSN 2349-6614

जून 2023

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

दशक बाद दक्षिण द्वार में पुनर्प्रवेश

Gurukul College of Pharmacy

Gaon-Budal, Panchayat Lalpura, Kurabad, Udaipur, Rajasthan
E-mail : gurukulcollegepharmacy@gmail.com

Contact : +91-97727-40-999, Mob. : +91-94141-680-50
Contact Udaipur Office : Purohitan Ki Madri, Higway By Pass

02 जून 2023

जून 2023 वर्ष: 21 अंक: 02

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

निकाय चुनाव

उत्तरप्रदेश में ट्रिपल इंजन
पेज 08

चिंतनीय

घातक है महासागरों के तल में खनन
पेज 14

पर्यावरण

पृथ्वी का संरक्षण और शृंगार करें
पेज 16

योग

मन को साधता है योग नमस्कार
पेज 20

दावा

पर्याप्त पानी पीने से जल्दी नहीं आता बुढ़ापा
पेज 38

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

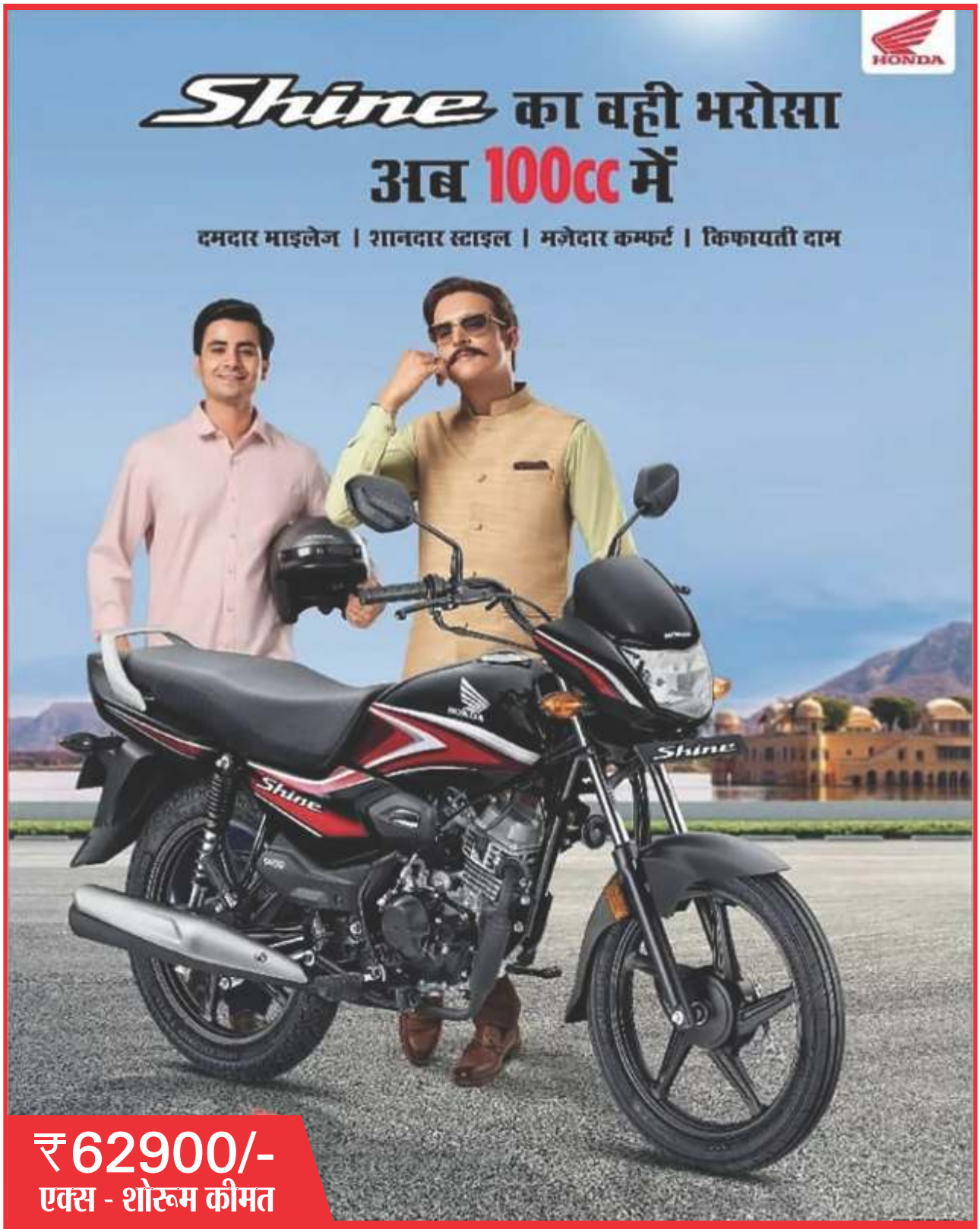

Lakecity Honda

Commerce House, Town Hall Road, Udaipur (Raj.) M.: 9776977674

कर्नाटक में जख्म, यूपी से मरहम

हिमाचल के बाद छः महिने के भीतर कांग्रेस को कर्नाटक में मिली सफलता ने उसे 2024 के आम चुनावों के लिए उत्साहित कर दिया है, तो भाजपा खेमे में गहरी निराशा है। दस वर्ष बाद कांग्रेस यहां पुनः पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में लौट आई है। राजनीति में दक्षिण के द्वार कर्नाटक के नतीजों का इसी साल 4 राज्यों में होने वाले और 2024 के आमचुनावों पर असर पड़े बिना नहीं रहेगा।

कर्नाटक में वर्ष 2004,2008 और फिर 2018 में किसी भी पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला था। 2013 में 122 सीटें जीतकर कांग्रेस ने सरकार बनाई थी। इस बार कांग्रेस की सीटों और मतों में काफी वृद्धि हुई है। भ्रष्टाचार और आरक्षण के मुद्दों पर कांग्रेस ने भाजपा सरकार को जमकर घेरा, आरक्षण के मुद्दे पर जोर-शोर से सवाल उठाए। साथ ही, घोषणा पत्र में शहरी, अर्द्ध शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के समीकरण बखूबी साधे और लिंगायत, वोक्कालिंगा, मुस्लिम, युवा और महिलाओं को अपने कार्यक्रम के प्रति आकर्षित किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे कर्नाटक से ही हैं। जिन्हें पिछले साल पार्टी का नेतृत्व सौंपना भी कारगर साबित हुआ। उनके अध्यक्ष बनने से भावनात्मक तौर पर कांग्रेस को फायदा मिला। वे दलित समुदाय से आते हैं। राज्य में लोकसभा की 28 सीटे हैं जिनमें से अधिकतर दलित समुदाय के लिए आरक्षित हैं। कांग्रेस की यह जीत विपक्षी राजनीति के लिए भी काफी मायने रखती है। हिमाचल के बाद कर्नाटक जीतना और इन दोनों के बीच राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा को भी एक सकारात्मक कदम माना जा रहा है क्योंकि उनकी इस यात्रा का कर्नाटक से करीब 21 दिन तक जुड़ाव रहा।

विपक्ष की एकता में अबतक जो ऊहापोह थी, उसके खत्म होने और कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकार करने के साफ-साफ आसार दिखने लगे हैं। गैर भाजपा दलों ने इस चुनाव के बाद अपना चुनावी हिसाब-किताब भी परख लिया है और उन्हें यह समझ में आ गया है कि कांग्रेस से अलग कोई रास्ता नहीं बन सकता। इतना तय है कि कांग्रेस के पक्ष में प्रचंड परिणाम आने के बाद विपक्षी एकता के प्रयासों को नये सिरे और बदले संदर्भ में ही आगे बढ़ाया जायेगा।

कर्नाटक में जहां डबल इंजन फेल हो गया वहीं उत्तरप्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने सरकार को ट्रिपल इंजन की ताकत दे दी है। यूपी निकाय चुनाव में भाजपा ने मेयर के सभी 17 पद अपने खाते में लेते हुये ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। जिसे भाजपा के लिए 'दक्षिण में हार के जख्म पर मरहम' कहा जा सकता है। यूं भी कह सकते हैं कि निकाय चुनाव में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाजवादी पार्टी को काफी पीछे छोड़कर भाजपा ने 2024 के लोकसभा चुनाव में यूपी से 80 सीटें निकालने का प्लान तैयार कर लिया है। यहां कांग्रेस को राज्य की चारों दिशाओं से निराशा ही हाथ लगी। जहां तक भाजपा के 80 लोकसभा सीटों पर जीत के प्लान का सवाल है, वह तभी सफल हो सकता है जब पार्टी को मुस्लिमों का भी भरपूर समर्थन मिले हालांकि इस बात को भाजपा ने भी समझते हुए निकाय चुनाव में लगभग 400 मुस्लिम उम्मीदवार मैदान में उतारे, जिनमें से कई पार्षद निर्वाचित हुये तो कई ने नगर पंचायत अध्यक्ष के रूप में सफलता हासिल की। नवम्बर-दिसम्बर में राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना में होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा को खासी मेहनत करनी पड़ेगी। राजस्थान में यदि यह कहा जाता है कि नेतृत्व के स्तर पर कांग्रेस के दो गुटों में टकराव उसे नुकसान पहुंचा सकता है तो भाजपा के लिए भी चुनाव की वैतरणी पार करना आसान नहीं होगा। यहां पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के प्रति एक गुट अस्वीकार्यता के संकेत देता रहा है तो दूसरी तरफ मुख्यमंत्री के रूप में पार्टी में कोई ऐसा चेहरा नहीं दिख रहा है जो सभी को स्वीकार्य हो। अर्जुनराम मेघवाल (बीकानेर) को किरन रिजजू से छीनकर कानून मंत्री का दायित्व सौंपना कितना कारगर होगा, यह समय के गर्भ में है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बहुत पहले ही जिलों का दौरा शुरू कर दिया है। उनके द्वारा घोषित जन कल्याणकारी योजनाएं और महंगाई राहत केम्पों के प्रति आमजन का सकारात्मक रूझान है। मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह की सरकार पर भी अनिश्चतता की तलवार लटकी हुई है। हालांकि उन्होंने सामाजिक सरोकार से सम्बंधित अनेक अच्छी योजनाओं का सूत्रपात किया है, लेकिन ज्योतिरादित्य सिंधिया से आमना-सामना तय है। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को बेदखल करना भी भाजपा के लिए चुनौती साबित होने वाला है। इसलिए इन राज्यों में प्रधानमंत्री मोदी को अपने व्यक्तिगत प्रभाव का लाभ मिल पाए तो दूसरी बात है। के.चन्द्रशेखर राव तेलंगाना की स्थापना (2 जून 2014) से ही वहां मुख्यमंत्री के रूप में काफी लोकप्रिय हैं। उन्हें हरा पाना भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए आसान नहीं होगा। अभी आमचुनाव में काफी समय है और दूसरा यह कि विधानसभा चुनाव में लोकसभा के मुकाबले मुद्दे एवं मतदाताओं की प्राथमिकताएं अलग-अलग होती हैं। पिछले कुछ विधानसभा चुनाव इसके उदाहरण भी हैं कि राज्य में तो भाजपा को सफलता नहीं मिली, लेकिन संसदीय चुनाव में उसी राज्य ने लोकसभा सीटों से उसकी झोली भर दी।

आबादी : सबसे आगे हिन्दुस्तानी

संयुक्त राष्ट्र की 'द स्टेट ऑफ वर्ल्ड पॉपुलेशन रिपोर्ट-2023 (19 अप्रेल)' में भारत आबादी के मामले में चीने से आगे निकल गया है। इस उपलब्धि को अपार संभावनाओं के साथ जोड़कर देखा जा रहा है, लेकिन बढ़ती आबादी की चुनौतियां भी कम नहीं हैं। संसाधनों की खपत की रफ्तार भी बढ़ेगी ही, अतएव विकास की गति को तेज करना होगा। अगले दो दशकों में आबादी नियंत्रण के उपाय भी खोजने होंगे।

अमित शर्मा

भारत दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन गया है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनाइटेड नेशन पॉपुलेशन फंड (यूएनएफपीए) की स्टेट ऑफ वर्ल्ड पॉपुलेशन रिपोर्ट 2023 में ये खुलासा हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 में भारत की जनसंख्या में डेढ़ फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। अनुमान के मुताबिक चीन की 142.5 करोड़ की तुलना में भारत की आबादी बढ़कर 142.8 करोड़ हो गई है। चीन की तुलना में भारत की आबादी करीब 30 लाख अधिक है। रिपोर्ट में फरवरी 2023 तक के आंकड़ों को शामिल किया गया है।

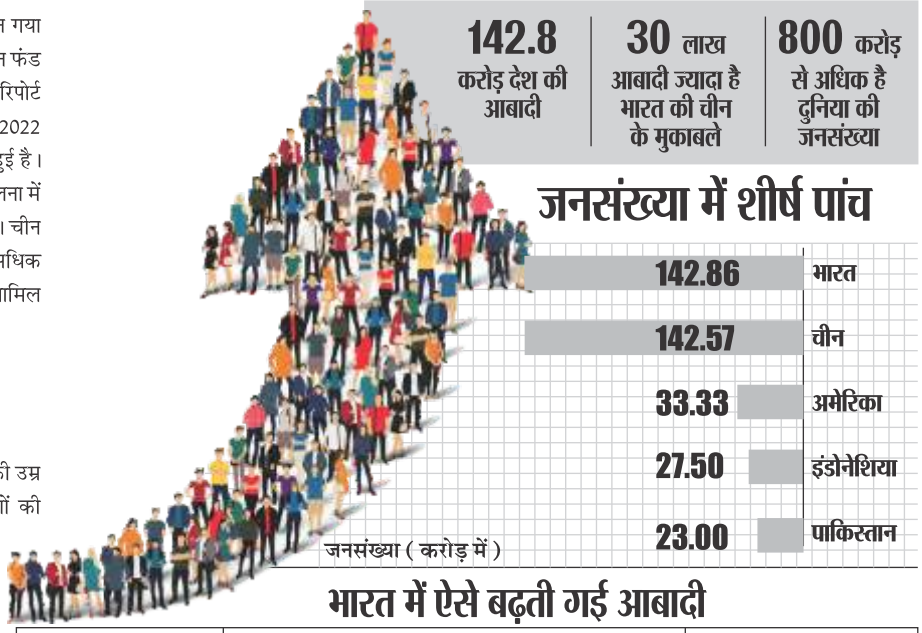

25 फीसदी आबादी की उम्र 14 साल तक

रिपोर्ट के मुताबिक देश की 25 फीसदी आबादी की उम्र 14 साल तक है। वहीं 10 से 19 साल के लोगों की भागीदारी 18 फीसदी, जबकि 10 से 24 वर्ष के लोगों की संख्या 26 फीसदी है। 15 से 64 साल के बीच लोगों की जनसंख्या में भागीदारी कुल 68 फीसदी है। चीन की तुलना में भारत में युवाओं की आबादी ज्यादा है। चीन में करीब 20 करोड़ लोग ऐसे हैं जिनकी उम्र 65 साल से अधिक है। आबादी किसी भी देश की तरक्की का बड़ा आधार होती है, मगर इसके साथ ही संसाधनों पर उसका बोझ बढ़ने से कई मुश्किलें भी खड़ी होती हैं। इसलिए स्वाभाविक है कि आबादी के मामले में भारत के शीर्ष पर पहुंचने को लेकर एक तरफ उत्साह है, तो दूसरी तरफ चिंताएं भी गहरी हुई हैं।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के आंकड़ों के मुताबिक भारत के आबादी के मामले में चीन को पीछे छोड़ने पर चीन ने बिफरते हुए कहा है कि उसके पास अब भी नब्बे करोड़ से अधिक लोगों का गुणवत्ता वाला मानव संसाधन है। चीन की पीड़ा समझी जा सकती है। दरअसल, जनसंख्या के बल पर ही उसने नब्बे के दशक से आर्थिक तरक्की है। हालांकि पंद्रह से चौसठ साल आयुवर्ग की कामकाजी आबादी के मामले में चीन अब भी भारत से आगे है। भारत की अपेक्षा उसके पास इस आयुवर्ग के एक करोड़ लोग अधिक हैं। मगर चौदह साल से कम उम्र की आबादी के मामले में भारत की तुलना में चीन काफी पिछड़ गया है। यानी आने वाली कामकाजी पीढ़ी भारत के पास अधिक होगी। इसी तरह चीन में जीवन की अवधि भारत की अपेक्षा अधिक होने की वजह से उस पर बुजुर्ग आबादी का बोझ अधिक है। चीन ने काफी पहले एक संतान की नीति को लागू कर दिया था, जबकि भारत अभी भी दो संतान की नीति को ही बढ़ा रहा है। लोकतंत्र में आबादी को कड़ाई से नियंत्रित करने में अपनी समस्याएं हैं, स्वत: स्फूर्त नियंत्रण की उम्मीद करना और जागरूकता के लिए पहल करते रहना भारत की मजबूरी है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि भारत में बढ़ती युवा आबादी अर्थव्यवस्था को मजबूत रखने का काम कर रही है और आगे करीब दस साल तक करेगी। अत: तेज विकास का लाभ उठाते हुए भारत को आबादी नियंत्रण के प्रयासों को तेज करना होगा, ताकि साल 2035 से भारत की आबादी में गिरावट शुरू हो जाए। अमृतकाल इस मामले में भारत के लिए परीक्षा का समय है। आजादी की सौवीं वर्षगांठ के समय तक भारत अपनी आाबदी को पूरी तरह से नियंत्रित कर ले, तो इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता। हालांकि भारत के दुनिया की सर्वाधिक आबादी वाला देश बनने को अपार संभावनाओं से जोड़कर देखा जा रहा है, लेकिन संभावनाओं के साथ-साथ बढ़ती आबादी की चुनौतियां ज्यादा हैं। भारत में बढ़ती आबादी के बढ़ते खतरों को इसी से बखूबी समझा जा सकता है कि दुनिया की कुल आबादी का करीब छठां हिस्सा विश्व के महज ढाई फीसदी भूभाग पर ही रहने को अभिशप्त है। जाहिर है कि किसी भी देश कि जनसंख्या तेज गति से बढ़ेगी, तो वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी उसी के अनुरूप बढ़ता जाएगा। आंकड़ों पर नजर डाले तो आज दुनियाभर में करीब एक अरब लोग भूखमरी के शिकार है और अगर वैश्विक आबादी बढ़ती रही तो भूखमरी की समस्या बहुत बड़ी वैश्विक समस्या बन जाएगी, जिससे निपटना इतना आसान नहीं होगा। बढ़ती आबादी के कारण ही दुनियाभर में तेल, प्राकृतिक गैसों, कोयला इत्यादि ऊर्जा के संसाधनों पर दबाव अत्यधिक बढ़ गया है, जो भविष्य के लिए बड़े खतरे का संकेत है। जिस अनुपात में भारत में आबादी बढ़ रही है, उस अनुपात में उसके लिए भोजन, पानी, स्वास्थ्य, चिकित्सा इत्यादि सुविधाओं की व्यवस्था करना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं है।

भारत में ऐसे बढ़ती गई आबादी

वर्ष	आबादी (करोड़ में)	वर्ष	आबादी (करोड़ में)
1901	23.83	1971	54.81
1911	25.20	1981	68.33
1921	25.13	1991	84.63
1931	27.89	2001	102.10
1941	31.86	2011	121.01
1951	36.10	2020	138.3
1961	43.92	(स्रोत: भारत सरकार)	

With Best Compliments

ठा. सा. टिकमसिंह - श्रीमती चंदाकंवर

फोन : 2584082, मो.: 9414167024

ठा. सा. गिरिराजसिंह
श्रीमती राजश्रीकंवर

ठा. सा. गोविन्दसिंह
श्रीमती मंजुकंवर

कु. सा. गगनसिंह
श्रीमती रीनाकंवर

UDAIPUR GOLDEN

TRANSPORT COMPANY

Fleet Owner's & Transport Contractor's

HEAD OFFICE :
13, Behind Central Jail,
Udaipur-313001 (Raj.)

Rao Tikam Singh S/o Late Jaswant Singh
Rao Giriraj Singh S/o Late Jaswant Singh
Rao Govind Singh S/o Late Jaswant Singh
Village : Sagwardiya, Dist. Banswara (Raj.)

उत्तर प्रदेश में ट्रिपल इंजन

एन.के. शर्मा

उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने माफियाओं पर नकेल कस कर अपराधों पर जिस शिद्दत के साथ नियंत्रण पाया है और आम आदमी की सुरक्षा को सुनिश्चित किया है, उसका असर पिछले माह राज्य में सम्पन्न स्थानीय निकाय चुनाव में स्पष्ट देखने को मिला जबकि समाजवादी पार्टी का प्रदर्शन पांच साल पहले के चुनाव के मुकाबले अपेक्षाकृत काफी खराब रहा है। उसकी पार्षद, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष, सदस्य नगर पंचायत अध्यक्ष व सदस्यों की हिस्सेदारी घट गई है। इन चुनावों में अखिलेश यादव की इस पार्टी को 'नेताजी' (दिवंगत मुलायम सिंह यादव) का वास्ता देने के बावजूद जनता ने भाव नहीं दिया। पार्टी को सबसे ज्यादा नुकसान नगर पालिका परिषद अध्यक्षों के चुनाव में हुआ। इस बार कुल अध्यक्षों में से वह 17.59 प्रतिशत अध्यक्ष ही जीता पाई, जब कि पिछले चुनाव में यह आंकड़ा 22.73 प्रतिशत रहा था। हालांकि सपा अपने बागियों की जीत को भी अपना बता रही है, पर करारी हार का दंश अखिलेश यादव और पार्टी का हर कार्यकर्ता बहुत पीड़ा के साथ महसूस कर रहा है। लोकसभा चुनाव में करीब एक साल ही बचा है। ऐसे में बार-बार बड़ी चुनावी हार से मायूस कार्यकर्ताओं को उत्साहित करने की बड़ी चुनौती है। हालांकि 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा ने बेहतर प्रदर्शन कर 111 सीटें जीती थीं। ताजा नतीजों से सपा जनता के बीच कैसे भाजपा को टक्कर दे सकने वाली पार्टी के रूप में पहचान बना पाएगी यह कहना मुश्किल है। मगर यह भी सच है कि विधानसभा चुनाव व निकाय चुनाव में सपा ही नंबर दो पर है। निकाय चुनाव ही नहीं स्वार विधानसभा उपचुनाव में भी सपा ने अपनी सीट गंवा दी है। इससे पहले सपा रामपुर व आजमगढ़ लोकसभा उपचुनाव भी हार चुकी है।

मैनपुरी में करारा झटका

मैनपुरी नगर पालिका परिषद अध्यक्ष पद के कड़े मुकाबले में भाजपा ने सपा को शिकस्त दे दी। यह सपा के लिए किसी बड़े झटके से कम नहीं है। पिछले साल ही मुलायम सिंह यादव के न रहने पर मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव में डिंपल यादव ने भाजपा को हराया था। लेकिन अपने इस गढ़ में सपा को करारा झटका लगा

है।

गठबंधन पर उठ रहे सवाल

सपा का निकाय चुनाव में रालोद से गठजोड़ था। पर उसे निकाय चुनाव में इसका फायदा मिलता नहीं दिखा। शिवपाल यादव के साथ आने से भी निकाय से सपा की स्थिति में सुधार होता नहीं दिख रहा। अखिलेश यादव के लिए अब संगठन व गठबंधन को लेकर नई रणनीति बनाकर आगे बढ़ने की चुनौती है। भाजपा ने सभी 17 मेयर पदों पर ही जीत के साथ पहली बार उत्तर प्रदेश में ट्रिपल इंजन की सरकार भी बना डाली है। ऐसा इसलिए क्योंकि केंद्र में भाजपा, राज्य में भाजपा और अब नगर निगम में भी पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा। ऐसे में डबल इंजन अब ट्रिपल इंजन में परिवर्तित हो चुका है। बड़ी बात ये भी है कि जिन मुद्दों पर भाजपा का कर्नाटक में डबल इंजन फेल हुआ, उन्हीं मुद्दों ने यूपी में भाजपा के कमल को अच्छे से खिलाया है। असल में यूपी के निकाय चुनाव में राष्ट्रवाद हावी रहा, माफियाओं पर लिए गए एक्शन चर्चा का विषय बने और धार्मिक मुद्दों से भी माहौल बना। यानी कि बजरंग बली कर्नाटक में भाजपा को नहीं जिता पाए, लेकिन वाराणसी में काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर निर्माण और मथुरा में भी ऐसी परियोजना के सपनों ने खूब वोट दिलवा दिए। एक और ट्रेंड जो समझ में आता है, वो शहरी वोटर का मिजाज है। लोकसभा चुनाव में कई शहरी सीटें रहने वाली हैं, ऐसे में निकाय चुनाव के नतीजों ने भाजपा के पक्ष में माहौल बना दिया है। सवर्णों पर जिस तरह से भाजपा ने इस चुनाव में भरोसा जताया था, उसका लाभ भी नतीजों में स्पष्ट रूप से दिख रहा है। ऐसे में भाजपा के लिए हर डिपार्टमेंट से गुड न्यूज़ है, चिंता अखिलेश यादव के लिए बढ़ी है। क्योंकि विधानसभा के बाद उन्हें एक और करारी हार का सामना करना पड़ा है। ऐसे में अब लोकसभा चुनाव के लिए वे कैसे समीकरण साधते हैं, इस पर सभी की नजर रहेगी। निकाय चुनावों में सपा को ठिकाने लगाने में बसपा की बड़ी भूमिका रही है, हालांकि उसके हाथ भी ज्यादा कुछ नहीं आया। भाजपा ने जहां सपा प्रत्याशियों में सेंधमारी की तो वहीं बसपा ने मुस्लिम दांव के जरिए सपा का खेल पूरी तरह बिगाड़ दिया। पिछली बार पालिका चुनाव में उभरी सपा इस बार वहां भी कुछ हद तक सिमट गई। भाजपा को सभी 17 नगर निगमों में मेयर के पद मिले। नगरपालिका की बात करें तो 199 सीटों में से भाजपा 98,सपा 59, बसपा 19, कांग्रेस 7 और निर्दलियों को 17 सीटे मिलीं। नगर पंचायत की 544 सीटों में 202 पर भाजपा, 171 पर सपा, 51 पर बसपा, 44 पर कांग्रेस और 74 सीटों पर निर्दलियों ने कब्जा जमाया है।

सभी निगमों में भाजपा

1. सहारनपुर	डॉ. अजय कुमार
2. गाजियाबाद	सुनीता दयाल
3. मुरादाबाद	विनोद अग्रवाल
4. बरेली	उमेश गौतम
5. शाहजहांपुर	अर्चना वर्मा
6. अलीगढ़	प्रशांत सिंघल
7. मथुरा	विनोद अग्रवाल
8. आगरा	हेमंत कुशवाहा
9. फिरोजाबाद	कामिनी राठौड़
10. कानपुर	प्रमिला पांडेय
11.झांसी	बिहारीलाल आर्य
12. प्रयागराज	गणेश केसरवानी
13. लखनऊ	सुषमा खरकवाल
14. अयोध्या	महंत गिरीशपति त्रिपाठी
15. वाराणसी	अशोक तिवारी
16. गोरखपुर	डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव
17 मेरठ	हरिकांत अहलूवालिया

मनोज दक
डायरेक्टर

Mo. 9414169689

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

DAK PAKESRS & MOVERS ALL OVER INDIA

बांसवाड़ा गोल्डन ट्रांसपोर्ट कं.

नेहरू बाजार, उदयपुर (राज.)

डेली सर्विस : उदयपुर से बांसवाड़ा, सागवाड़ा, परतापुर, सलुम्बर आसपुर, साबला, तलावड़ा, घाटोल, कलिंजरा, बागीदौरा, कुशलगढ़, सज्जनगढ़, पालोदा, आसपुर, बड़गी, चीतरी, गलियाकोट

हरिद्वार से बढ़ता गंगाजल हो रहा ज़हरीला

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ताजा रिपोर्ट चौंकाने वाली है। भारत की भाग्य रेखा पतित पावनी गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करने का अभियान बरसों से चल रहा है और अनाप-शनाप धन भी खर्च हो चुका है, किन्तु संवेदनहीन सरकारें और अफसर इस दिशा में अब भी तंद्रा में हैं। करीब 94 जगहों से लिए गए पानी के नमूनों से पता चलता है कि नुकसान देह जीवाणुओं की संख्या गंगा की धारा के साथ आगे बढ़ रही है।

विपिन नागवंशी

हरिद्वार से लेकर गंगा सागर तक का गंगाजल कहीं भी सीधे हलक में उतारने लायक नहीं रह गया है। आलम यह है कि कुछ जगहों को छोड़ दें तो गंगाजल नहाने के लायक भी नहीं रहा। अच्छी बात यह है कि गंगाजल में ऑक्सीजन की मात्रा कहीं भी मानक से कम नहीं है। विशेषज्ञ कहते हैं कि गंगा में गंदगी न गिराएं तो इसे निर्मल रखना असंभव नहीं। खतरनाक जीवाणुओं और जैव रासायनिक तत्वों की बहुलता ने गंगाजल को गंदला किया है। इसे तमाम एहतियातों के बाद दूर किया जा सकता है। गंगा की धारा ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती है प्रदूषक तत्व बढ़ते जा रहे हैं। ऑक्सीजन का स्तर घटता जाता है। हावड़ा पहुंचते-पहुंचते गंगा में जैव रसायन की मात्रा अत्यधिक हो जाती है। यानी समुद्र में विलीन होते समय गंगा जल अत्यंत प्रदूषित होता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा मार्च, 2023 में ऋषिकेश से लेकर हावड़ा तक यानी उत्तराखंड, यूपी, बिहार, झारखंड व पश्चिम बंगाल में 94 जगहों पर गंगा जल का सैंपल लिया गया था। रिपोर्ट के अनुसार, ऋषिकेश, मनिहारी, कटिहार व राजमहल के पास गंगा जल क्लास ए के मानक के अनुरूप है। यानी यहां के गंगा जल को संक्रमणमुक्त करने के बाद ही पीया जा सकता है। इसके अलावा बाकी स्थानों पर लिया गया गंगाजल इतना प्रदूषित है कि इसको विशेष एवं अत्याधुनिक मशीन से ट्रीटमेंट के बाद ही पीने की सलाह दी गयी है।

जल को तीन श्रेणियों में रखा गया

श्रेणी–1 (पीने लायक, कीटाणुशोधन के बाद)

देश में मात्र चार जगह ही गंगा का जल ऐसा है जिसे कीटाणुशोधन प्रक्रिया के बाद पिया जा सकता है। इन चार जगहों पर ग्रीन कैटेगरी में रखा गया है।

ये जगह हैं: ऋषिकेश, मनिहारी, साहेबगंज और राजमहल। यानी यूपी में कही भी ग्रीन कैटेगरी नहीं है। बिहार में सिर्फ मनिहारी (मटिहरार) और झारखंड में साहेबगंज और राजमहल। बाकी सब जगह रेड कैटेगरी में शामिल हैं।

मानक: गंगा का जल पीने लायक तब होता है जब घुलनशील ऑक्सीजन 6 मिलीग्राम प्रति लीटर से ज्यादा हो। जैव रासायनिक ऑक्सीजन 2 मिलीग्राम प्रति लीटर से कम हो और कोलीफॉर्म सौ मिली. में अधिकतम 50 हो।

श्रेणी–2 (पीने लायक, उच्च कीटाणुशोधन के बाद)

25 स्थानों पर गंगा जल को उच्च स्तर पर कीटाणुशोधन के बाद पीया जा सकता है।

ये स्थान हैं: गंगोत्री, हरकी पौड़ी, ऋषिकेश, रूड़की, गढ़मुक्तेश्वर, बख्तावरपुर, अनूप शहर, कर्णवास, बुलंदशहर, कछला घाट अलीगढ़, कानपुर, रायबरेली, कौशाम्बी, फफामऊ, प्रयागराज, सिरसा, मिर्जापुर, वाराणसी, कोइलवर, बख्तियारपुर, बाढ़, सिमरिया, मनिहारी, जनता घाट साहेबगंज में दो स्थान, सांगी दालान राजमहल, फरक्का, घोषापारा और हुगली।

मानक: गंगा का जल उच्च स्तर पर संक्रमणमुक्त करने के बाद पीने लायक तब होता है जब घुलनशील ऑक्सीजन 4 मिलीग्राम प्रति लीटर से ज्यादा हो। जैव रासायनिक ऑक्सीजन 3 मिलीग्राम प्रति लीटर से कम हो और जीवाणु सौ मिली अधिकतम 5000 हो।

श्रेणी–3 (नहाने लायक)

कुल 28 स्थानों का जल नहाने लायक माना गया है। कानपुर में सिर्फ पक्का घाट का जल नहाने लायक है।

ये स्थान हैं: प्रयागराज, मिर्जापुर, वाराणसी का जल नहाने लायक है। बिहार में कोइलवर, बाढ़, सिमरिया और मनिहारी का जल ही नहाने लायक बताया गया है। झारखंड में साहेबगंज व राजमहल का जल नहाने लायक है।

मानक: गंगा का जल नहाने लायक तब होता है जब घुलनशील ऑक्सीजन 5 मिलीग्राम प्रति लीटर से ज्यादा हो। जैव रासायनिक ऑक्सीजन 3 मिलीग्राम प्रति लीटर से कम हो और कोलीफॉर्म जीवाणु सौ मिलीग्राम में अधिकतम 2500 हो।

जल आचमन के लायक नहीं

***गंगा** नदी के जल का अध्ययन करने वाली टीम से जुड़े प्रो. सुनील चौधरी बताते हैं कि अधिकांश जगह गंगा नदी का जल आचमन के लायक भी नहीं रह गया है। ऑक्सीजन की मात्रा ठीक रहना संतोषजनक है। जीवाणुओं का ज्यादा होना घातक है।*

कहां-क्या है जल की गुणवत्ता

प्रदूषण	हरिद्वार	वाराणसी	पटना	मुंगेर	भागलपुर (सुल्तानगंज)	भागलपुर (बरारी घाट)	भागलपुर (चंपानगर)	साहेबगंज	हावड़ा
घुलित ऑक्सीजन	8.9	7.6	8.2	7.5	7.3	6.7	7.6	7.2	5.1
टोटल कोलीफॉर्म	94	700	1.60लाख	35हजार	35 हजार	35 हजार	1.60 लाख	–	70 हजार
बॉयोकेमिकल	2.0	2.7	1.8	1.1	1.1	2.3	1.8	1.1	2.7

Welcome in the world of comfort

SUNIL GARMENTS

SUNIL TEXTILES

Dangi Saree's

With an exclusive range of

- Suiting
- Shirting
- Suitlengths
- Shawls
- Blankets
- Bedsheets

Exclusive Readymade Brands

- Kurtis

Party Wear

- Sarees & Lehangas

61, NORTH SUNDERWAS, UDAIPUR : 9414169044

स्कूल कहें या दुकानें?

निजी स्कूलों की मनमानी से हर शहर-कस्बे में अभिभावक परेशान हैं। प्रतिवर्ष नियम विरुद्ध फीस वृद्धि के भार से उनकी कमर टूट रही है। दूसरी तरफ शिक्षा विभाग उनकी ही परौकारी कर रहा है। इस संबंध में प्रस्तुत है वरिष्ठ पत्रकार *डॉ. संदीप पुरोहित* के विचार के साथ वस्तुस्थिति।

क्या किसी मनमानी की शिकायत सरकार को मिले तब ही कार्रवाई होगी। प्रदेश के निजी स्कूलों की फीस बढ़ोतरी को लेकर विधानसभा में पूछे गए सवाल के जवाब से तो यही लगता है। सरकार का दावा है कि निजी स्कूल फीस एक्ट की पालना कर रहे हैं। निजी शिक्षण संस्थाओं में फीस ही नहीं, किताबें, यूनिफॉर्म और यहां तक कि स्टेशनरी तक के लिए जिस तरह से लूट होती है, वह किसी से छिपी नहीं है। अलग-अलग मद के नाम पर वसूली जा रही राशि अलग है। हकीकत तो यह है कि फीस एक्ट बनाकर सरकार ही इसे लागू करना भूल गई। अदालतों ने भी कई बार निर्देश दिए, पर लूट का यह खेल शायद ही बंद हुआ है। कल्याणकारी सरकारों का काम आमजन को राहत पहुंचाने का होता है। राजस्थान में सरकार जनकल्याण योजनाओं लागू करने के कितने ही दावें करें, लेकिन निजी स्कूलों की फीस के मामले में तो अभिभावकों को कोई राहत नहीं मिल सकी है। महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने को अच्छी पहल जरूर कहा जा सकता है, लेकिन इसका परिणाम आने में अभी वक्त लगेगा, मौजूदा शिक्षा सत्र में ही कई नामी स्कूलों ने तो बीस प्रतिशत तक फीस बढ़ा दी है। सरकार की मानें तो सब कुछ सामान्य इसलिए है क्योंकि स्कूलों में फीस एक्ट की पालना करने के खिलाफ कोई शिकायत दर्ज नहीं है। अगर हम एक्ट की ही बात करें तो सवाल यह है कि फिर स्कूल, जिलों, संभाग और राज्य स्तर की कमेटियों का गठन क्यों नहीं हुआ। ये अस्तित्व में होती, तो अभिभवक आगे आते। अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य को लेकर सशंकित रहते हैं। लेकिन छुटपुट ही सही पर शायद सरकार को अभिभावकों के धरने-प्रदर्शन नजर ही नहीं आए। हकीकत तो यह है कि फीस के बोझ से दबे अभिभावक लोन लेकर या क्रेडिट कार्ड से फीस भर रहे हैं, पर स्कूल संचालकों का इससे कोई वास्ता नहीं है। अधिकतर निजी स्कूल मुनाफे के लिए ही संचालित किए जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि शिक्षा विभाग तमाशबीन बना हुआ है। आशंका यह भी है कि सरकार भी शिक्षा माफियाओं के दबाव में है। सभी स्कूलों में कमेटियों का गठन कर फीस वसूली के नाम पर हो रही लूट पर रोक लगानी ही होगी। इसके लिए राज्य सरकार को दृढ इच्छा शक्ति का परिचय देना चाहिए।

प्रदेश में निजी स्कूल

18,754 उच्च प्राथमिक स्कूल हैं	**4,573** प्राथमिक स्कूल हैं राज्य में	**7,763** सैंकडरी स्कूल हैं प्रदेश में	**7,508** सीनियर सैकंडरी स्कूल हैं

निर्देश जारी किए हैं

अधिकतर जुबानी शिकायतें आती हैं। समाधान भी कराया है। कमेटियां बनी हुई हैं। कहीं भी कमी है तो उसे सुधारने के लिए विभाग को निर्देश जारी किए जाएंगे।

बी.डी. कल्ला, शिक्षामंत्री

दबाव में सरकार

सरकार शिक्षा माफिया के दबाव में है। अभिभावकों ने सड़कों पर प्रदर्शन किए हैं। विधानसभा में मेरे सवाल का झूठा जवाब देकर सरकार जनता को गुमराह कर रही है।

कालीचरण सराफ, विधायक भाजपा

एक्ट की पालना नहीं

मैं एक्ट के तहत राज्य स्तर पर बनाई कमेटी का सदस्य हूं। कई साल से कमेटी की बैठक नहीं हुई।

दिनेश कावंट, अध्यक्ष
पैरेंट्स वेलफेयर सोसायटी

इसी सत्र 20 फीसदी तक बढ़ी फीस

प्रदेश में इसी सत्र से निजी स्कूलों में फीस में 20 फीसदी तक बढ़ोतरी हुई है। जयपुर में कुछ स्कूलों ने तो फीस में 25 हजार रुपए तक की बढ़ोतरी कर दी है। अभिभावकों ने फीस एक्ट की पालना नहीं करने और मनमानी फीस बढ़ोतरी के खिलाफ स्कूलों के बाहर धरने, प्रदर्शन किए। शिक्षा विभाग में शिकायतें दर्ज कराई गई।

हार्दिक श्रद्धांजलि

जन्म 23.10.1930 देवलोकगमन 14.06.2003

परम श्रद्धेय आदरणीया

श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा

॥ श्रद्धानवत ॥

पंकज-रेणु, नीरज-डॉ. अनिता (पुत्र-पुत्रवधु), अभिजय, मेधांश (पौत्र), आर्षेयी, प्रिशा (पौत्री)
शोभा-सुरेन्द्र, सुधा-ओम, डॉ.वीणा-स्व. गौरव, अरुणा-पद्म, रश्मि-अनिल (पुत्री-दामाद)
दोहित्र-दोहित्री :- प्रत्यूष, मोहित, स्व. चिन्मय, तन्मय, भार्गवि,
नयन नारायण, पूर्वा, हार्दिक, चिर्कीषु, जिगिषा

रक्षाबन्धन, धानमण्डी,उदयपुर

घातक है महासागरों के तल में खनन

नई ऊर्जा जरूरतों के लिए धातुओं की मांग बढ़ रही है। जिसके लिए गहरे समुद्र तल में उपलब्ध धातुओं को निकालने के लिए महासागरों में खनन की बाते हो रही हैं। हांलाकि बड़े पैमाने पर पर्यावरण पर पड़ने वाले असर से आशंकित पर्यावरण कार्यकर्ता और बड़े निगम इसके पक्ष में नहीं है।

फिलहाल महासागर में खनन को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोई सर्वसम्मत संहिता नहीं है। पिछले 31 मार्च को 'इंटरनेशनल सी-बेड अथारिटी' (अंतरराष्ट्रीय समुद्रतल प्राधिकरण) ने फैसला किया है कि कंपनियां समुद्र तल की खुदाई के लिए जुलाई से आवेदन कर सकती हैं। लेकिन बड़े पैमाने पर पर्यावरण पर पड़ने वाले असर से आशंकित पर्यावरण कार्यकर्ता और बड़े निगम इसके पक्ष में नहीं हैं। समुद्री जीव विज्ञानी और कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में 'बेनिओफ ओशन इनिशिएटिव' में सलाहकार दिवा अमोन के मुताबिक, 'डीप सी यानी समुद्र तल जैवविविधता का खजाना है, दवाओं में इस्तेमाल होने वाले जीवित संसाधनों से भरपूर है और मछलियों को प्रजनन और भरण-पोषण मुहैया कराता है। उसके बिना धरती जैसी है वैसी नहीं रहेगी।'

नई ऊर्जा जरूरतों के लिए धातुओं की मांग बढ़ रही है। बैटरियों के लिए तांबा या निकल हो, इलेक्ट्रिक कारों के लिए कोबाल्ट हो या इस्पात उत्पादन के लिए मैंगनीज- दुर्लभ खनिज और धातुएं, अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों की बुनियाद हैं। यही धातुएं, एनर्जी ट्रांजिशन यानी ऊर्जा संक्रमण का रास्ता बना रही हैं। मांग में तेजी के बीच, ये संसाधन दुनिया भर में और कम होते जा रहे हैं। अनुमानों के मुताबिक, महज तीन साल में दुनिया की दोगुनी मात्रा में लीथियम और 70 फीसद ज्यादा कोबाल्ट की जरूरत पड़ने वाली है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के मुताबिक, अगर अक्षय ऊर्जा के बड़े पैमाने पर विस्तार के जरिए जलवायु लक्ष्य, सही ढंग से अपनाए जाते तो 2030 तक करीब पांच गुना ज्यादा लीथियम और चार गुना ज्यादा कोबाल्ट की जरूरत पड़ती।

इन कच्ची सामग्रियों का अनुमानित उत्पादन आकार, मांग से काफी कम है। इस अंतर को भरने के लिए कुछ देश और कंपनियां समुद्र तल के संसाधनों की खुदाई करना चाहती हैं। ऐसे में बहुधातु कहे जाने वाले मैंगनीज नोड्यूल्स यानी मैंगनीज ग्रंथियों की वजह से ही समुद्र तल में खनन की होड़ मची है। आलू के आकार की इन ग्रंथियों में बड़ी मात्रा में निकल, तांबा, मैंगनीज, दुर्लभ धातुएं और दूसरी मूल्यवान धातुएं मिलती हैं। अमेरिका के हवाई के करीब पूर्वी प्रशांत महासागर क्लेरियोन क्लिप्परटोन जोन में 3500 और 5500 मीटर (11,500 से 18,000 फुट के बीच) स्थित समुद्र तल का सबसे सटीक अध्ययन हुआ है। हजारों किलोमीटर में फैले इस इलाके में जमीन पर ज्ञात किसी इलाके से ज्यादा निकल, मैंगनीज और कोबाल्ट मौजूद है। हिंद महासागर के मध्य में स्थित बेसिन और कुक आईलैंड्स का समुद्र तल, किरिबाती प्रवालद्वीप और दक्षिण प्रशांत में फ्रेंच पालीनेशिया भी संभावित खुदाई के ठिकाने हैं। जानकारों के मुताबिक, ग्रंथियों की बनावट इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं की जरूरतों पर उल्लेखनीय रूप से खरी उतरती है। सदी के मध्य तक करीब एक अरब कारों और ट्रकों के इलेक्ट्रिक बेड़े के लिए कार निर्माताओं को बैटरी कैथोड़ और इलेक्ट्रिक कनेक्टरों के निर्माण में बड़े पैमाने पर इन दुर्लभ धातुओं की जरूरत है। हालांकि मैंगनीज ग्रंथियों की अभी दुनिया भर में कहीं भी खुदाई नहीं की जा रही है, लेकिन ये स्थिति जल्द ही बदल सकती है क्योंकि वे ठीक समुद्र तल पर ही मौजूद होती हैं और उन्हें चट्टानी परतों को तोड़े बिना या समुद्रतल को नुकसान पहुंचाए बिना आसानी से निकाला जा सकता है।

प्रस्तुतिः मोहम्मद अबरार

ABHINAV

30

SENIOR SECONDARY SCHOOL

Spreading Education Since 1989

ADMISSIONS OPEN 2023-24

HIGH STANDARDIZED
HINDI/ENGLISH MEDIUM
CO-ED. SCHOOL

PLAY GROUP TO XII

Science

Physics | Chemistry | Biology | Maths | Geology
Computer Sci. (Opt.)

Commerce

Accountancy | Business Management | Finance & Economics
Computer Science (Opt.) | Maths

Arts

English / Hindi Lit | Sanskrit Lit. | History | Drawing
Sociology | Music | Pol. Science | Home Science
Geography | Psychology | Computer Science (Opt.)

Campus : 9, Adarsh Nagar, Behind Police Line, Udaipur (Raj.)
0294-2584598, 9413762552

पृथ्वी का संरक्षण और श्रृंगार करें

प्राण वायु या ऑक्सीजन का हमारे जीवन में महत्व क्या है, यह कोविडकाल ने बता दिया है। उसके बावजूद हम इस ओर ध्यान क्यों नहीं दे पा रहे? सोचते रहने और ध्यान देने का समय जा चुका है, अब वक्त है एक्शन मोड पर पूर्ण सक्रियता से आगे बढ़ने का। विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) पर प्रस्तुत है- *रामदयाल सैन* का विशेष आलेख। -

तपती दोपहर में किसी भी राहगीर को विश्रांति के लिए किसी सघन हरे वृक्ष की तलाश रहती है, चाहे वह पैदल, दोपहिया या चौपहिया वाहन पर सवार ही क्यों ना हो। हमें अपने और अपने वाहन को चिलचिलाती धूप और भयंकर गर्मी से राहत पाने के लिए एकमात्र सड़क किनारे लगे वृक्षों का ही सहारा होता है, इसलिए उनकी तलाश में जुट जाते हैं। उस समय वृक्ष और उसकी छाया नहीं मिलने पर लोगों को कोसते हैं कि वृक्षों की अंधाधुंध कटाई और पैसा कमाने के चक्कर में लोग हरे वृक्षों की बलि चढ़ा देते हैं और मन में स्वयं पेड़ लगाने का संकल्प ले लेते हैं। जैसे ही वहां से निवृत हो जीवन के अन्य कार्यों में व्यस्त होते हैं तो वह मन के संकल्प को बिसरा देते हैं और उसके बाद इस पीड़ा की जब तक याद नहीं आती जब तक दोबारा पेड़ की जरूरत महसूस नहीं हो पाती। परिवार, मित्रों के साथ छुट्टियां बिताने या घूमने जाने के लिए क्यों हम सभी हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित प्राकृतिक वातावरण में जाना पसंद करते हैं? क्यों उस समय शहर की भागमभाग की जिंदगी से दूर प्रकृति के बीच जाना पसंद करते हैं। ? सुबह जल्दी उठकर सड़कों की जगह पार्कों में क्यों घूमना पसंद करते हैं, क्यों मन बार- बार प्रकृति के बीच जाने के लिए लालायित रहता है, क्यों बालक, किशोर, युवा, प्रौढ़ प्रकृति की गोद में जाना पसंद करते हैं? इतनी प्रगाढ़ इच्छाओं और खुशी पाने के लिए प्रयास तो करते हैं लेकिन

हम प्रकृति संरक्षण और वृक्षारोपण की चिंता नहीं करते। चिंता है तो गगन चुंबी इमारतों की। अगर ऐसा ही रहा तो वो दिन दूर नहीं कि हमें ऊंची-ऊंची इमारतें तो खूब दिखेंगी, लेकिन हरे-भरे पेड़ और खिलखिलाती प्रकृति नजर आएगी। जब हम आकड़ों को देखते हैं तो हमारी आंखें फटी रह जाती हैं। दिनोंदिन हम धरोहर तथा अपनी पहचान खो रहे हैं। यूएन की एक रिपोर्ट में जहां प्रति व्यक्ति वृक्षों की संख्या में कनाडा 8953 प्रति व्यक्ति वृक्षों के साथ श्रेष्ठ स्थान पर है, वहीं विश्व में 400 से अधिक वृक्ष प्रति व्यक्ति का औसत है। भारत में वर्तमान में केवल 28 वृक्ष प्रति व्यक्ति का आंकड़ा है, ये हमें सोचने को मजबूर कर रहा है कि गिरावट इस प्रकार जारी रही तो वाकई वृक्ष तलाशने पर भी नहीं मिलेंगे।

पेड़ लगाने मात्र से ही हमारी जिम्मेदारी पूर्ण नहीं होगी बल्कि उन्हें एक बालक की तरह पाल-पोस कर बड़ा करना होगा ताकि आने वाले समय में वे हमारी रक्षा कर सकें। भारतीय संस्कृति में रक्षा के लिए बहन-भाई को जिस प्रकार अपनी रक्षा के लिए रक्षा सूत्र बांधती है, उसी भांति मानव द्वारा प्रकृति पूजा के साथ वृक्षों को भी रक्षा सूत्र बांधा जाता रहा है, ताकि विपरीत परिस्थितियों में वह हमारी रक्षा कर सकें।

भारतीय संस्कृति और परम्पराओं में हमने सदैव पृथ्वी को मां का दर्जा देकर पूजा-अर्चना की है, इसका एक ही कारण था हमारी प्रकृति-पृथ्वी बालक के समान हमारा पोषण करती है, तो हमारा भी कर्तव्य बनता है कि एक पुत्र-पुत्री की भांति सदैव धरती माता का सम्मान और संरक्षण करें। लेकिन व्यक्तिगत स्वार्थों ने मनुष्य को इतना नीचे गिरा दिया कि पृथ्वी माता के संरक्षण को छोड़ उसी के दोहन में लग और यही कारण है कि अति दोहन की वजह से पर्यावरण के खिलाफ जाने से हमें अनेक प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें पृथ्वी के साथ सद्भाव में रहना होगा। हमें केवल एक पृथ्वी को सर्वमान्य मानते हुए ध्यान केंद्रित करना होगा, उसके संरक्षण के लिए। तो आइए इस पर्यावरण दिवस पर अपनी धरती माता के संरक्षण के लिए कटिबद्ध हो जाएं, 140 करोड़ से अधिक संतानें मिलकर पृथ्वी माता का संरक्षण और श्रृंगार करें।

घृणा को खत्म करें, नही तो वह हमें खत्म कर देगी

हम अपने भीतर की घृणा को खत्म करने का कोई प्रयास नहीं करते। सच तो यह है कि हम घृणा को बढ़ाने के मौके ढूंढते रहते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि हम अपने हृदय में घृणा पालकर बेहतर समाज बनाने का सपना भी देखने लगते हैं।

रोहित कौशिक

जैसा दिल होता है, वैसी ही दुनिया दिखाई देती है। अगर हमारा हृदय निर्मल है तो दुनिया भी साफ-सुथरी दिखाई देगी। यदि हृदय में थोड़ी सी भी घृणा है तो दुनिया बेकार और गंदी दिखाई देने लगेगी। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि हम अपने हृदय में घृणा पालकर बेहतर समाज बनाने का सपना भी देखने लगते हैं। अजीब बात है कि हमारे दिल में घृणा है और हम अन्य लोगों से यह अपेक्षा करते हैं कि उनका दिल साफ-सुथरा हो । जिस तरह हमारे हृदय में घृणा का कुछ अंश मौजूद रहता है, उसी तरह दूसरे लोगों के हृदय में भी घृणा का कुछ अंश मौजूद रहता है। ऊपरी तौर पर सब साफ-सुथरे दिखाई देते हैं लेकिन अंदर घृणा का तत्व बढ़ता रहता है।

घृणा को खत्म करने का हम कोई प्रयास नहीं करते। सच तो यह है कि घृणा को बढ़ाने के मौके ढूंढ़ते रहते हैं। जब भी कोई ऐसा मौका मिलता है, बेहिचक घृणा बढ़ाकर तृप्त होते हैं। तात्कालिक रूप से तो तृप्त हो जाते हैं लेकिन घृणा के लिए एक नया रास्ता तैयार कर देते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि हम पूजा-पाठ करते हैं और ईश्वर का आशीर्वाद पाने की पूरी कोशिश करते हैं। ईश्वर या अन्य के माध्यम से इन सभी प्रक्रियाओं में हमारा सारा ध्यान स्वयं पर ही केन्द्रित रहता है। यानी हमारी कोशिश और अपेक्षा रहती है कि ईश्वर अपना सारा आशीर्वाद सिर्फ हमें या हमारे परिवार को प्रदान कर दे। कुछ अपवादों को छोड़कर प्राय: हम यह प्रार्थना कभी नहीं करते कि वैसा ही आशीर्वाद दूसरे

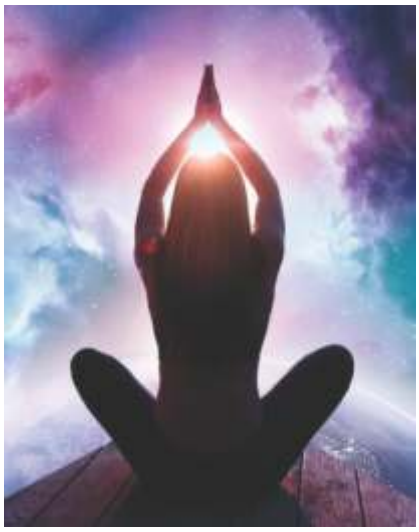

लोगों या दूसरे परिवारों को भी मिल जाए। प्राय: हमारी प्रार्थना में समस्त जगत के कल्याण का भाव निहित नहीं रहता, सिर्फ अपने कल्याण का भाव रहता है। इससे सिद्ध होता है कि हमारी प्रार्थना और पूजा में स्वार्थ छिपा हुआ है। अगर हमारी पूजा में भी सिर्फ अपना स्वार्थ छिपा हुआ है तो इसका अर्थ यह है कि पूजा के समय हमारा हृदय निर्मल नहीं रह पाता है। पूजा के दौरान भी हमारे हृदय में घृणा का कुछ अंश मौजूद रहता है। पूजा और प्रार्थना ऐसी होनी चाहिए जिसमें समाज और समस्त जगत के कल्याण का भाव निहित हो। अगर हमारे दिल में सिर्फ अपने कल्याण का भाव है तो इसका अर्थ यह है कि हम अपने दिल से घृणा का भाव समाप्त नहीं कर पाए हैं। सच्चे मन से तभी पूजा की जा सकती है जब हृदय पवित्र हो। यानी हृदय में लेशमात्र भी घृणा न हो। जब हम पूजा के दौरान भी पवित्र नहीं रह पाते तो साधारण समय में पवित्र कैसे रह सकते हैं? दरअसल पूजा या प्रार्थना का सच्चा अर्थ और उद्देश्य स्वयं को निर्मल भाव से समर्पित कर देना भी है। लेकिन क्या हम ऐसा कर पाते हैं? दिल में किसी भी तरह की घृणा लिए निर्मल भाव से समर्पण नहीं हो सकता। अपने दिल से हर तरह की घृणा बाहर निकाल कर ही सच्चे अर्थों में निर्मल हो सकते हैं। यह निर्मलता हमारे अंतर को तो प्रकाशित करती ही है, हमारे बाहरी व्यक्तित्व को भी प्रकाशित करती है। इसके विपरीत घृणा अंतर को जलाती रहती है। हम एक ऐसी आग में जलते रहते हैं जिससे अंतत: हमें ही झुलसना होता है। जिसका असर हमारे बाहरी व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। जिसके दिल में घृणा हो उसका चेहरा अलग ही दिखाई देता है क्योंकि घृणा के भाव चेहरे पर भी आ जाते हैं। प्राय: किसी भी इंसान के हाव- भाव देखकर घृणा का अंदाजा लगाया जा सकता है। ज्यों-ज्यों हमारी घृणा बढ़ती है, त्यों-त्यों हम अपना सुख-चैन स्वयं ही छीन लेते हैं। इस तरह चतुर बनने के चक्कर में हम मूर्ख बन जाते हैं लेकिन अपनी मूर्खता स्वीकार नहीं करते। जब हम घृणा करते हैं तो अपनी सारी शक्ति घृणा बढ़ाने में लगा देते हैं, जबकि हमें अपनी शक्ति घृणा दूर करने में लगानी चाहिए। अपने दिल से घृणा हटाकर ही हम सुखमय जीवन जी सकते हैं।

भागो मत, अपने को बदलो

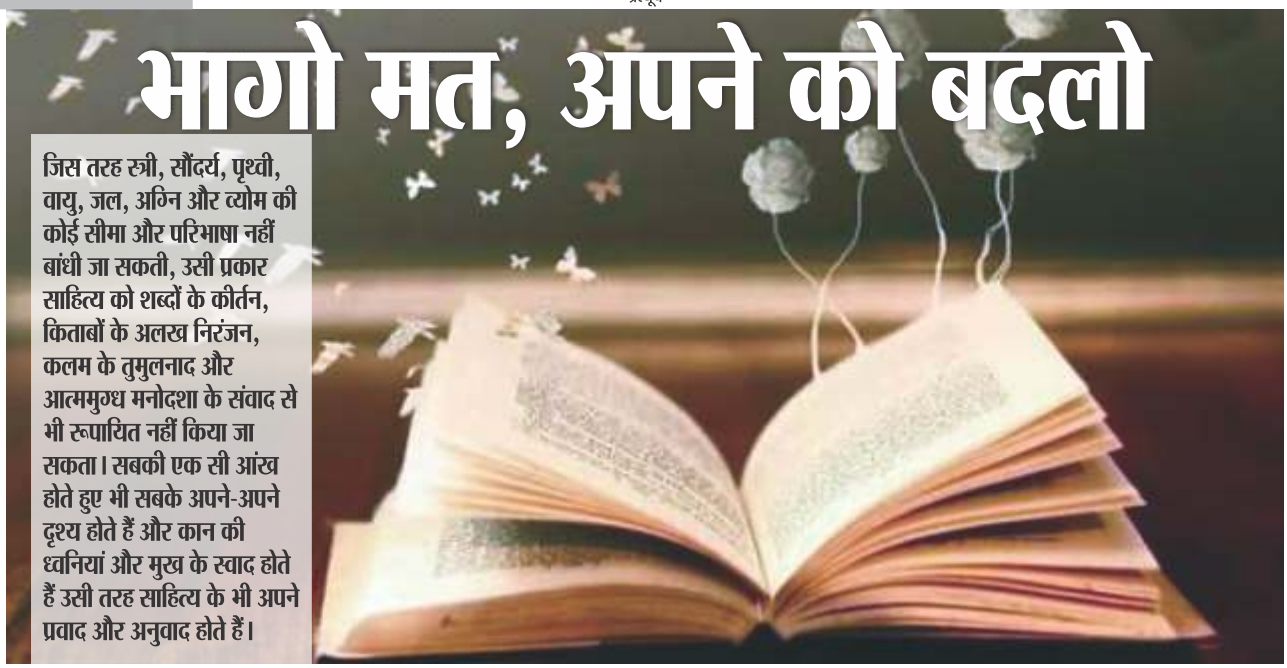

जिस तरह स्त्री, सौंदर्य, पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और व्योम की कोई सीमा और परिभाषा नहीं बांधी जा सकती, उसी प्रकार साहित्य को शब्दों के कीर्तन, किताबों के अलख निरंजन, कलम के तुमुलनाद और आत्ममुग्ध मनोदशा के संवाद से भी रूपायित नहीं किया जा सकता। सबकी एक सी आंख होते हुए भी सबके अपने-अपने दृश्य होते हैं और कान की ध्वनियां और मुख के स्वाद होते हैं उसी तरह साहित्य के भी अपने प्रवाद और अनुवाद होते हैं।

वेदव्यास

20वीं शताब्दी के अनुभवों को लेकर इक्कीसवीं शताब्दी हमसे आज कई सवाल पूछ रही है। वह जानना चाहती है कि विज्ञान और प्रकृति के बीच मनुष्य के साथ कौन रहेगा? अध्यात्म और अर्थशास्त्र के रास्ते पर कौन साथ चलेगा? मनुष्य और राज्य सत्ता के आपसी रिश्ते कौन तय करेगा। वह यह भी समझना चाहती है कि क्या अब मनुष्य के लिए भूख, अशिक्षा और असमानता के शोषण से मुक्ति सम्भव है। क्या अब हजारों वर्ष पूर्व उद्घोषित वेदों के मानवतावाद और समवेत का दर्शन मनुष्य को लगातार की पराजय से बचा पाएगा और क्या अब मनुष्य के दैनिक जीवन में साहित्य का कोई हस्तक्षेप रह जाएगा?

ऐसे ही बहुत सारे प्रश्न हैं जो हमें विरासत में मिले हैं। लेकिन बीते समय की कहानी के अनेक महानायक ही आज हमें यह बताते हैं कि मनुष्य के पास सत्य और असत्य के बीच, अंधकार और प्रकाश के बीच, मंडी और मुद्रा के बीच, दाम, दण्ड, भेद को समझने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

अब जब धरती छोटी होती जा रही है और मनुष्य अपनी इच्छाओं के नित नए ग्रह-उपग्रह खोज रहा है तब भला साहित्य और संस्कृति की भूमिका का कौनसा स्वरूप वह अपने लिए तय करेगा इस बात पर हमें भी अभी से सोचना चाहिए। क्योंकि मनुष्य की विकास यात्रा का हमारा सम्पूर्ण अनुभव अनेक त्रासदियों से भरा हुआ है तथा स्थिति यह है कि मनुष्य अपनी समस्त नकारात्मक चेतना और प्रवृत्तियों के साथ परिवर्तन की ऊखली में सिर डाले छटपटा रहा है। अब मनुष्य को साहित्य, सम्पदा, विज्ञान और विकास में से कौन बचाएगा और कौन उसे धर्म के नाम पर जोड़ पाएगा। यह यक्ष प्रश्न भी आज सामने है। अपनी चर्चा की चौखट पर आज मेरा सरोकार केवल मात्र साहित्य ही है जो मनुष्य को नवीन विज्ञान देता है, इतिहास और भूगोल का सामान्य अनुसंधान देता है, जीव और जगत का वितान देता है और सम्पूर्ण लोकमंगल की तलाश में उसे सम्भोग से समाधि, युद्ध से शांति, आत्मा से परमात्मा, द्वैत से अद्वैत, व्याष्टि से समष्टि, विनाश से विकास और कलुषित से सुभाषित की ओर ले जाता है।

साहित्य मूलत: मनुष्य की चेतना के मनोविज्ञान का दर्पण है तथा मनुष्य के जीवन का ऐसा अमरफल है जो काल से मरता नहीं है, प्रकृति से डरता नहीं है और शब्द तथा भाषा के सभी बंधनों से आगे शब्दब्रह्म की तरह रहता है। साहित्य एक विचार-विज्ञान भी है तथा घटित-अघटित की भीतरी डायरी का भी काम करता है। साहित्य उनके लिए नहीं है जो मनुष्य के भीतर एक मंडी की तलाश करते हैं, साहित्य उनके लिए भी नहीं है जो समय के तत्काल को जीते हैं, साहित्य से उनका भी कोई लेना-देना नहीं है जो इसे सुख की सिंहासन बत्तीसी समझते हैं। साहित्य से ही जमीन का तल और मनुष्य का जल नापा जाता है और साहित्य से ही ज्ञान का बल और मनुष्य का छल परिभाषित होता है।

पिछली अनेक शताब्दियों में साहित्य के सभी आवरण बदल गए हैं लेकिन उसकी मूल खोज का शाश्वत रास्ता और अध्याय कहीं देखें तो पता चलेगा कि मनुष्य के मन, वचन और कर्म की परतों में केवल रचनाकार ही अनवरत झांक रहा है। जिसे सबने त्याग दिया है वही आज सृजनधर्मी का सरोकार है तथा साहित्य ही अब एक ऐसी शब्दों और भावों की सुरंग है जिसमें मनुष्य की कविता का अनहदनाद अनवरत जारी है। जो मनुष्य में विश्वास करता है वही साहित्य का अभिप्रेत है जो स्वयं में आस्था रखता है वही मनुष्य का चरम संकेत है। साहित्य का जन्म किसी पहाड़ से नहीं होता अपितु बादलों की गड़गड़ाहट से होता है जो बिजली की तरह कौंधता भी है और सुरसरि की तरह घर-आंगन को सींचता भी है।

साहित्य का अर्थ ही बदलाव और परिवर्तन में निहित है। दुनिया का अब तक का साहित्य यथास्थिति के विरोध का प्रमाण है। साहित्य केवल मंगल है और इसमें शब्दों का दंगल केवल वही करते हैं जो मनुष्य को

मनुष्य भी नहीं रहने देना चाहते। यह साहित्य एक ऐसी 'माया' है जिसके नाना रूपों में सुखनारायण बसते हैं तथा जहां पत्थर की मूर्तियां रूढ़ियों की संस्कृति, असमानता का समाजशास्त्र और छल-बल का अर्थजगत् पूरी तरह प्रतिबंधित है। साहित्य जहां मनुष्यता का अमरकोश है, विकास का कल्पतरू है, मंगल की भूमिपूजा है वहां यह असूर पर सूर-मुनियों की विजय का दस्तावेज भी है।

हम एक पूरी उलझन और समय की भूलभुलैया के बीच आपको इस साहित्य के बदलते धर्मशास्त्र की यात्रा पर ले जाना चाहते हैं और आपसे एक ऐसा संवाद स्थापित करना चाहते हैं जो मन से पढ़ा जाय और विचार से सुना जाय। जो भी मनुष्य बनना चाहते हैं उनके लिए साहित्य एक अनिवार्य विषय है। इस पाठ्यक्रम में उत्थान की सभी अट्टालिकाएं मनुष्य के मन-विचार की नींव पर ही खड़ी हैं। यह साहित्य आसमान में यहां वहां कोई बगीचा तो नहीं लगाता, लेकिन आजादी, समानता और लोककल्याण की प्रसंग वाटिका में चिंतनधारा की अविस्मरणीय पदचाप अवश्य ही अंकित करता है। यह साहित्य-कर्म जंगल के जोगियों की बिरासत है, काल चक्र की पवित्रतम इबादत है, प्रकृति की तरह आंख खोलने की एक आदत है, अभिव्यक्ति की शहादत है और एक ऐसी आत्मलीन साधना है जो नदी के किनारे खड़े अकेले पेड़ की तरह मनुष्य की मंगलमय भविष्य की कामनाएं करती रहती है। साहित्य कोई मनोरंजन भी नहीं है तो कोई अंतिम दुखभंजन भी नहीं है किंतु एक अनवरत बहने वाली पवन धारणा है जिसमें मनुष्य का आदि और अंत सभी कुछ बोलता है तथा चरम सत्य को समय के चेहरे पर अंकित करता है और समाज का ऋण है जिसे मनुष्य के लिए, मनुष्य के द्वारा मनुष्य को सौंपा जाता है। जिस तरह स्त्री, सौंदर्य, पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और व्योम की कोई सीमा और परिभाषा नहीं बांधी जा सकती, उसी प्रकार साहित्य को शब्दों के कीर्तन, किताबों के अलख निरंजन, कलम के तुमुलनाद और आत्ममुग्ध मनोदशा के संवाद से भी रूपायित नहीं किया जा सकता। सबकी एक सी आंख होते हुए भी सबके अपने-अपने दृश्य होते हैं और कान की ध्वनियां और मुख के स्वाद होते हैं उसी तरह साहित्य के भी अपने प्रवाद और अनुवाद होते हैं। लेकिन कुछ भी रहता हो, पर साहित्य और सृजन की लोक यात्रा में मनुष्य का साथ वही दे सकता है जो उसके सम्मान में सिर देने को तैयार हो।

समय और सत्य की मुख्य धारा में मनुष्य को परिशिष्ठ की तरह प्रायोजित करने के खिलाफ यह एक बहस और दखल करने का उपक्रम, आगे फिर उन सब अवधारणाओं, आस्थाओं, मतवादों और सृजन सरोकारों पर केंद्रित होगा लेकिन इसके साथ हम जिधर भी देखेंगे और सुनेंगे वह एक समय की महाभारत होगी जिसके कुरुक्षेत्र में सभी पाण्डव-कौरव थक-हारकर मनुष्य के मंगल की अभिलाषा लेकर ही आएंगे-जाएंगे। धैर्य से सुनिये मनुष्य जाति के भूत, भविष्य और वर्तमान को। मनुष्य का रास्ता ही साहित्य का रास्ता है और साहित्य का वास्ता ही मनुष्य का वास्ता है। शेष चराचर भौतिक है और क्षणिक है। चलते रहिये, चलते रहिये। थकिये और भटकिये मत। यह अंधेरा जितना बढ़ेगा आपका सवेरा उतना ही प्रखर और अवश्यसम्भावि होगा। इसलिए भागो मत। अपने को बदलो, भय और भाग्य की काराओं से बाहर निकलो।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार हैं)

ओमप्रकाश अग्रवाल
डायरेक्टर
73574-16441

अनुज गर्ग
डायरेक्टर
97820-62721

ॐ Group

ओम रियल स्टेट

209, राधे प्लाजा, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.)
मो. 7357416441, 9782062721

OM REAL ESTATE

209, Radhey Plaza, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur (Raj.)
Ph.: 7357416441, 9782062721

मन को साधता है- नमस्कार योग

मन को साधने के लिए संतुलन सबसे ज़रूरी तत्व है। इसके बिना न तो मनुष्य का जीवन चलता है और न यह दुनिया। इस संतुलन को साधने का सबसे आसान तरीका है- नमस्कार। जब हम दोनों हथेलियों को जोड़कर नमस्कार करते हैं तो सिर्फ एक-दूसरे से ही नहीं जुड़ते, बल्कि दुनियां को भी जोड़ते हैं। यह जुड़ाव ही मन की साधना है। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के संदर्भ में प्रस्तुत है- *सद्गुरू जग्गी वासुदेव* का विशेष आलेख।

योग का सबसे सरल रूप नमस्कारयोग है। बस अपनी हथेलियों को साथ मिलाइए और दुनिया को जोड़िए। अगर आप सिर्फ इन हाथों को साथ जोड़ते हैं, तो इस बात की संभावना है कि आप दुनिया को जोड़ सकते हैं। नमस्कार करें। रोजाना अपनी हथेलियों को साथ जोड़ कर किसी ऐसी चीज को देखें, जो आपके लिए कोई मायने रखती है। वह सूर्य, चंद्रमा या बादल हो सकता है या फिर खाली आसमान, कोई पेड़, या कोई चट्टान हो सकती है या आपके पति- पत्नी, बच्चा या माता-पिता हो सकते हैं। कोई भी चीज जो आपके लिए वाकई मायने रखती है, उसके लिए अपने हाथ जोड़िए और उसकी ओर सबसे गहरी भावना और आदर भाव के साथ देखिए। कुछ नहीं तो सिर्फ किसी पेड़ की ओर बस इस तरह तीन से पांच मिनट तक देखिए। आपका जीवन रूपांतरित होने लगेगा। आपको बस जमीन पर पालथी मार कर बैठना है। अगर आप चाहें तो एक पेड़, अपने पति-पत्नी, बच्चे या किसी के भी सामने बैठ सकते हैं। अगर आप लंबे समय तक सिर्फ अपने हाथों को जोड़ कर रखें, तो सिस्टम में एक बुनियादी रूपांतरण होने लगता है। कोई भी अवसर मत गंवाइए। अगर आप किसी गाय, किसी हाथी, किसी चींटी, किसी को भी देखें, तो मौके को मत गंवाइए। हाथ, जोड़ कर नमस्कार कीजिए। सब कुछ इस बात की याद दिलाते हैं कि आपको जरूरत है जुड़ने की, मेल की, अपने अंदर एक संयोजन की। अगर आप इस दुनिया में बहुत अच्छी तरह जीना चाहते हैं, तो आपको अपने सिस्टम में सामंजस्य लाने की जरूरत है। अगर कोई पेड़ हिलता है, बादल आते जाते हैं, सूर्य निकल रहा है, चंद्रमा, सितारे, कोई आपकी ओर आ रहे हैं, कोई वहां से जा रहा है तो सबको बस नमस्कार कीजिए। ...कोई मौका मत गंवाइए।

इस दुनिया में बेहतरीन और- शानदार तरीके से रहने की आपकी काबिलियत सिर्फ इसी बात पर निर्भर करती है कि आपका तंत्र कितनी लय में, कितने सामंजस्य में है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या घटित, हुआ। कोई अच्छी चीज हुई या कोई बुरी चीज हुई। आप अपने भीतर संतुलन लाइए। अगर आपके भीतर यह संतुलन होगा, तो आपकी जीवन यात्रा निश्चित रूप से सुखद होगी। चाहे आपके आस-पास कुछ भी हो रहा हो, हमारे आस-पास बहुत-सी चीजें घटित होती रहती हैं, हम हमेशा उन चीजों पर काबू नहीं कर पाते, मगर हमारे भीतर क्या घटित होता है.. उसी से यह तय होता है कि इस दुनिया में हमारी यात्रा कैसी होगी- कष्टपूर्ण या आनंदमय। गौर करेंगे, तो पाएंगे कि यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसका आविष्कार बाहरी चीजों से किया गया है। किसी भी संस्कृति में जब भी कोई अपने आस-पास की चीजों से पूरी तरह तालमेल महसूस करता है, अनजाने में ही सही, वह नमस्कार की मुद्रा में आ जाता है। इसे सिखाने की जरूरत नहीं होती। हां, हमारी संस्कृति में यह एक विज्ञान की तरह सिखाया गया है। बाकी दुनिया में जब कोई अपने भीतर पूरी तरह संतुलित महसूस करता है, अपने चारों ओर की हर चीज के साथ तालमेल महसूस करता है, तो क्या वह स्वाभाविक रूप से नमस्कार की मुद्रा में नहीं आ जाता? मैंने अपोलो 11 के प्रक्षेपण का वीडियो देखा। क्योंकि, अपोलो 11 पर जाने वाले इस व्यक्ति से मैं मिला और उसने मुझे यह वीडियो दिया। मैं इसे देख रहा था। जब यह प्रक्षेपण हो रहा था, बहुत-से लोग जो शीशों के पीछे खड़े थे और सिर्फ देख रहे थे, वे सब अपने हाथों को जोड़कर नमस्कार की मुद्रा में थे। क्या आपने यह देखा है? वे बस एक रॉकेट का प्रक्षेपण देख रहे थे। चूंकि वह सारा दृश्य इतना अद्भुत था, तो यह नमस्कार स्वाभाविक रूप से हो गया।

जब कोई चीज आपको अभिभूत कर देती है, कोई चीज जो आपको लय में ला दे तो तुरंत आपके हाथ जुड़ जाते हैं। इसके उलट अगर आप पहले ही हाथ जोड़ कर नमस्कार करना शुरू कर दें, तो आप संतुलन में होंगे। इसलिए हम यह सरल योग दुनिया को सिखाना चाहते हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. महावीर सिंह परिहार
एम.एस. (आर्थो)
अस्थि रोग विशेषज्ञ
मो. 94141 62139

S H
R C

डॉ. श्रीमती सुमन परिहार
एम.एस. (सर्जरी)
महिला शल्य चिकित्सक
मो. 98297 91760

श्रीनाथ हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

उपलब्ध सुविधायें

- आर्म (टेलिविजन) द्वारा आधुनिकतम तरीके से हड्डी के फ्रेक्चर की ऑपरेशन सुविधा।
- स्तन सम्बन्धी रोगों (गाठ, केंसर) का इलाज व निदान।
- एपेन्डिक्स, हर्निया एवं पथरी, बच्चेदानी का ऑपरेशन।
- हड्डी के सभी प्रकार के आधुनिक ऑपरेशन।
- नेलिंग-प्लेटिंग, प्रोस्थेसिस इत्यादि।
- जन्मजात विकलांगता एवं पोलियो के ऑपरेशन।
- प्लास्टर
- एक्स-रे

ऑपरेशन एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध

3-नवरत्न कॉम्पलेक्स, महावीर कॉलोनी पार्क,
80 फीट रोड, एवरेस्ट, आशियान के सामने, उदयपुर

2422758 (S)
2410683 (R)

T-JEWELLERS

Gold and Silver
Ornaments & Silver utensil

233 A, Bapu Bazar, Udaipur-313001

ज़रूरी है चैन की नींद

अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छी नींद ज़रूरी है। अच्छी नींद की पहली शर्त है, व्यवस्थित जीवन शैली-दिनचर्या। जिन्हे ठीक से नींद नहीं आती उन्हें समझ लेना चाहिए कि कहीं कुछ गड़बड़ है। अनिद्रा से भी शरीर कई तरह के रोगों का डेरा बन सकता है।

डॉ. नवनीत अग्रवाल

रात में भरपूर नींद न ले पाना यानि अनिद्रा की शिकायत, दिन में नींद आना और खर्राटे लेने से आंखों पर बुरा असर पड़ता है। लंबे समय तक यह समस्या होने पर काला मोतियाबिंद होने का जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में समय पर इलाज न मिल पाने से आंखों की रोशनी जाने की खतरा भी बना रहता है।

एमजे ओपन जर्नल में प्रकाशित आलेख में शोधकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने इस निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए ब्रिटेन के बायोबैंक के 4 लाख से ज्यादा लोगों के डेटा का आकलन किया। काला मोतियाबिंद के कारण आंखों की रोशनी चले जाने के बाद दोबारा नहीं लौटती है। शोधकर्ताओं के अनुसार भरपूर नींद न लेने की स्थिति में यह किसी भी उम्र में हो सकता है। बुजुर्गों और धूम्रपान करने वालों में यह आम समस्या है। शोधकर्ताओं का मानना है कि 2040 तक यह दुनिया भर में 11.2 करोड़ लोगों को प्रभावित कर सकता है।

2010 से 2021 तक चला अध्ययन: चीन के शोधकर्ताओं के नेतृत्व में यह अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में 40 से 69 आयु वर्ग के लोगों को शामिल किया गया था। इन लोगों से उनकी नींद की आदतों के बारे में जानकारी जमा की गई। 2010 से 2021 तक चले इस अध्ययन के दौरान काला मोतियाबिंद के 8,690 मामलों की पहचान की गई।

काला मोतियाबिंद आंख से दिमाग को जोड़ने वाली ऑप्टिक तंत्रिका को प्रभावित करता है। इसमें आंख की प्रकाश संवदेनशील कोशिकाओं का क्षरण होता है। इससे आंखों की रोशनी हमेशा के लिए जा सकती है। सूरज की रोशनी से विटामिन 'डी' मिलता है, जो शरीर के लिए फायदेमंद है। इसकी कमी से कई तरह के रोग हो सकते हैं। दिन में अपर्याप्त सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने से रात में सोने में समस्या हो सकती है। अमेरिका में हुआ यह अध्ययन जर्नल ऑफ पीनियल रिसर्च में प्रकाशित हुआ।

वाशिंगटन विश्वविद्यालय में 2015 से 2018 तक 500 से अधिक स्नातक छात्रों में यह शोध किया गया। इसमें उनके नींद और दिन के प्रकाश के संबंध का अवलोकन किया गया। उन्होंने पाया कि सर्दियों के मौसम में देर रात सोते हैं और सुबह देर से जागते हैं, वहीं विश्वविद्यालय परिसर में सीमित समय के लिए सूरज की रोशनी आती है। जबकि, परिसर में दिन के उजाले के उनके घंटे सीमित होते हैं। वैज्ञानिकों ने बताया कि छात्र मौसम की परवाह किए बिना रात में लगभग समान मात्रा में नींद ले रहे थे, लेकिन सर्दियों में वे औसतन 35 मिनट बाद बिस्तर पर जाते थे और गर्मियों की तुलना में 27 मिनट बाद जागते थे। इस वजह से छात्रों को सर्दियों में दिन के समय रोशनी न मिलना था। इसलिए उनकी सर्केडियन घड़ी गर्मियों की तुलना में देरी से चल रही थीं।

सोने-जागने का समय तय करती है सर्केडियन घड़ी: वाशिंगटन विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान विभाग के प्रोफेसर होरासियो डे ला इग्लेसिया के अनुसार हमारे शरीर में एक प्राकृतिक सर्केडियन घड़ी होती है जो बताती है कि रात को कब सोना है और सुबह कब जागना है। यदि आपको दिन के दौरान पर्याप्त सूरज की रोशनी नहीं मिलती है, तो इससे आपकी घड़ी में देरी होने लगती है और यह रात में नींद को पीछे धकेलता है। यानी रात के समय आसानी से नींद नहीं आती है। अध्ययन में पाया गया है कि छात्रों के लिए ये सर्केडियन घड़ी गर्मियों की तुलना में सर्दियों में 40 मिनट बाद तक चल रही थी।

शहर की आबादी को ज्यादा जोखिम: शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन के माध्यम से दुनिया भर में लोगों की बढ़ती संख्या के साथ शहरों में बढ़ते कृत्रिम प्रकाश के बढ़ते चलन को लेकर चेताया है।

सही पॉश्चर में सोएं

सुबह उठने पर हाथ में भारीपन या गर्दन में लचक महसूस होती है? अगर हां तो संभव है कि आप इस तरह सोए हैं कि हाथ पर देर तक काफी दबाव पड़ा है। सोते समय हमारे शरीर के किसी भी एक हिस्से या जोड़ पर बहुत ज्यादा दबाव नहीं पड़ना चाहिए। बिना किसी खास कारण या बदलाव के नींद आने में परेशानी हो रही है तो अपनी सोने की मुद्रा पर ध्यान देना जरूरी होगा।

विशेषज्ञ हमेशा पीठ के बल लेटने को कहते हैं। इस तरह शरीर के किसी हिस्से पर ज्यादा जोर नहीं पड़ता। पर, लगातार पीठ के बल लेटे रहने से शरीर के पिछले हिस्से पर दबाव पड़ता है। ऐसे में घुटनों या पिंडलियों के नीचे तकिया रख कर सोएं। इससे पॉस्चर के साथ खून का संचार भी सही रहता है।

करवट लेकर सोएं: बाईं तरफ करवट लेकर लेटना सबसे अच्छा पॉश्चर माना जाता है। इससे खर्राटों की दिक्कत में भी आराम मिल सकता है। पर, लगातार एक ही करवट सोए रहना सहीं नहीं होता। इससे घुटनों और कमर पर गलत असर पड़ सकता है, क्योंकि इस मुद्रा में कमर मुड़ती है और घुटने एक के ऊपर एक आकर रगड़ खाते हैं। जोड़ो में दर्द भी बढ़ सकता है। बेहतर है कि करवट बदलते रहें। करवट में सोते समय घुटनों के बीच में तकिया लगाकर भी सोंए, इससे एक पैर पर दूसरे पैर पर दबाव कम पड़ेगा।

करवट लेकर सोते समय कंधा बिस्तर को छूना चाहिए, यानी बाकी शरीर की सीध में होना चाहिए। घुटने के बीच में तकिया लगाए। अगर कमर और बिस्तर के बीच ज्यादा गैप रहता है तो छोटे तकिए का सहरा ले लें।

पेट के बल सोते हैं तो: यह ठीक है कि पेट के बल सोने पर आराम मिलता है, पर इससे पेट ही नहीं दबता, गर्दन व शरीर के पीछे के हिस्से पर भी गहरा दबाव पड़ता है। पर, अगर आपको पेट के बल लेटने पर ही आराम मिलता है तो बेहतर है कि पेट के निचले हिस्से में तकिया लगाकर सोएं। इससे पेट पर दबाव नहीं पड़ेगा।

अचानक से ना उठें: उठते समय करवट लेकर उठें। सबसे पहले करवट लें और बिस्तर पर किनारे पर हाथ रख उठकर बैठ जाएं। अब हल्के से झुकें और फिर खड़े हो जाएं।

सही तरीके का इस्तेमाल करें: हमारी गर्दन की संरचना पूरी तरह सीधी न होकर थोड़ी आगे की और झुकी होती है। सोते समय इस घुमाव को बनाए रखना जरूरी होता है। बहुत मोटा या बहुत पतला तकिया गर्दन को नुकसान पहुंचाता है। कमर व मांसपेशियों पर खूब जोर पड़ सकता है।

अगर गर्दन व कमर दर्द की समस्या रहती है तो सिर के नीचे तकिया नहीं लगाए। जरूरत महसूस हो तो तौलिए को मोड़कर लगाएं। कुल मिलाकर, तकिया ऐसा होना चाहिए, जिससे गर्दन का हल्का घुमाव बना रहे और सिर बाकी शरीर से ना बहुत ऊंचाई पर हो, ना ही नीचे की ओर झुका हुआ।

डॉ. सुनील शर्मा

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

Jinendra Vanawat
Director

RS-CIT

Mob. No. 8003699621

Everest Technical
EDUCATION PVT. LTD.

(A Company Dedicated for Skill Development)
Corp. Off.: 229, IInd Floor, Anand Plaza
University Road, Udaipur (Raj.) 313 001
Ph.: (0294) 5101501 E-mail.: j_vanawat@hotmail.com

Authorised Service Provider

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

RAJASTHAN KNOWLEDGE CORPORATION LIMITED
(A Public Limited Company Promoted by Govt. of Raj.)
Head off.: 7 A, Jhalana Institutional Area, Jaipur - 302004 www.rkcl.in

मौसम चटपटे अचार का...

इन गर्मियों में नए और चटखारेदार अचार बनाकर खाने का स्वाद बढ़ा लीजिए। ये झटपट बनने के साथ ही स्वाद में भी लाजवाब हैं।

मोना अग्रवाल

आम-चना अचार

आवश्यक सामग्री: कैरी (धुली और छीली)– 500 ग्राम, काबुली चने– 1 कप, मेथीदाना– 2 बड़े चम्मच, राई दाल– 100 ग्राम, सौंफ – 50 ग्राम, साबुत धनिया–1 बड़ा चम्मच, जीरा– 1 बड़ा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर– 100 ग्राम, सरसों का तेल– 2 कप, हींग– 1 छोटा चम्मच, हल्दी–1 छोटा चम्मच, नमक– स्वादानुसार।

बनाने की विधि: कैरी कद्दूकस कर निचोड़कर रस निकाले लें। इस रस में काबुली चने 7–8 घंटे भिगोकर रखें। तेल गर्म करें और ठंडा कर लें। किसी हुई कैरी में मसाले और 1 कप तेल मिलाएं। अगले दिन इसमें भीगे चने, बचा तेल मिलाकर बरनी में भरकर 6–7 दिन के लिए धूप में रखें। रोज एक बार अचार को हिला दें ताकि मसाले मिल जाएं।

लसौड़े का अचार

आवश्यक सामग्री: लसौड़े– 1/2 किलो, पिसी राई– 25 ग्राम, नमक– स्वादानुसार, हींग– 1/4 छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर– 25 ग्राम, तेल–2 बड़े चम्मच, हल्दी–2 छोटी चम्मच।

बनाने की विधि: लसौड़े धोकर पोंछ लें। इनमें नमक व 1 छोटा चम्मच हल्दी मिले पानी में डालकर एक उबाल आने तक पका लें। पकने के बाद लसौड़ों को निथारकर पानी को फेंक दें। एक लीटर पानी उबालें और ठंडा होने पर इसमें सभी मसाले, तेल और लसौड़े मिलाकर 2 दिन धूप में रखें। लो फैट अचार तैयार है। अचार का पूरी, पराठों के साथ मजा लें। ये अचार फ्रिज में रखने पर ज्यादा दिन टिकता है। गर्मियों में इसका सेवन सुपाच्य होता है।

पचरंगा अचार

आवश्यक सामग्री: कैरी– 1/2 किलो, नींबू– 250 ग्राम, हरी मिर्च– 50 ग्राम, अदरक– 50 ग्राम, लसौड़े– 250 ग्राम, तेल– 250 मिलीलीटर, राई दाल–100 ग्राम, पिसा मेथीदाना–50 ग्राम, लाल मिर्च पाउडर– 100 ग्राम, हींग–1 छोटा चम्मच, हल्दी–1 बड़ा चम्मच, नमक–स्वादानुसार।

बनाने की विधि: कैरी और नींबू के चौकोर टुकड़े करें और हरी मिर्च के डण्ठल हटा दें। अदरक छीलकर छोटे टुकड़ों में काट लें। लसौड़े में चीरा लगाकर गुठली हटा दें। सब्जियों और मसालों को मिला लें। तेल को गर्म करके ठंडा कर लें और सब्जियों में मिलाएं। तैयार अचार को बरनी में दबा–दबा कर भरें और 5–7 दिन तक धूप में रखें। पचरंगा अचार तैयार है।

खीरे का अचार

आवश्यक सामग्री: खीरे– 2–3 (मध्यम आकार के), नमक– स्वादानुसार, हरी मिर्च– 2, लालमिर्च पाउडर– 1 छोटा चम्मच, हल्दी 1/4 छोटा चम्मच, सिरका– 1 छोटा चम्मच, नींबू–2, तेल– 2 बड़े चम्मच, राई पाउडर– 1 बड़ा चम्मच।

बनाने की विधि: खीरे धोकर पोंछ लें फिर इन्हें छीलकर 2 इंच लम्बे टुकड़े कर लें। हरी मिर्च के डण्ठल तोड़कर बारीक काट लें। खीरा, हरीमिर्च, नमक, लालमिर्च और नींबू का रस मिलाकर एक दो घंटे के लिए रख दें। इसमें तेल, सिरका और राई पाउडर मिलाएं। चटपटा कुकुम्बर पिकल खाने के लिए तैयार है। ये झटपट तैयार होने वाला अचार है इसे आप सलाद की तरह भी सर्व कर सकते हैं।

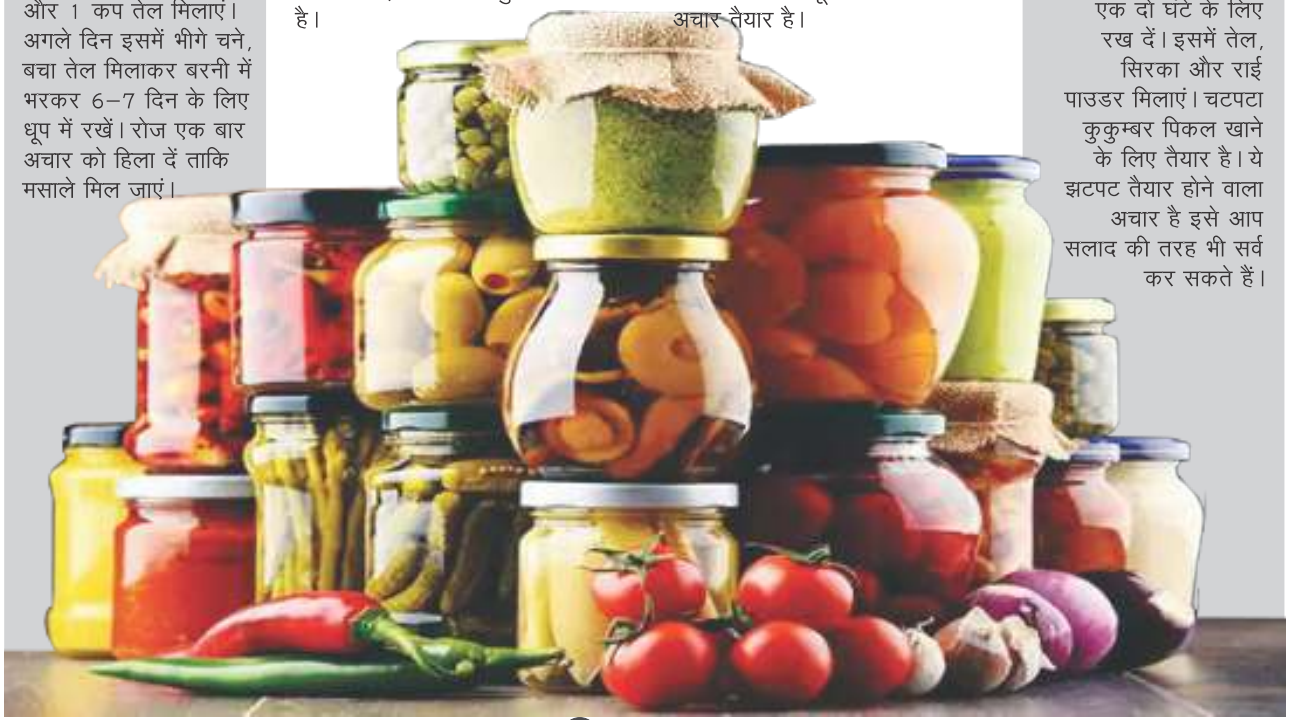

Vikram Arora
Managing Director

JK

ARORA'S
JK NATURAL MARBLES LIMITED

ARORA GROUP
- ▲ Dairy
- ▲ Realty
- ▲ Mining
- ▲ Hospitality
- ▲ Distillery
- ▲ Trading

G-1, The IDEA Apartment, 14-A-1, New Fatehpura, Opp. Allahabad Bank
Udaipur - 313 004 (Raj.) India, Tel : +91 294-2414684 / 2810352

Corporate Office :
237, Ekta Co-operative Housing Society Ltd., Unit No. 1896
Motilal Nagar No. 1, Road No. 4, Opp. Ganesh Mandir Ground, Goregaon, West Mumbai - 400104

www.jkmarble.com ❙ vikramarora@jkmarble.com

कर्नाटक

कुल सीटें: 224 बहुमत: 113
पूर्ण बहुमत से सरकार चलाने का जनादेश

कांग्रेस 135
पिछली बार से 55 सीटें ज्यादा
वोट प्रतिशत 2023- 42.9 प्रतिशत
(+4.76 प्रतिशत)
लोकसभा 2019 वोट शेयर 31.88 प्रतिशत

भाजपा 66
पिछली बार से 38 सीटें कम
वोट प्रतिशत 2023- 36 प्रतिशत
(-0.35 प्रतिशत)
लोकसभा 2019 वोट शेयर 51.38 प्रतिशत

जेडीएस 19
पिछली बार से 18 सीटें कम
वोट प्रतिशत 2023 13.3 प्रतिशत
(- 5 प्रतिशत)
लोकसभा 2019 वोट शेयर 9.67 प्रतिशत

अन्य 04
पिछली बार से 01 ज्यादा
लोकसभा 2019 वोट शेयर 7.07 प्रतिशत

कांग्रेस: कर्नाटक में मिल गई संजीवनी

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना जीतने की भी भरी हुंकार

विष्णु शर्मा हितैषी

दक्षिण भारत के द्वार कर्नाटक में जीत की बूटी कांग्रेस के हाथ लगी। प्रदेश में कांग्रेस ने 10 साल बाद अपने दम पर सत्ता में वापसी करते हुए भारतीय जनता पार्टी को उसके कब्जे वाले एकमात्र दक्षिणी राज्य से बाहर कर दिया। कांग्रेस ने 1989 के विधानसभा चुनाव में 178 सीटों पर जीत दर्ज की थी। तब लिंगायत नेता वीरेंद्र पाटिल राज्य के मुख्यमंत्री बने थे। उसके बाद के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस 34 सीटों पर सिमट गई थी। फिर 1999 के चुनाव में कांग्रेस ने 132 सीटें और 2013 के चुनाव में 122 सीटें जीती थीं। पिछले माह संपन्न चुनाव में भाजपा के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर पर सवार होकर कांग्रेस ने बहुमत का 113 सीट का आंकड़ा पार करते हुए 135 सीटें जीत ली। इस चुनाव में देवगौड़ा परिवार के नेतृत्व वाले जनता दल (सेक्युलर) को भी करारा झटका लगा है, जिसे त्रिशंकु विधानसभा होने की स्थिति में 'किंग मेकर' की भूमिका में आने की उम्मीद थी। कर्नाटक की 224 सदस्यीय विधानसभा में कांग्रेस ने जादुई आंकड़े 113 से 23 सीटें ज्यादा हासिल कर जोड़-तोड़ की आशंकाओं को खत्म कर दिया। राज्य में 10 मई को हुए मतदान की गिनती 13 मई को हुई। कांग्रेस को 2018 के चुनाव परिणाम की तुलना में 55 सीटें ज्यादा मिलीं। भाजपा को 2018 के चुनाव के मुकाबले में 38 सीटों का नुकसान उठाते हुए सिर्फ 66 सीटों से संतोष करना पड़ा। राज्य सरकार के 14 मंत्रियों को हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस ने पूर्व में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को पुन: सरकार के नेतृत्व की कमान सौंपी है, जबकि प्रदेश अध्यक्ष डी.के.शिव कुमार को उनकी पसंद के विभागों के साथ उपमुख्यमंत्री बनाया गया है। दोनों के बीच मुख्यमंत्री पद की दावेदारी के चलते सोनिया गांधी के हस्तक्षेप से पांच दिन बाद मामला सुलझ पाया। कांग्रेस की तैयारी अब इसी साल राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना तथा अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव की परीक्षा पर है।

खरगे का स्कोर 4-2

अध्यक्ष के रूप में मल्लिकार्जुन खरगे के कांग्रेस की कमान सम्भालने के बाद पार्टी को दूसरी चुनावी सफलता मिली है। सात माह पहले पार्टी अध्यक्ष बने खरगे के नेतृत्व में पार्टी ने छह विधानसभा चुनाव लड़े जिसमें हिमाचल प्रदेश के बाद गृह राज्य कर्नाटक में कांग्रेस ने जीत दर्ज की। पार्टी गुजरात, मेघालय, मणिपुर व त्रिपुरा में चुनाव हार गई।

भारत जोड़ो यात्रा से बूस्ट

राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा कांग्रेस के लिए कर्नाटक में बूस्टर डोज बनी। यात्रा जिन 20 विधानसभा क्षेत्रों से गुजरी थी उनमें से 15 में कांग्रेस ने जीत दर्ज की जबकि जेडी (एस) ने तीन व भाजपा ने दो सीटें जीतीं।

सिद्धारमैया

डी.के. शिवकुमार

भाजपा की नाव में था कलह का छेद

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को करारी हार का सामना करना पड़ा है। भाजपा की इस शिकस्त के पीछे राज्य में पार्टी की आंतरिक कलह और लिंगायत समुदाय के नेताओं को सही ढंग से नहीं साधना प्रमुख वजह माना जा रहा है। भाजपा की हार के पीछे बड़ा मुद्दा अंदरूनी खींचतान को माना जा रहा है। कर्नाटक में भाजपा को खड़ा करने में पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने बड़ी भूमिका निभाई। लेकिन इस बार उनको विधानसभा चुनाव से एकदम अलग -थलग कर दिया गया। दूसरी ओर, जगदीश शेट्टार और पूर्व उपमुख्यमंत्री लक्ष्मण सावदी का भाजपा ने टिकट काटा जिसके बाद ये दोनों कांग्रेस में शामिल हो गए। लगता है कि लिंगायत समुदाय के इन तीनों बड़े नेताओं को नजरअंदाज करना भाजपा के लिए महंगा पड़ गया। हालांकि, पार्टी ने लिंगायत समुदाय के लोगों की नाराजगी को शांत करने के लिए सबसे अधिक 68 लिंगायत उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतारे। कर्नाटक में करीब 17 फीसद लोग लिंगायत समुदाय के हैं। इसके अलावा कांग्रेस के नेता डीके शिवकुमार और

सिद्धरमैया के सामने पार्टी कोई मजबूत नेतृत्व पेश नहीं कर पाई। येदियुरप्पा के बाद मुख्यमंत्री बनाए गए बसवराज बोम्मई कर्नाटक की जनता पर कोई खास असर नहीं छोड़ पाए। चुनाव प्रचार के दौरान भ्रष्टाचार का मुद्दा प्रमुख रहा। इस मुद्दे पर ही एस. ईश्वरप्पा को मंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा था। कांग्रेस ने भाजपा के खिलाफ शुरू से ही '40 फीसद पे-सीएम भ्रष्टाचार' का एजेंडा चस्पा कर दिया और वह धीरे-धीरे बड़ा मुद्दा बन गया। भाजपा इस मुद्दे पर जनता को भरोसे में नहीं ले पाई। इसके अलावा लगता है कि प्रधानमंत्री की ओर से उठाए गए 'कांग्रेस राज में 85 फीसद कमीशन' के मुद्दे को भाजपा अपने मतदाता को समझाने में विफल रही।

उपचुनाव: अपना दल, यूडीपी और बीजद की जीत

विधानसभा उपचुनावों में पंजाब के जलंधर में 'आप' की जीत के अलावा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सहयोगी पार्टी अपना दल (सोनेलाल) ने उत्तर प्रदेश, यूडीपी ने मेघालय और बीजद ने ओडीशा में जीत हासिल की। लोकसभा की एक सीट, उत्तर प्रदेश विधानसभा की दो सीट और ओडीशा तथा मेघालय विधानसभा की एक-एक सीट पर उपचुनाव भी 10 मई को कराए गए थे। उत्तर प्रदेश के विधानसभा उपचुनावों में सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने समाजवादी पार्टी (सपा) के नेता आजम खान के रामपुर में चार दशक से जारी दबदबे को समाप्त कर दिया, क्योंकि अपना दल (सोनेलाल) ने स्वार सीट जीत ली। इस सीट पर शफीक अहमद अंसारी ने सपा की अनुराधा चौहान को 8,724 मतों के अंतर से हराया। अपना दल (सोनेलाल) को दूसरी सफलता तब मिली जब रिंकी कौल ने सपा की कीर्ति कौल को 9,587 मतों से हराकर छानबे (एससी) विधानसभा सीट जीत ली। ओडीशा में सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) ने झारसुगुड़ा विधानसभा सीट अपने पास बरकरार रखी और इसके उम्मीदवार दीपाली दास ने भाजपा उम्मीदवार तन्खाधर त्रिपाठी को 48,721 मतों से हराया। मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स में सोहियोंग उपचुनाव में यूडीपी के सिन्शर कुपर राय लिंगदोह थबाह ने एनपीपी के सम्लिन मालनगियांग को 3422 मतों से हराया।

विधानसभा चुनाव में जीत के लिए कांग्रेस पार्टी को बधाई। लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए मेरी शुभकामनाएं। मैं उन सभी को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने चुनाव में हमारा समर्थन किया। हम आने वाले समय में और अधिक उत्साह के साथ कर्नाटक की सेवा करेंगे।
–नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

एक तरफ साठगांठ वाले पूंजीवादियों की ताकत थी, दूसरी तरफ गरीब जनता की शक्ति थी। कांग्रेस गरीबों के साथ खड़ी हुई। हमने प्यार से दिल खोलकर यह लड़ाई लड़ी। नफरत का बाजार बंद हुआ और मोहब्बत की दुकानें खुलीं।
–राहुल गांधी, कांग्रेस नेता

यह जीत लोगों की जीत है। कांग्रेस मुक्त भारत बनाने वालों ने बहुत बातें की, आज सच्चाई है भाजपा मुक्त दक्षिण भारत। अब अहंकारपूर्ण बयान नहीं चलेंगे, लोगों की पीड़ा को समझना होगा।
–मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस अध्यक्ष

कर्नाटक ने सांप्रदायिक राजनीति नकार कर विकास की राजनीति को चुना है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना विधानसभा चुनाव में भी इसकी पुनरावृत्ति होगी। सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस नेताओं ने शानदार कैंपेन किया। अब मोदीजी–अमित शाहजी को समझ जाना चाहिए।
–अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

जेआर नागर राविवि का दीक्षांत समारोह

भारत जब बोलता है, पूरी दुनिया सुनती है: आरएनसिंह

उदयपुर। केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आज दुनिया के लोग भारत के साथ कदम से कदम मिला कर चल रहे हैं। भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जब बोलता है तो पूरी दुनिया ध्यान से सुनती है। वे पिछले दिनों यहां जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के 16वें दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। सिंह ने कहा कि देश लगातार आगे बढ़ रहा है। हम 2027 तक विश्व की टॉप थ्री इकॉनोमी में शामिल हो जाएंगे।

उपाधियों से नवाजा: रक्षामंत्री ने समारोह में 32 विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि व 14 को स्वर्ण पदक से नवाजा। डॉ. तेजस्विनी अनंत कुमार को पं. जनार्दन राय नागर संस्कृति रत्न सम्मान से नवाजा गया। रक्षामंत्री ने यहां महाराणा प्रताप की चेतकारूढ़ प्रतिमा, नवीन खेल मैदान का अनावरण भी किया। रक्षामंत्री ने कहा कि हम बच्चों को कितना भी बड़ा आदमी क्यों ना बना दें पर जब तक हम उनके मन में राष्ट्र, समाज, संस्कृति और अपनी महान विभूतियों के संस्कार नहीं देते तब तक व्यक्तित्व का समग्र विकास संभव नहीं हो सकता। दीक्षांत समारोह में कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि विद्यापीठ ने हर क्षेत्र में खुद को साबित किया है। संस्थापक मनीषी पं जनु भाई ने 1937 में 3 रूपए और 5 कार्यकर्ताओं के साथ शिक्षा की जो अलख आदिवासी अंचल और सुदूर क्षेत्रों में जगाने का महायज्ञ शुरू किया था, वह आज 10 हजार विद्यार्थियों वाले संस्थान के रूप में वटवृक्ष का रूप ले चुका है। विद्यापीठ 40 से अधिक पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है।

विद्यार्थी क्षमतावर्धन करें: व्यास

उदयपुर। बी.एन कॉलेज ऑफ फार्मेसी और बी.एन आईपीएस के संयुक्त तत्वावधान में गत दिनों आयोजित सेमीनार में मैडनेक्स्ट बायोटेक लिमिटेड के निदेशक अनिल व्यास ने विद्यार्थियों को सफल होने के अनेक टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को एंटरप्रेन्योर रिसोर्स प्लानिंग, प्रोग्रामिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मार्केटिंग जैसे विषयों पर अपनी पकड़ बनानी चाहिए। अपने आपको देखना चाहिए कि उनकी रूचि किस विषय में है, उसके बाद छोटे-छोटे लक्ष्य बनाकर, समान रूचि वाले लोगों के समूहों का समुचित मूल्यांकन करते हुए प्रैक्टिकल और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिए। किताबें पढ़ने की आदत के साथ चुने हुए क्षेत्र के डोमिन को मजबूत करना चाहिए। डीन युवराज सिंह सारंगदेवोत ने बताया कि कार्यक्रम में डॉ चेतन सिंह चौहान, डॉ सिद्धराज सिंह सिसोदिया, आलोक भार्गव, डॉ मीनाक्षी भरकतिया, डॉ अमूल मिश्रा, डॉ अमित भार्गव, डॉ प्रिया कांबले, डॉ दीपक मारोठिया, हितेश कोठारी, मैना चौहान, साज़िया, रेखा माली आदि उपस्थित थे। मैडनेक्स्ट ने हाल ही में अपने बिजनेस का 100 करोड़ का टर्नओवर प्राप्त किया है और अफ्रीका में बोत्सवाना, नामीबिया, घाना सहित कई देशों में अपने मैन्युफ्रैक्चरिंग प्लांट्स लगाए हैं। अभी कुछ ही वर्ष पहले उदयपुर के इसवाल में इको फ्रेंडली प्लांट लगाया गया था जो आज नित नई बुलंदियों को छू रहा है। डॉ कमल सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम का संचालन व डॉ अंजु गोयल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बोलेरो मैक्स पिकअप लॉन्च

उदयपुर। के.एस.ऑटोमोबाइल्स प्राइवेट लिमिटेड पर महिंद्रा एंड महिंद्रा की ऑल न्यू बोलेरो मैक्स पिकअप रेंज को लॉन्च किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी पी.एल. बामणिया तथा जिला परिवहन अधिकारी कल्पना शर्मा एवं महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा के एरिया सेल्स मैंनेजर सौरभ पाण्डेय, महाप्रबंधक नावेद खान उपस्थित थे। कंपनी के निदेशक आकाश परिहार ने बताया कि ये नई पिकअप 1.3 टन से लेकर 2 टन तक की अधिक पेलोड क्षमता और अधिकतम 3050 मिमी कार्गो स्थान प्रदान करती है। ये एडवांस कनेक्टेड टेक्नोलॉजी सॉल्यूशन से युक्त है।

सूचना केंद्र में वाचनालय जीर्णोद्धार का लोकार्पण

उदयपुर। जिला कलक्टर ताराचंद मीणा ने कहा कि राज्य सरकार की ओर से युवाओं को अध्ययन की बेहतर सुविधाएं देने के प्रयास किए जा रहे हैं। सूचना एवं संपर्क कार्यालय में रवीन्द्र हैरियस प्राइवेट लिमिटेड (चौकसी ग्रुप) की सीएसआर हेड नम्रता चौकसी के आतिथ्य में वाचनालय जीर्णोद्धार के लोकार्पण के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। मीणा और सीएसआर हेड नम्रता ने मौली बंधन खोलकर जीर्णोद्धार कार्य का विधिवत लोकार्पण किया। जिला कलक्टर ने बताया कि सूचना केन्द्र में विभिन्न विकास कार्यों के लिए डीएमएफटी से 84 लाख रूपए की स्वीकृति जारी की गई है। ऐतिहासिक रंगमंच का यू आईटी के माध्यम से 2 करोड़ की लागत से जीर्णोद्धार हो रहा है। संयुक्त निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने बताया कि वर्ष 1973 में निर्मित वाचनालय में प्रतिदिन आने वाले विद्यार्थियों की सुविधा के लिए मॉड्यूलर फर्नीचर, रेक्स आदि की सुविधा के साथ रंगरोगन किया गया है। कार्यक्रम में चौकसी ग्रुप के सीएसआर मैनेजर डॉ प्रवीण यादव, महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति जिला संयोजक पंकज कुमार शर्मा भी मौजूद रहे।

शर्मा ने प्रवर अधीक्षक का पद संभाला

उदयपुर। भारतीय डाक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी कल्याण मल शर्मा ने उदयपुर मंडल के नए प्रवर अधीक्षक के रूप में गत दिनों कार्यभार ग्रहण किया। वे इससे पूर्व डाक मुख्यालय नई दिल्ली में पदस्थापित थे। शर्मा ने बताया कि उनका प्रमुख उद्देश्य भारतीय डाक विभाग की समस्त सेवाओं जैसे पोस्ट ऑफिस बचत योजना, डाक जीवन बीमा, ग्रामीण डाक जीवन बीमा, इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक एवं पार्सल एवं स्पीड पोस्ट की सेवा में विभाग द्वारा आवंटित लक्ष्यों को शत प्रतिशत अर्जित करना है। जनसंपर्क निरीक्षक उमेश निमावत ने बताया कि पदभार ग्रहण के दौरान शर्मा का अभिनंदन किया गया।

नवनीत मोटर्स पर ऑल न्यू फ्रॉनक्स लॉन्च

उदयपुर। देश की अग्रणी ओटोमोबाइल कम्पनी मारूति सुजुकी द्वारा ऑल न्यू फ्रॉनक्स एंड फ्यूच्यूरिसटिक एंड स्पोर्टी एसयूवी गाड़ी को उदयपुर स्थित अधिकृत डीलरशिप नेक्सा नवनीत मोटर्स के शोरूम पर उदयपुर में जिला आबकारी अधिकारी मुकेश कुमार कलाल ने लॉन्च किया। इस अवसर पर नवनीत मोटर्स के मैनेजिंग डायरेक्टर एलएन माथुर, निदेशक प्रियांक माथुर व पूरी सेल्स टीम उपस्थित थी। कार्यक्रम में एलएन माथुर ने बताया कि न्यू फ्रॉनक्स में प्रोग्रेसिव स्मार्ट हाइब्रिड टेक्नोलॉजी के साथ 10 बूस्टर जेट इंजन, 1-12 ड्यूअल ट्रोन प्लश इंटीरियर, हिल होल्ड असिस्ट, इलेक्ट्रोनिक स्टेबिलिटी प्रोग्राम, 6 एंडएलेग्स 9 स्मार्ट प्ले प्रो इंफोटेनमेंट सिस्टम, हेडअप डिस्प्ले, वायरलेस चार्जर, झबिल्ट सुजुकी कनेक्ट, 360 व्यू कैमेरा, आरकेमिस साउंड सिस्टम के साथ कई नवीनतम फीचर्स दिए गए हैं।

THE SUCCESS GROUP OF INSTITUTIONS

"SUCCESS CAMPUS" Rudraksh Complex, University Road, Udaipur

SCHOOL'S	MIRANDA SR. SEC. SCHOOL	Hiran Magri Sec.5 Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2464056,9414546333
	THE PRAYAS PUBLIC SCHOOL	Tekri Udaipur (Rajasthan) Mob: 9462514121
	SWAMI VIVEKANAND Sr. Sec. School	Mali Colony, New Anand Vihar, Udaipur (Rajasthan), Mob: 9462514102
	ROYAL ACADEMY Secondary School	Opp North Sunderwas, Pratap Nagar, Udaipur, Mob: 9116091101
COACHING	THE SUCCESS POINT	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur, Mob: 9928522906
COLLEGE	THE SUCCESS COLLEGE	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2470087-88
VOCATIONAL	THE SUCCESS POINT Institue Of Vocational Studies	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2470087-88

सनातन मूल्यों के कवि - कबीर

भारतीय धर्म साधना के इतिहास में कबीरदास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि हुए हैं, जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर दीर्घकाल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया। जन्म से विद्रोही, प्रकृति से समाज और धर्म सुधारक, प्रगतिशील, दार्शनिक और कवि कबीर का सम्पूर्ण व्यक्तित्व उनके साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है।

सुप्रसिद्ध विचारक दार्शनिक ओशो के अनुसार कबीर ऐसे संत का नाम है जैसे पूर्णिमा का चांद, अतुलनीय–अद्वितीय। जैसे अंधेरे में कोई अचानक दीया जला दे, ऐसे हैं हमारे कबीर। उनके अदभुत और प्यारे गीत–भजन ऐसे हैं, जैसे मरूस्थल में यकायक ही कोई मरूद्यान प्रकट हो जाए।

सन् 1425 में काशी में जन्मे कबीर को जुलाहे का व्यवसाय करने वाली जोगी जाति से जोड़ा जाता है। किंवदंती है कि नीरू जुलाहा और उसकी पत्नी नीमा ने उन्हें अपने घर लाकर उनका पालन पोषण किया था। आडम्बर से दूर सादगी पसंद कबीर ने हिंदू समाज से के आडम्बरों का तीखा विरोध किया। अक्षर बहत के परम साधक कबीर स्वयं अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा कि 'मसि का गद छूयो नहीं, कलम गहतों नहीं हाथ।' अपने स्वच्छंद स्वभाव के कारण रामानंद जी को अपना गुरु स्वीकार करके भी उन्होंने स्वयं को उनके संप्रदाय की सीमाओं में बंद नहीं किया था। संत मत के समस्त कवियों में कबीर सबसे प्रतिभाशाली और मौलिक थे। उनकी कविता में छंद, अलंकार, शब्द भक्ति आदि गौण हैं, लेकिन संदेश की प्रवृत्ति प्रधान है। इन संदेशों में आने वाले पीढ़ियों के लिए प्रेरणा पथ–प्रदर्शन तथा संवेदना की भावना सन्निहित है, कबीर भावना की अनुभूति से युक्त उत्कृष्ट रहस्यवादी और मर्यादा के रक्षक कवि थे। उन्होंने स्वत: कहा है – तुम जिन जानो गीत है, यह नित रहत विचार। पथभ्रष्ट समाज को उचित मार्ग पर लाना ही उनका प्रधान लक्ष्य है। कवि के रूप में कबीर जीवन के अत्यंत निकट हैं। सहजता उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। यथार्थ ही उनके काव्य का आधार है। तभी तो वह कहते हैं, मैं कहता हूं आखिन देखा, तू कहता है कागद की लेखी। अपने काव्य में कबीर आलोचक, सुधारक, पथ–प्रदर्शक और समन्वयकर्ता के रूप में दृष्टिगत होते हैं। कबीर की अभिव्यंजना शैली बेहद शक्तिशाली है। प्रतिपाद्य के एक–एक अंग को लेकर इस निरक्षर कवि ने सैकड़ों सखियों की रचना की है। उनकी कल्पनाशक्ति में व्यावहारिकता और कलात्मकता का सुंदर समन्वय है। उन्होंने भावों की अभिव्यक्ति के लिए जिन उपकरणों को स्वीकार किया है वे सब अत्यंत स्वाभाविक एवं सहज हैं।

कबीर का अपने युग के प्रति जो बहुमूल्य योगदान है वह उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने जीवन में सनातन मूल्यों की स्थापना का अथक प्रयत्न किया और इसके लिए समन्वय के उत्तम मार्ग को अपनाया। अणु–अणु में व्याप्त राम को जीवन के क्षण–क्षण में साकार करना उनका जीवन दर्शन था। देश के सभी भागों में विचरण करने वाले इस महान कवि ने अपने काव्य में सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा सरल होते हुए भी सामान्य और प्रभावोत्पादक है। कबीर की मृत्यु 1505 में हुई।

अतुलनीय कबीर

बहुत श्रद्धा से ही कबीर समझे जा सकते हैं। शंकराचार्य को समझना हो तो श्रद्धा की ऐसी जरूरत नहीं। शंकराचार्य का तर्क प्रबल है। नागार्जुन को समझना हो, श्रद्धा की क्या आवश्यकता। उनके प्रमाण, उनके विचार, उनके विचार की अद्भुत तर्कसरणी प्रभावित करेगी। कबीर के पास न तर्क है, न विचार है, न दर्शनशास्त्र है। शास्त्र से कबीर का क्या लेना–देना।

कहा कबीर ने – मसि कागद छुओ नहीं।

कभी छुआ ही नहीं जीवन में कागज, स्याही से कोई नाता ही नहीं बनाया। सीधी–सीधी अनुभूति है, अंगार है, राख नहीं। राख को तो तुम सम्हाल कर रख सकते हो। अंगार को सम्हालना हो तो श्रद्धा चाहिए, तो ही पी सकोगे यह आग। कबीर आग है और एक घूंट भी पी लो तो तुम्हारे भीतर अग्नि भभक उठे–सोई अग्नि जन्मों–जन्मों की। तुम भी दीए बनो। तुम्हारे भीतर भी सूरज उगे। और ऐसा हो तो ही समझना कि कबीर को समझा। ऐसा न हो, तो समझना कि कबीर के शब्द पकड़े, शब्दों की व्याख्या की, शब्दों के अर्थ जाने। पर वह सब ऊपर–ऊपर का काम है। जैसे कोई जमीन को इंच–दो इंच खोदे और सोचे कि कुआं हो गया। गहरा खोदना होगा। कंकड़–पत्थर आएंगे, कूडा–कचरा आएगा। मिट्टी हटानी होगी। धीरे–धीरे जलस्रोत के निकट पहुंचोगे।

(ओशो द्वारा संत कबीर पर दिए गए प्रवचन का अंश)

STEP BY STEP HIGH SCHOOL

Sec.11 Mo.7357012026.0294-2483932, Jogi ka talab road sec.14 Mo 9680520421, 0294-2941421
Web.: stepbystephighschool.org, E-mail: stepbystepschool11@gmail.com

SHARING IS CARING

INDEPENDENCE DAY

ART & CRAFT

BIRTHDAY CELEBRATION

ANNUAL FUNCTION

BLUE DAY

SKATING

KARATE

TABLE TENNIS

COOKING DEMO

MUSIC CLASS

DANDIYA CELEBRATION

KHO-KHO

KARGIL DAY

SPEED BALL

MARCH PAST

FOOT BALL

LIVE CHESS

YOGA

ATHLETICS

CRICKET

CLAY MODELLING

SEPAK TAKRAW

CARROM BOARD

BASKET BALL

JANMASHTAMI CELEBRATION

बच्चे के असामान्य व्यवहार पर हो जाएं सतर्क

सभ्य समाज में बाल यौन शोषण कालिख से कम नहीं है। इसके कारणों पर गौर करें तो एकल परिवार, आधुनिकता के कारण समाज में बदलाव, ज्यादा धन कमाने की लालसा, कुंठित सोच, यौन विकृति जैसे पहलू सामने आते हैं। जो बच्चे इस तरह के अपराधों का सामना कर चुके हैं, उनमें से अधिकतर में यह सामने आता है कि उनके माता-पिता या अन्य परिजन बच्चों को न तो समय दे पाते हैं और न ही उनकी बात समझने का प्रयास करते हैं। इसे मिटाने के लिए दृढ़ संकल्पित होने की जरूरत है।

मोबाइल, कम्प्यूटर, इंटरनेट जैसे संसाधन एक ओर सुविधा व उपयोग के संदर्भ में बेहतर साबित हुए हैं, वहीं ये अश्लील साहित्य जैसे दलदल का आसान जरिया भी बन चुके हैं। मानसिक विकारों व विकृतियों को बढ़ावा भी मिल रहा है। विकृत मानसिकता वाले अकेले बच्चों को 'सॉफ्ट टारगेट' समझते हैं। नादानी व अपरिपक्वता के कारण बच्चे अपने साथ होने वाले आपराधिक कृत्यों को न तो समझ पाते हैं और न ही उनका विरोध कर पाते हैं। कुछ परिजनों के गुस्सैल रवैए और कुछ बच्चों के अंतर्मुखी स्वभाव का होने के कारण भी वे समस्याएं साझा नहीं कर पाते हैं। नशा के कारण भी ऐसा हो सकता है। आंकड़ों की बात करें तो 80 फिसदी मामलों में अपराधी परिचित ही होते हैं।

अभिभावक समझें संकेत

जिस बच्चे के साथ ऐसी घटना होती है और वह अपनी बातों को व्यक्त नहीं कर पाता हैं तो उसके व्यवहार पर असर दिखने लगता है। यही वह समय है जब पैरेंट्स को बच्चे के व्यवहार से समझने की जरूरत पड़ती है।

व्यवहार में बदलाव

बच्चा स्पष्ट रूप से अलग व्यवहार करने लगता है। आम तौर पर बहिर्मुखी बच्चा अचानक चुप हो सकता है या फिर एक शर्मीला या शांत बच्चा अचानक बहुत आक्रामक व्यवहार कर सकता है। कुछ बच्चों को सोने और खाने में परेशानी हो सकती है, और कुछ बच्चे बिस्तर गीला करना भी शुरू कर सकते हैं। कुछ बच्चों को बुरे सपने भी आते हैं।

समस्या ऐसी भी

किसी व्यक्ति (या शोषणकर्ता) को देखकर नापसंद करना, उससे दूर भागना जैसा व्यवहार दिखे तो बच्चे से तुरंत बात करें। बच्चे की एकाग्रता में कमी, सीखने की क्षमता में कमी, परीक्षा परिणाम गिरना आदि पर भी ध्यान दें। ऐसी स्थितियों में तुरंत बच्चे से बात करें। उसकी दिनचर्या समझें, आत्मीयता जताएं। उस पर दोष न थोपें। पालन-पोषण को समय देते हुए उनसे मिलने वाले लोगों की जानकारी रखें। अगर जरूरी समझें तो बच्चे की काउंसलिंग भी करवाएं।

-प्रस्तुतिः उदयलाल प्रजापत

कानूनी प्रावधान

भारत में 18 साल से कम उम्र के बच्चों के साथ यौन अपराधों की रोकथाम के लिए पॉक्सो एक्ट लागू किया गया है। यह किशोरियों के साथ ही किशोरों के लिए भी प्रभावी है। बच्चे को गलत तरीके से छूना, पोर्नाग्राफी दिखाना, अश्लील बातें करना, नग्न होने के लिए मजबूर करना, उसके सामने यौन गतिविधि करना आदि इस एक्ट के तहत अपराध हैं। इसके तहत तीन साल से लेकर आजीवन कारावास तक के प्रावधान हैं। ऐसे मामलों के लिए विशेष न्यायालय भी खोले गए हैं। साथ ही आइपीसी व अन्य अधिनियमों के तहत भी मुकदमा दर्ज करवा सकते हैं।

बच्चों को समझाएं

- गुड टच बैड टच की जानकारी दें।
- उन्हें मुखर बनाएं कि अपनी बात आपसे कह पाएं।
- अपरिचित व्यक्ति से बात न करने के लिए समझाएं।
- परिचित भी कोई चीज उन्हें दे तो पहले आपसे पूछें, यह समझाएं।
- डरें नहीं, खुलकर रहें।
- बच्चे खुद से ही अपनी दिनचर्या आपसे साझा करें।

With Best Compliments

SAH POLYMERS LIMITED

(Manufacturer of HDPE/PP Laminated & Unlaminated Woven Fabric, Sacks and F.I.B.C.)

E-260-261, M.I.A., Madri, Udaipur - 313003
Ph. : 0294-2490242, 2493889, TeleFax : 0294-2490534
E-Mail : info@sahpolymers.com, Website : www.sahpolymers.com

डिजाइनर बाथरूम

घर को दे जन्नत सा अहसास

एक समय था जब लोग घर बनाते समय सबसे कम जगह बाथरूम को देते थे, लेकिन अब उसके लिए भी न केवल पर्याप्त स्थान होता है, बल्कि उसे आकर्षक बनाने पर भी ध्यान दिया जाने लगा है।

कल्पना नागदा

अगर नया घर बना रहे हैं तो निर्माण के समय ही अतिरिक्त ध्यान देकर आकर्षक बाथरूम तैयार करा लेना बेहतर रहेगा। डिजाइनर सिंक, टॉयलेट, बाथटब और शॉवर स्टॉल के अलवा कस्टम टाइल के जरिए बाथरूम को आकर्षक रूप देकर इसे घर का खास हिस्सा बनाया जा सकता है।

नया रूप देते समय जिस पहली चीज के बारे में आप सोचते हैं वह है टब या शॉवर। टब या शॉवर का चयन करते हुए आपकी पसंद, बाथरूम को नया रूप देने के आपके प्रोजेक्ट में बहुत मायने रखती है। इनका चयन करते ही प्रोजेक्ट की सफलता का आधा काम हो जाता है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप गहरा टब चाहते हैं या फिर विक्टोरियन स्टाइल टब, जिसमें हाथ में पकड़ने वाला धातु का शॉवर हेड भी हो। इसके अलावा अगर आप कम बजट में सज्जा चाहते हैं तो प्री-मोल्डेड फाइबर ग्लास यूनिट का विकल्प सबसे सस्ता और खूबसूरत साबित हो सकता है। इसमें टब और शॉवर दोनों सम्मिलित होते हैं। बाथरूम को जन्नत बनाने का अगला पड़ाव है टॉयलेट। टॉयलेट के चयन में भी आपको उतनी ही वैरायटी मिल जाती है जितनी कि सिंक या टब के चयन में। ब्रिटिश लुक के लिए पुल चेन फ्लशिंक मैकेनिक बेहतर होगा।

स्पेस बचाने के लिए आजकल कई मॉडलों की विविधता भरी रेंज बाजार में उपलब्ध है। ये मॉडल विविध स्टाइल, डिजाइन व रंगों में उपलब्ध है। आप बाथरूम की दूसरे एक्सेसरीज से मेल खाते किसी भी मॉडल का चयन कर सकते हैं। मौजूदा प्लंबिंग व पाइपलाइन फिटिंग को छेड़े बिना ही यदि आप टब व टॉयलेट को व्यवस्थित कर लें तो बाथरूम को नया रूप देने में काफी समय की बचत की जा सकती है। यह जरूर ध्यान रखें कि आप जिस टब का चयन कर रहे हैं, कहीं वह इतना बड़ा न हो कि उसके लिए बाथरूम की दीवार को आगे बढ़ाना पड़े। इसलिए चीजों की खूबसूरती के साथ कई अन्य पहलुओं पर विचार करना भी बहुत जरूरी होता है। आज बाथ सिंक में भी हजारों स्टाइल उपलब्ध है। इसके विकल्प अब केवल स्टेंडर्ड पोर्सलीन बाउन तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि इन विकल्पों में ग्लास मार्बल ग्रेनाइट ओर सिरेमिक के फ्री स्टेंडिंग बाउल से लेकर मोल्डेड कोरियर व फॉक्स मार्बल के सिंक भी शामिल हैं। यह आपके बजट पर निर्भर करता है कि आप किस तरह के सिंक का चयन करना चाहते हैं। कुछ ठंडी जगहों पर बाथरूम फ्लोरिंग में हीट कॉयल भी लगाई जाती है। ताकि जब भी काई शॉवर से बाहर आए तो ठिठुरती ठंड में भी गर्माहट मिलती रहे। बाथरूम की लाइटिंग बहुत फंक्शनल होने के साथ खूबसूरत और मूड बनाने वाली होनी चाहिए। मेकअप या शेविंग करते वक्त आपको ज्यादा रोशनी की जरूरत होगी जबकि तनावमुक्त होने या थकान उतारने के लिए जब भी आप टब के ठंडे या गुनगुने पानी में उतरेंगे, तो उस समय आप मद्धिम रोशनी चाहेंगे। सिंक, टव, शॉवर, केबिनेट आदि बाथरूम के लिए आभूषणों का काम करते हैं। इसलिए इनका चयन बहुत ध्यान से किया जाना चाहिए। चाहे आप पारम्परिक पॉलिश्ड क्रोम का चयन करें या ब्रश्ड निकल के लिए नए स्टाइल का या फिर एंटीक ब्रोंज का। ये छोटी-छोटी एक्सेसरीज बाथरूम की सज्जा को फिनिशिंग टच देगी।

रत्नों की दुनिया में तराशें कॅरियर

भारत में हमेशा से ही आभूषणों की निराली ही शान रही है। बाजार पर मजबूत पकड़ बनाने के साथ-साथ यह क्षेत्र धीरे-धीरे एक सशक्त व सफल कॅरियर का भी रूप ले चुका है।

संजीव कुमार सिंह

एक समय ऐसा था, जब रत्नों की दुनिया परंपरागत जौहरियों के हाथों में थी। लेकिन अब यह क्षेत्र उद्योग के तौर पर पहले से कहीं अधिक संगठित और विकसित हो चुका है। जेम एवं ज्वेलरी के बाकायदा प्रशिक्षण कोर्स बनाए गए हैं। इस पूरे क्षेत्र को जेमोलॉजी तथा इससे संबंधित एक्सपार्ट को जेमोलॉजिस्ट कहा जाता है।

क्या है जेमोलॉजी

यह एक ऐसी विधा है, जिसमें रत्नों की पहचान, मूल्यांकन, क्वालिटी, उसके गुण व उनको तराशने का कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त रत्नों की कटिंग, छंटाई, ग्रेडिंग, वैल्यूएशन, डिजाइन मेथोडोलॉजी, मेटल कांन्सेप्ट कम्प्यूटर एडेड डिजाइन, मेटाल्यूर्जिकल प्रोसेस व ऑर्नामेंट डिजाइन के बारे में बताया जाता है। इसमें कीमती धातुओं व मिश्र धातुओं की एप्रेजिंग भी की जाती है। इसी आधार पर रत्नों की शब्दावली व उनके फिजिकल व ऑप्टिकल गुणों के हिसाब से उनका श्रेणीकरण करना होता है। इसके अलावा इसमें ज्वेलरी डिजाइन, कंसल्टेंसी एवं बिक्री संबंधी कार्य भी संपन्न किए जाते हैं।

रोजगार की स्थिति

देश की जेम एंड ज्वेलरी इंडस्ट्री सालाना करीब 15-16 फीसदी की दर से ग्रोथ कर ही है। जिससे करीब 80 लाख से अधिक लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिल रहा है। आज भारत हीरे-जवाहरात एवं अन्य रत्नों का 50 फीसदी के करीब स्वयं निर्यात कर रहा है। विश्व में भारत हीरा कटाई तथा पॉलिश के कार्य में सबसे बड़ा केंद्र है। संख्या की दृष्टि से विश्व के कुल हीरों में से 93 फीसदी भारत में तराशे जाते हैं। यानी कि 10 में से 9 हीरों के तराशने का काम हमारे यहां होता है। कॉमन फेसिलिटी सेंटर की स्थापना से इस इंडस्ट्री को काफी मजबूती मिल रही है।

इस रोजगार के विकल्प

♦ ज्वेलरी डिजाइनर ♦ प्रोडक्ट डेवलपमेंट ऑफिसर ♦ मर्केंडाइजर ♦ सेल्स एंड मार्केटिंग प्रोफेशनल्स ♦ कंसल्टेंट ♦ कैड डिजाइनर ♦ रिसर्चर

कब कर सकेंगे कोर्स

जेमोलॉजी के जो भी शुरुआती कोर्स हैं, उनमें प्रवेश लेने के लिए छात्रों को बारहवीं की परीक्षा किसी भी स्ट्रीम में पास होना जरूरी है। मास्टर लेवल के जेमोलॉजी के कोर्स के लिए ग्रेजुएट होना जरूरी हे। इसमें ज्यादा कोर्स शॉर्ट टर्म हैं। इसके अलावा डिप्लोमा, सर्टिफिकेट, वोकेशनल कोर्स भी मौजूद हैं।

कुछ कोर्स

♦ बैचलर इन फाइन आर्ट ♦ मास्टर इन फाइन आर्ट ♦ डिप्लोमा इन एक्सेसरीज डिजाइन ♦ डिप्लोमा इन डायमंड पॉलिशिंग ♦ डिप्लोमा इन जेम कार्विंग ♦ डिप्लोमा इन स्टोन सेटिंग/जेम आइडेंटिफिकेश ♦ सर्टिफिकेट कोर्स इन जेमोलॉजी

रचनात्मक होना जरूरी

इस क्षेत्र में सफल होने के लिए प्रोफेशनल्स को सबसे पहले अपने अंदर सौंदर्यबोध, रंगों का संयोजन, डिजाइन एवं क्वालिटी को लेकर क्रिएटिव बनना होगा। सटीक आकलन, हाथ एवं आंखों के कुशल को-ऑडिनेशन तथा दिमाग को केन्द्रित करके किसी भी रत्न के बारे में सही जानकारी एवं उसको तराशने का काम तभी संभव हो पाएगा, जब खुद के अंदर उस तरह का गुण विकसित किया जाए। इसके अलावा बाजार की अच्छी समझ जरूरी है।

प्रचुर संभावनाएं

यह हमेशा चमकने वाला क्षेत्र है। यही कारण है कि जेमोलॉजी के क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएं हैं। ज्वेलरी प्रोडक्शन हाउस, फैशन हाउस तथा ज्वेलर कारखानों, शो रूम में जेमोलॉजिस्ट की डिमांड जयादा है।

कम्प्यूटर से आसानी

इस क्षेत्र में अब अधिकांश काम कम्प्यूटर की बदौलत हो रहे हैं। कम्प्यूटर एडेड डिजाइन (कैड) सॉफ्टवेयर का प्रयोग मैन्यूफेक्चरिंग फर्मस् में प्रोडक्ट डिजाइन बनाने में किया जाता है। ज्यादातार मैन्युफेक्चरिंग कंपनियां कैड का प्रयोग ज्वेलरी के टुकडे का वर्चुअल रियलिटी मॉडल तैयार करने में, डिजाइन बनाने, पत्थरों को बदलने तथा अन्य महंगे कार्यों में करती हैं। यह पूरी प्रक्रिया कम्पयूटर एडेड मैन्युफैक्चरिंग (कैम) कहलाती हैं।

संभावित वेतन

ट्रेनी के तौर पर काम शुरू करने वाले जेमोलॉजिस्ट को 20-25 हजार रुपए प्रतिमाह मिलते हैं। अनुभव के साथ यह सैलरी बढ़कर 40-50 हजार रुपए प्रतिमाह हो जाती है।

क्यों होता है घुटनों में दर्द

घुटने का जोड़ शरीर का एक प्रमुख जोड़ है, जिसके सहारे हमारा चलना-फिरना, उठना-बैठना यहां तक कि जरा-सा भी हिलना, सभी कुछ इसी जोड़ द्वारा होता है। व्यक्ति आराम पसंद हो गया है, शारीरिक श्रम के अभाव में आज जोड़ों में कड़ापन आ जाता है। कैल्शियम की कमी के कारण भी हड्डियां घिसने लगती हैं और उनमें दर्द आरंभ हो जाता है, इससे रोग की संभावना बढ़ जाती है।

मोटापा भी घुटनों के दर्द का कारण हो सकता है। अधिक वजन होने पर घुटनों के जोड़ प्रभावित होते हैं। इससे घुटनों पर अधिक भार पड़ने के कारण घुटनों के जोड़ आपस में टकराते हैं, इससे दर्द बढ़ जाता है। महिलाओं में मासिक धर्म की समाप्ति के बाद हारमोंस के असंतुलन के कारण भी घुटनों में दर्द होता है। जब यह एक प्रकार के गठिया का रूप ले लेता है, तब घुटने का जोड़ बदलवाना पड़ता है। ऐसे भी रोगी होते हैं, जो जल्दी ही जोड़ बदलवाने के स्थान पर प्राकृतिक उपचार, संधि संचालन की क्रियाओं एवं योगासन का सहारा लेकर अपने घुटनों को और अधिक खराब होने से बचा लेते हैं, प्रस्तुत है घुटने के दर्द का प्राकृतिक उपचार।

✪ घुटनों के दर्द में तिल्ली का तेल गर्म करके घुटने के आसपास हल्की मालिश करें। इस तेल को गर्म करते समय इसमें तीन-चार लौंग और आधा चम्मच अजवायन डाल लें।

✪ घुटनों पर गर्म मिट्टी का सेक करें। रातभर भीगी हुई मिट्टी को सुबह किसी बर्तन में गर्म करके कपड़े में बांधकर घुटनों की सिकाई करें।

✪ घुटनों पर सूजन एवं दर्द रहने पर घुटनों का गर्म-ठंडा सेंक करें। गर्म से शुरू करके ठंडे पर समाप्त करें।

✪ कच्चे आलू के रस से घुटनों पर लेप करने से जोड़ पर सूजन बहुत जल्दी उतर जाती है और आराम मिलता है।

✪ ऑस्टियो आर्थराइटिस में आयुर्वेदिक पुल्टिस भी लाभकारी है। इसमें हल्दी, गुड़ एवं दानामैथी को कम तेल में गर्म करके कपड़े पर बिछाकर घुटनों पर रख दें। कम से कम आधा घंटा अवश्य रखें।

✪ राई की पुल्टिस भी घुटनों के दर्द में आराम देती है। राई को पीसकर घुटनों पर बांध दें। इसे बीस मिनट तक रखें।

✪ पुराने गोमूत्र से मालिश करें।

घुटनों का जोड़ जांघ की हड्डी के निचले हिस्से टिबिया हड्डी के ऊपर सिरे व पटेला के सहयोग से बनता है। स्वस्थ घुटनों के बीच में कार्टिलेज होते हैं, जो गद्दी जैसी संरचना बनाकर घुटनों के जोड़ को सहारा देते हैं। अच्छे एवं ठीक जोड़ के बीच सायनोवियल नाम की कोशिकाएं भी होती है, जो एक प्रकार का स्राव करती है, जिसे साइनोवियल तरल कहते हैं। यही रासायनिक स्राव घुटनों के जोड़ में लचीलापन बनाए रखता है। घुटनों के आसपास दर्द का कड़ापन आने पर उसकी सुरक्षा भी यही करता है। यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है। इस रोग का कारण हड्डियों का क्षरण और आसपास के तंतुओं में सूजन है। इसे आस्टियो आर्थराइटिस या गठिया कहा जाता है। आज विश्वभर में यह बीमारी महिलाओं एवं पुरुषों में तेजी से फैल रही है। घुटनों में दर्द का प्रमुख कारण है शारीरिक श्रम का अभाव।

योगासन एवं प्राणायाम

घुटनों के दर्द से पीड़ित रोगियों के लिए योगिक क्रियाएं, योगासन रामबाण सिद्ध होते हैं। संधि संचालन के नियमित अभ्यास से जोड़ के आसपास लचीलापन बना रहता है। बहुत से रोगी चलना कम कर देते हैं, जिससे उन्हें आराम तो मिलता है, लेकिन जोड़ों के बीच लचीलापन समाप्त होना शुरू हो जाता है, जिससे जोड़ रख्त हो जाते हैं। इसके लिए कुछ आवश्यक संधि संचालन क्रियाएं करें–

नीचे जमीन पर अथवा ऊपर तख्त पर सामने की और पैर फैलाकर बैठे, हाथों को कमर के पास जमीन पर खते हुए कमर, पीठ एवं गर्दन को सीधा रखें।

इसके बाद आंतरिक दबाव द्वारा घुटनों के जोड़ को ऊपर की ओर खींचने का प्रयास करें। इससे जांघ की हड्डी एवं टिबिया के पास स्थित नाड़ियां सकुचित होती है और फैलती है। इससे रक्तसंचार नियमित होता है और पैरों में नई ऊर्जा का संचान होता है, पैरों एवं घुटनों में हल्कापन आता है।

सीधे खड़े होकर एक पैर को आगे की ओर ले जाएं और पैर से भी करें। इसका अभ्यास 20–20 बार सुबह शाम करें।

सीधे खड़े रहकर हाथों की मुट्ठी बांधकर सामने की ओर रखें, कमर से नीचे का भाग थोड़ा झुकाएं, धड़ को सीधा काल्पनिक कुर्सी बनाकर बैठें।

घुटनों के दर्द में आहार

✪ खाली पेट रातभर भीगी हुई दानामैथी का गुनगुना पानी लहसुन की दो कलियों के साथ पीएं। एक घंटे बाद 20 किशमिश व 2 अंजीर रात्रि को भीगी हुई लें।

✪ घुटनों के दर्द में नाश्ते में लगभग 60 ग्राम अंकुरित मैथी खूब चबाकर खानी चाहिए।

✪ दोपहर में भोजन में अंकुरित अन्न, उबली हुई खूब सारी सब्जी लगभग 40–60 ग्राम, हल्दी, दो चोकरयुक्त चपाती होनी चाहिए।

✪ दोपहर भोजन के चार घंटे बाद 200–300 ग्राम पपीता कुछ दिन नियमित लेना चाहिए। हल्की सब्जियां लें। टमाटर, फूलगोभी, मूली, मटर, अमचूर या खटाई, अचार, तेज मिर्च मसाले, कोल्डड्रिंक, शराब, धूम्रपान, पान–मसाला, बेसन, मैदायुक्त भोजन त्यागें।

डॉ. शोभालाल औदिच्य

with best compliments

Darcl
Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :

2nd Floor, 26-NB Complex, Ahmedabad Road, Pratap Nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)

Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142

Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

पर्याप्त पानी पीने से जल्दी नहीं आता बुढ़ापा

पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से बुढ़ापा जल्दी नहीं आता और समय से पहले मौत का खतरा भी कम हो जाता है। यदि उचित मात्रा में पानी पीते रहें तो पुरानी बीमारियों के फिर से उभरने का जोखिम भी कम हो जाता है।

अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ की ओर से किए गए व विज्ञान पत्रिका ईबायोमेडिसिन में प्रकाशित शोध में यह दावा किया गया है। प्रमुख शोधार्थी नतालिया दिमित्रिवा के अनुसार पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से जीवन रोग मुक्त होता है। इससे शरीर स्वस्थ रहता है,जिससे बुढ़ापा देर से आता है। बिना बीमारी के लंबा जीवन जीया जा सकता है। तापमान के नियंत्रण और त्वचा के लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

सोडियम बढ़ा तो 15 साल जीवन कम: चूहों पर पूर्व में किए जा चुके एक शोध के नतीजों के आधार पर शोधार्थियों ने पाया कि कम मात्रा में पानी पीने से बुढ़ापा आने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। इस अध्ययन में चूहों को जीवनभर कम पानी दिया गया था। इससे चूहों में पांच मिलीमोल प्रति लीटर सोडियम बढ़ गया और इससे उनका जीवनकाल छह महीने कम हो गया। अब ताजा अध्ययन के निष्कर्ष कहते हैं कि चूहों की तुलना में मनुष्य का जीवन इससे 15 साल तक कम हो सकता है। बता दें कि सोडियम को रक्त के जरिये मापा जा सकता है। कम पानी पीने से यह शरीर में बढ़ जाता है। शरीर में तरल का संतुलन बनाए रखने के लिए यह जरूरी होता है।

36 साल तक अध्ययन: रिपोर्ट के अनुसार यह अध्ययन 11,255 लोगों पर किया गया। 1987 से इन लोगों के पानी पीने की आदतों के आंकड़े जुटाए जा रहे थे। शोध में हिस्सा लेने वाले ये लोग तब 40 से 50 की उम्र के थे। अब औसत आयु 76 वर्ष हो चुकी है। **(वाशिंगटन-एजेंसी)**

कब करें सेवन

- सुबह उठकर
- भोजन से कुछ देर पहले
- कसरत से कुछ देर पहले और कुछ देर बाद
- थकान और कमजोरी महसूस करने पर

3.7 लीटर पानी पीना रोजाना जरूरी पुरुषों के लिए

2.7 लीटर पानी पीना रोजाना जरूरी महिलाओं के लिए

20 फीसदी पानी की कमी पूरा करते हैं फल व पेय पदार्थ

जल की कमी से यह होता है असर

- त्वचा का सूखना
- पेशाब संबंधी समस्याएं
- मुंह से दुर्गंध
- सिरदर्द, आलस
- खून का गाढ़ा होना, जिससे दिल पर असर

स्वास्थ्य लाभ के लिए जरूरी

- शरीर की प्रत्येक कोशिका, ऊतक और अंग को ठीक से काम करने के लिए पानी की जरूरत।
- पेशाब, पसीने और मल त्याग के जरिये हानिकारक तत्वों से छुटकारा दिलाता है।
- शरीर के तापमान को सामान्य रखता है।
- हड्डी के जोड़ों में लचीलापन

गजल

मैं भी सोचूं तू भी सोच

तेरा–मेरा शीशे का घर मैं भी सोचूँ तू भी सोच
दोनों के हैं हाथ में पत्थर मैं भी सोचूँ तू भी सोच।

हैं जितने ये इबादतख़ाने अपने देश की अज़मत हैं
मन्दिर–मस्जिद और गिरजाघर मैं भी सोचूँ तू भी सोच।

हँसते–बसते बस्ती के घर कभी न अब ये जल पाएं
करें हिफ़ाज़त फ़र्ज़ समझकर मैं भी सोचूँ तू भी सोच।

धर्म–सियासत की दीवारें बाँट न पाएं हम सबको
मिलके रहें सब एक बराबर मैं भी सोचूँ तू भी सोच।

अपनी मिट्टी, अपना गुलशन अपनी नदियाँ अपने खेत
रिज़्क मिले सबको दामन भर मैं भी सोचूँ तू भी सोच।

– डॉ. गिरिजा व्यास

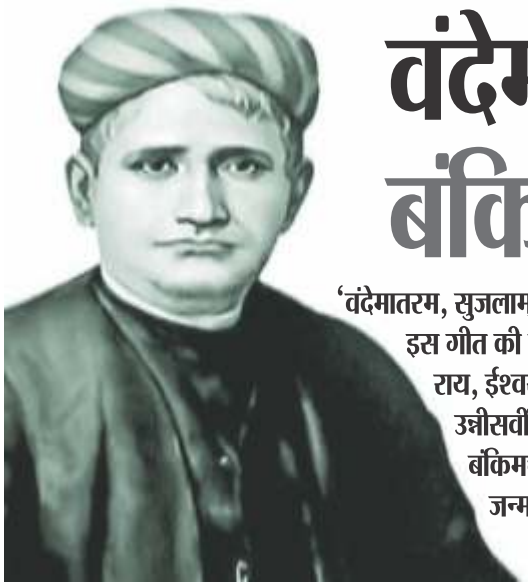

वंदेमातरम् के रचनाकार बंकिमचन्द्र चटर्जी

'वंदेमातरम, सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्यश्यामलाम् मातरम्।' यानी भारत का राष्ट्रगीत। इस गीत की रचना प्रख्यात बांग्ला रचनाकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने की थी। राजा राजमोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, मधुसूदन दत्त, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्रनाथ ठाकुर आदि उन्नीसवीं सदी के प्रमुख साहित्यकार थे, जिन्होंने बांग्ला साहित्य को पहचान दिलाई। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय पहले साहित्यकार थे, जिन्होंने लोगों के मन को छुआ। उनका जन्म कलकत्ता के निकट कंथलपाड़ा के एक गांव में 27 जून 1838 को हुआ था।

अभिजय शर्मा

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के पिता यादवचंद्र चट्टोपाध्याय बंगाल के मिदनापुर जिले के डिप्टी कलेक्टर थे। इसलिए उनकी प्रारंभिक शिक्षा वहीं हुई। उसके बाद की शिक्षा हुगली कॉलेज और प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता में हुई। 1858 में उन्होंने स्नातक किया और 1869 में कानून की डिग्री हासिल की। वे इतने प्रतिभाशाली थे कि बीए के बाद डिप्टी मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त हो गए। कुछ समय तक बंगाल सरकार के सचिव पद पर भी रहे। रायबहादुर और सीआइई की उपाधियां भी पाईं। बंकिमचंद्र में ब्रिटिश शासन की क्रूरता को खत्म करने का जुनून था। उन्होंने सरकारी नौकरी में रहते हुए 1857 का गदर देखा था, जिसमें शासन प्रणाली में बदलाव किए गए थे। शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से महारानी विक्टोरिया के हाथों में आ गया था। बंकिम सरकारी नौकरी की वजह से किसी सार्वजनिक आंदोलन में भाग नहीं ले सकते थे। लेकिन उनके अंदर गुस्सा उबल रहा था। वे देश को जागरूक करना चाहते थे और उन्होंने यह जागरूकता साहित्य द्वारा लाने की कोशिश की। उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'रायमोहन्स वाईफ' अंग्रेजी में लिखा था। उसके बाद उन्होंने 1865 में 'दुर्गेश नंदिनी' नाम से पहला बंगाली उपन्यास लिखा। फिर उन्होंने 'कपालकुंडला', 'मृणालिनी', 'विषवृक्ष', 'चंद्रशेखर', 'कृष्ण कांतेर विल','देवी चौधुरानी', 'सीताराम','कमला कांतेर दफ्तर','विज्ञान रहस्य', 'लोकरहस्य', 'धर्मतत्व' जैसे ग्रंथ लिखे। आनंदमठ उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसमें वंदे मातरम् गीत भी है जो अब देश का राष्ट्रगीत है। इन ग्रंथों में उन्होंने वैचारिक स्तर पर नए प्रयोग किए। वह अंग्रेजों से आजादी का दौर था।

आजादी के लिए देश में राष्ट्रवाद की भावना को उभारा जा रहा था। बंकिमचंद्र ने अपने साहित्य से राष्ट्रवादी विचारों का अलख जगाया। इसके लिए उन्होंने 1872 में 'बंगदर्शन 'पत्रिका शुरू की। इससे उन्हें बड़ी लोकप्रियता मिली। इस पत्रिका की वजह से नए लेखकों को भी मौका मिला। बंकिमचंद्र ने जो भी लिखा उसका प्रभाव केवल आजादी तक नहीं, बल्कि उसके बाद भी रहा। 'बंकिम बांग्ला लेखकों के गुरू और बांग्ला पाठकों के मित्र हैं।' यह बात रवींद्रनाथ ठाकुर प्राय: कहा करते थे। बंकिम ने मात्र सत्ताईस साल की उम्र में 'दुर्गेश नंदिनी' नाम का उपन्यास लिखा था। इससे साहित्य में उनकी धाक जम गई। उन्होंने जब साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया, तब कहानी और कविताएं कम ही लिखी जाती थीं। इसलिए उन्होंने इसी विधा को पकड़ा और कुछ समय बाद इस दिशा के पथप्रदर्शक बन गए। बंकिम बाबू का निधन 8 अप्रेल 1894 को हुआ। उनके साहित्यिक पत्र 'बंगदर्शन' की लोकप्रियता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि रवींद्रनाथ ठाकुर इसी में लिखकर साहित्य के क्षेत्र में आए थे। रवींद्रनाथ बंकिम को अपना गुरू मानते थे।

अद्भुत

अफ्रीका में दिखी सफेद डॉल्फिन

अफ्रीका महाद्वीप में पहली बार दुर्लभ सफेद डॉल्फिन को देखा गया है। यह दक्षिण अफ्रीका के पूर्वी केप प्रांत में मरीन वाइल्डलाइफ हॉटस्पॉट पर दो सौ डाल्फिन के झुंड के बीच तैर रही थी। यहां नाव के कप्तान लॉयड एडवर्ड्स ने उसे पहली बार देखा। उन्होंने बताया कि यह डाल्फिन का एक बच्चा था। उन्होंने सोशल मीडिया पर इसकी तस्वीर साझा की है। एरिक होयट ने बताया कि इसका सफेद रंग ऐल्बिनिजम के कारण होता है। यह एक आनुवांशिक बीमारी है। जिसकी

वजह से जानवरों में मेलेनिन पिग्मेंट का उत्पादन नहीं होता। यही पिग्मेंट त्वचा, फर, पंख और आँखों को रंग प्रदान करता है। ब्रिटेन में व्हेल और डॉल्फिन संरक्षण के रिसर्च फेलो एरिक होयट का कहना है कि इनका अलग दिखना ही इनके लिए खतरनाक बनता जा रहा है। वे शिकारियों को अलग से दिखाई दे जाती हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि डाल्फिन का यह बच्चा लगभग एक महीने का है और करीब 3.3 फीट लंबा है। इसका ठोस सफेद रंग साफ बताता है कि यह दुर्लभ अल्बिनों प्रजाति की है। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि डॉल्फिन की आंखे बंद हों, क्योंकि उनकी आंखें प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती हैं।

आम से बने बेहद खास व्यंजन

गर्मियां आने पर सभी को विभिन्न किस्मों के आम का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। आम से अमूमन मीठे व्यंजन या आम रस बनाया जाता है। बाज़ार में आम की बहार है। अपने मनपसंद आम घर लाइये और कुछ ऐसे व्यंजन बनाइये जो बच्चों के साथ घर के बड़ों को भी पसन्द आएं। इस बार हम आपके लिए आम से बने कई खट्टे- मीठे व्यंजन लेकर आए हैं, जिन्हें आप कम समय में आसानी से बना सकती हैं।

आम पर काम की बातें

मैंगो शेक गाढ़ा बनाने के लिए आम के टुकड़े 20 मिनट तक फ्रीजर में रखें और बर्फ न डालें। जूस बनाने के लिए रेशे वाले आम का ही इस्तेमाल करें। लस्सी बनाते समय स्वाद बढ़ाने के लिए गुलाबजल डालें। **आमरस** बनाते समय इलायची पाउडर, सौंठ और कैसर (पीसते समय ही डालें) से स्वाद दोगुना हो जाता है। साथ ही दूध का अधिक इस्तेमाल न करें। इससे असल स्वाद कम हो जाता है।

मैंगो राइस

क्या चाहिए: पके चावल– 2 बड़ी कटोरी, मक्खन– 2 बड़े चम्मच, 1 हापुस आम का पल्प, 1हापुस आम के छोटे–छोटे टुकड़े, पिसी शक्कर– स्वादानुसार, बंधा हुआ दही– 1/2 छोटी कटोरी, घी में तले पिस्ते– इच्छानुसार, इलायची दाने का पाउडर– 1/2 छोटा चम्मच, जलजीरा– 1/2 छोटा चम्मच, बादाम का शरबत– 1 छोटा चम्मच।

ऐसे बनाएं: बोल में दही, आम का पल्प, जलजीरा व शक्कर मिला लें। मिश्रण में चावल, मक्खन, पिस्ते, बादाम शरबत, इलायची पाउडर मिला लें। मैंगो राइस को इलायची पाउडर, पिस्ते, आम के टुकड़ों से गार्निश कर फिज में ठंडा करके परोसें।

मैंगो बर्फी

क्या चाहिए: दो हापुस आम का पल्प, शक्कर– स्वादानुसार, इलायची दाने का पाउडर– 1/2 छोटा चम्मच, घी– 75 ग्राम, मैदा– 200 ग्राम, बेसन– 1 बड़ा चम्मच, केसर– 7–8 रेशे (दूध में भीगे हुए), तले हुए बादाम के टुकड़े– 1 बड़ा चम्मच, फीका मावा – 2 बड़े चम्मच, चांदी का वर्क– इच्छानुसार।

ऐसे बनाएं: कड़ाही में घी गर्म कर मैदा और बेसन को सुनहरा भून लें। शक्कर की चाशनी बना लें। आम का पल्प और मावा अलग सेक लें। इसमें चाशनी, केसर, इलायची का पाउडर, बादाम के टुकड़े डालकर और पका लें। थाली में घी लगाकर मिश्रण फैलाकर एक घंटे के लिए रख लें। बर्फी काटकर केसर, बादाम, इलायची पाउडर से सजाकर खिलाएं।

मैंगो अफज़ा

क्या चाहिए: पल्प– 1 कैरी का, पल्प– 1½ हापुस आम का, हरे धनिए की चटनी – 1 छोटा चम्मच, जलजीरा– 1 छोटा चम्मच, चाट मसाला– 1/2 छोटा चम्मच, पुदीना पत्तियां– 6–7, नमक– स्वादानुसार, शक्कर, बीकानेरी भुजिया और आइस क्यूब्स, आवश्यकतानुसार।

ऐसे बनाएं: कैरी के पल्प में हापुस आम का पल्प, शक्कर, नमक, जलजीरा, हरे धनिए की चटनी, चाट मसाला और थोड़ा सा पानी डालकर मिक्सी में चला लें। फिज में ठंडा होने रख दें। ठंडा होने पर खट्टे–मीठे मैंगो अफजा को बीकानेरी भुजिया (या बूंदी) जलजीरा, पुदीना की पत्तियां व आइस क्यूब्स डालकर ठंडा–ठंडा पिलाएं।

मैंगो रोल

क्या चाहिए: हापुस आम– 2, कद्दूकस किया पनीर– 30 ग्राम, पिसी शक्कर– स्वादानुसार, हरी इलायची दाने का पाउडर– 1/4 छोटा चम्मच, दूध में भीगा केसर– 7–8 रेशे, बादाम– पिस्ते– 2 बड़े चम्मच (घी में तले और कद्दूकस किए हुए), क्रीम– 1 बड़ा चम्मच, टूथपिक– 12–15, हापुस आम का पल्प– 3 बड़े चम्मच।

ऐसे बनाएं: आम को छीलकर उसके पतले और लम्बे स्लाइस काट लें। एक बोल में बादाम, पिस्ते का बूरा, शक्कर, केसर, इलायची पाउडर, क्रीम डालकर अच्छी तरह मिला लें। आम के स्लाइस के बीच में चम्मच से मिश्रण डालकर गोल आकार में लपेट लें। रोल को टूथपिक लगाकर रखें। फ्रिज में ठंडा होने के लिए रखें। मैंगो रोल पर केसर, इलायची पाउडर, क्रीम, पनीर व आम पल्प से गार्निश करके सर्व करें।

– कमला गौड़

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का उत्तरार्द्ध पराक्रम में वृद्धि करेगा। व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, कार्य व्यवहार में प्रगति होगी। निजी वस्तुओं से विशेष लाभ, मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा होगी। संबंधियों से लाभ, चोरी एवं अग्नि द्वारा हानि की संभावना, मित्रों से विवाद रहेगा।

वृषभ

व्यवसाय में उन्नति, धन लाभ, आशा से अधिक सफलता मिलेगी, शत्रु पराजित होंगे। धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी। संतान पक्ष से संतुष्टि, मान–सम्मान प्राप्त होगा। माह के पूर्वार्द्ध में अति आत्मविश्वास में नुकसान संभव। सर्तक रहें।

मिथुन

व्यवसाय में आय कम, व्यय अधिक रहेगा। वित्त संबंधित समस्याओं से जूझना पड़ेगा। विदेश जाने के योग बनेंगे, भौतिक सुखों में कमी का अनुभव करेंगे। शत्रु पक्ष कष्ट पहुंचा सकता है। माता–पिता एवं मित्रजनों से विवाद संभव, पारिवारिक अशांति रहेगी।

कर्क

व्यापारिक कार्यों से धन लाभ, राजकीय एवं शासकीय कार्यों में लाभ एवं मान–सम्मान की प्राप्ति। मनोकामना पूर्ण होगी, स्त्री एवं संतान पक्ष से सुख मिलेगा। धर्म के कार्यों में रूचि बढ़ेगी, यात्राएं करनी पड़ सकती है, लाभ भी मिलेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सिंह

कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। कृषि कार्यों से लाभ मिल सकेगा। मान–सम्मान में भी वृद्धि होगी। मनोकामना पूर्ण होगी, सुख–समृद्धि में अधिकता व वाद–विवाद में विजय प्राप्त होगी। धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी। शत्रु पक्ष पराजित होगा।

कन्या

माह का उत्तरार्द्ध सुकून भरा रहेगा। कर्म क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन लाभ होगा, परंतु खर्च पर नियंत्रण आवश्यक है, राजकीय एवं न्यायिक मामले पक्ष में रहेंगे। मान–सम्मान में वृद्धि होगी। पारिवारिक सुख पर्याप्त रहेगा। भाईयों से मतभेद एवं विवाद संभव। शारीरिक कष्ट की संभावना।

तुला

कारोबार मध्यम एवं आय–व्यय भी सम रहेगा। कार्य क्षेत्र में कुछ नया करने की ललक उन्नति की ओर ले जाएगी, पदोन्नति के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। धार्मिक कार्यो में खर्च होगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कम दूरी की यात्राएं लाभप्रद रहेंगी।

इस माह के पर्व/त्योहार

1 जून	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी	सुपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
2 जून	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी	त्रिदिवसीय वट सावित्री व्रत
4 जून	ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा	कबीर जयंती
5 जून	आषाढ़ कृष्णा प्रथमा/द्वितीया	गुरु हरगोविंद जयंती/ विश्व पर्यावरण दिवस
20 जून	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया	श्री जगदीश रथयात्रा
21 जून	आषाढ़ शुक्ल तृतीया	विश्व योग दिवस
23 जून	आषाढ़ शुक्ल पंचमी	श्री द्वारिकाधीश पाटोत्सव
27 जून	आषाढ़ शुक्ल नवमी	भड़ली नवमी
29 जून	आषाढ़ शुक्ल एकादशी	देवशयनी एकादशी/ इदुलजुहा

वृश्चिक

माह का पूर्वार्द्ध सामान्य, उत्तरार्द्ध में विभिन्न बाधाएं, परंतु भाग्य साथ देगा। धार्मिक कार्यों में रूचि तथा खर्च बढ़ेगा। पुराने मित्रों से मेल–मिलाप, शत्रु पक्ष की पराजय होगी। राजकीय एवं शासकीय भय बना रहेगा। सहभागिता से कार्य क्षेत्र में कुछ नयापन ला सकते हैं।

धनु

माह का उत्तरार्द्ध सुकून भरा, व्यापार मध्यम रहेगा। आय–व्यय सामान्य। धन संबंधी चिंता रहेगी। दाम्पत्य जीवन रसमय बने तथा सुख समृद्धि की अधिकता रहे। लम्बी दूरी की यात्राएं टालने में ही शुभता, पारिवारिक समृद्धि रहे।

मकर

कार्यक्षेत्र व व्यापार में उन्नति, लाभ अधिक एवं खर्च कम रहेगा। स्थाई संपत्ति में वृद्धि एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। पुराने मित्रों से मेल मिलाप। माता–पिता वाद–विवाद संभव, स्वयं पर नियंत्रण रखें।

कुम्भ

व्यापार में उन्नति एवं धन लाभ, परंतु खर्च भी अधिक होगा। मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। मान सम्मान, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि। परिवार में हर्ष का कोई विषय आपको आनंदित करेगा। स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखें। राज्य कार्य में सफलता मिलेगी।

मीन

कारोबार में उन्नति एवं धन सम्पदा की वृद्धि होगी, शत्रुओं को निराशा हाथ लगेगी। मनोकामनाएं पूर्ण होगी। मित्रों एवं परिवारजनों के सहयोग से प्रसन्नता मिलेगी। सुखद समाचार प्राप्त होंगे। विशेषकर संतान पक्ष एवं परिवार के अन्य सदस्यों से समन्वय बिठाकर चलें।

प्रत्यूष समाचार

'यूं ही बस चुप रहो' का विमोचन

उदयपुर। जीवन वही नहीं होता, जो दिखाई देता है अपितु जीवन भीतर जागने का संस्कार भी है और कविता उसी का स्वरूप है। यह बात कस्तूर बा मातृ मंदिर सभागार में डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव' के काव्य संकलन 'यूं ही बस चुप रहो' का विमोचन करते हुए बिहारी पुरस्कार विजेता प्रो. माधव हाड़ा ने कही। उन्होंने कहा कि भाटी की कविताओं का कैनवस जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव और आसपास का जनजीवन और उसकी संवेदनाए हैं। समारोह अध्यक्ष राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव डॉ. लक्ष्मी नारायण नंदवाना ने कहा कि कवि की भावुकता और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है यह काव्य संग्रह। प्रत्यूष सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने कहा कि सृजन में अपने अनुभवों के साथ ही तत्कालिक परिस्थितियों की बड़ी भूमिका होती है, भाटी की कविताएं इसका प्रमाण हैं। राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष गोविंद माथुर ने कहा कि कवि अन्तर्मुखी ज़रूर होता है लेकिन जब बोलता है तो समाज उसे ध्यान से सुनता भी है। डॉ. भाटी ने संकलन की कुछ कविताओं का पाठ किया। डॉ. मनीष जैन ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर डॉ. एल.एल. वर्मा, हरीश आर्य, प्रेमलता नागदा भी उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अंजना गुर्जरगौड़ ने किया।

हिंजिलि को इंडिया रिस्क मैनेजमेंट अवार्ड

उदयपुर। भारत के एकमात्र और विश्व के दूसरे सबसे बड़े एकीकृत जस्ता उत्पादक हिन्दुस्तान जिंक को मुंबई में सम्पन्न एक समारोह में इंडिया रिस्क मैजेनमेंट अवार्डस के 9वें संस्करण में मास्टर्स ऑफ रिस्क ज्यूरी अवार्ड इन मेटल्स एंड माइनिंग एंड ईएसजी स्पेशलाइजेशन से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार हिन्दुस्तान जिंक के सीएफओ संदीप मोदी एवं चीफ ऑफ इंटरनल ऑडिट एंड रिस्क मैनेजमेंट रहित सारदा को नाबीएफ आईडी के अध्यक्ष के.वी. कामथ ने प्रदान किया। इस उपलब्धि पर हिंदुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने कहा कि रिस्क मैनेजमेंट और मिटीगेशन हिंदुस्तान जिंक के संचालन का एक महत्वपूर्ण पहलू है जो अत्यधिक पारदर्शी प्रणाली पर आधारित है।

बड़ाला को प्रथम चेम्बर गौरव सम्मान

उदयपुर। चेम्बर ऑफ कॉमर्स के शपथ ग्रहण समारोह में सीए राहुल बड़ाला को प्रथम चेम्बर गौरव सम्मान से नवाजा गया। समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल, असम गुलाब चन्द कटारिया थे। अध्यक्षता निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने की व विशिष्ट अतिथि उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, नगर निगम उदयपुर महापौर जी.एस.टांक, उद्योगपति एस.के.खेतान, भीमनदास तलरेजा, विनोद फांदोत थे।

सौ लोगों ने किया रक्तदान

उदयपुर। रक्तदान महादान चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से गांधी ग्राउण्ड में एक ही समय, एक साथ, 100 लोगों ने रक्तदान किया। रविन्द्र पाल सिंह कप्पू ने भी सभी लोगों के साथ 100वीं बार रक्तदान किया। शिविर में कुल 204 लोगों ने रक्तदान किया। जिला कलक्टर ताराचंद मीणा, जगदीश राज श्रीमाली, महापौर जीएस टांक ने शिविर का उद्घाटन किया।

वार्षिक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह

चित्तौड़गढ़। श्री नागोरिया जैन भेरू ट्रस्ट के तत्वावधान में गत दिनों श्री नागोरी जैन, जैनेतर वार्षिक सम्मेलन गांव जोगणी सावा के नागोरिया भैरव देवालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ। श्री नागोरिया भैरव की विशिष्ट पूजा-अर्चना व आरती दिनेश मोदी ने की। सम्मेलन में मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री चन्द्रभान सिंह आक्या थे। ट्रस्ट अध्यक्ष डॉ. ओ.पी. महात्मा ने अध्यक्षता की। ठाकुर नटवर सिंह राव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विष्णु कांत महात्मा, अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन महात्मा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवीण महात्मा, वीरेन्द्र नागोरी, धनश्याम लाल, सुनिल नागोरी, डॉ. गोविन्द सिंह राव, रामेश्वर कुमार, अब्दुल गफ्फार शेख, वरदीचन्द्र, जोरावर सिंह राव, मुकेश नागोरी विशेष अतिथि थे। संचालन पूर्व महामंत्री शान्तिलाल पीतलिया ने किया व धन्यवाद ज्ञापन ठाकुर विजय सिंह राव ने किया।

यशोदा बनी कार्यवाहक अध्यक्ष

उदयपुर। बालकों के प्रकरणों की जांच सुनवाई एवं निपटान हेतु उदयपुर जिले में गठित बाल कल्याण समिति में अध्यक्ष के रिक्त पद का कार्यभार आगामी आदेश तक सदस्य यशोदा पणिया को सौंपा गया है। इस सम्बंध में बाल अधिकारिता विभाग, राजस्थान की आयुक्त पूनम ने 5 मई को आदेश जारी किए।

याज्ञिक को विशेष पुरस्कार

उदयपुर। समाज सेवा एवं प्रकाशन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए विनोद बिहारी याज्ञिक को 'सहस्त्र औदिच्य गौरव पुरस्कार' प्रदान किया गया। समाज प्रवक्ता ने बताया कि यह पुरस्कार स्व. रंजन प्रसाद जानी की स्मृति में प्रदान किया जाता है।

पीएमसीएच में रोबोटिक सर्जरी ट्रेनिंग

उदयपुर। पीएमसीएच में रोबोटिक सर्जरी ट्रेनिंग कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल व उदयपुर सर्जिकल सोसाइटी के साझे में इस चार दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम का उद्घाटन चेयरपर्सन राहुल अग्रवाल, सीईओ शरद कोठारी, पीएमसीएच के प्रिंसिपल व डीन डॉ. एमएम मंगल व सोसायटी के सचिव डॉ. नवीन गोयल ने किया।

यूसीसीआई के नए वेब पोर्टल का शुभारंभ

उदयपुर। उदयपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इण्डस्ट्री द्वारा चैंबर भवन के पीपी सिंघल ऑडिटोरियम में व्यवसाय की सफलता में आईटी की भूमिका विषय पर संगोष्ठी हुई। इस अवसर पर यूसीसीआई के नवीनीकृत पोर्टल एवं वेबसाइट का शुभारम्भ किया गया। हिंदुस्तान जिंक की मुख्य सूचना एवं सुरक्षा अधिकारी रमा देवी संगु, पीआई इंडस्ट्री के मुख्य परिवर्तन अधिकारी समीर डागा, सिक्योर मीटर्स लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमित माथुर ने व्यवसाय में सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर अध्यक्ष संजय सिंघल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. अंशु कोठारी भी उपस्थित थे।

रावियि में डॉ. श्रीमाली बने रजिस्ट्रार

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के नवनियुक्त रजिस्ट्रार डॉ तरूण श्रीमाली ने गत दिनों पदभार ग्रहण कर लिया। उनका कुलपति प्रो एसएस सारंगदेवोत कलप्रमुख भंवरलाल गुर्जर, सहित कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। इस अवसर पर प्रो. सारंगदेवोत ने कहा विद्यापीठ कार्यकर्ताओं की संस्था है। इसे सामूहिक भागीदारी से और ऊपर उठाना है।

गोल्ड मेडल जीतने पर खान का सम्मान

उदयपुर। भूटान में हुई टेनिस बॉल क्रिकेट बाइलेट्रल सीरीज में उदयपुर के शाहरूख खान ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए गोल्ड मेडल जीता। इस उपलब्धि के लिए उन्हें सांसद अर्जुन लाल मीणा व जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने मेडल पहना कर सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद मयंक मनीष, गिर्वा उपखंड अधिकारी सलोनी खेमका, जिला खेल अधिकारी शकील हुसैन, क्रिकेट प्रशिक्षक दिलीप भण्डारी आदि मौजूद थे।

आद्य शंकराचार्य जयंती मनाई

उदयपुर। दशनामी गोस्वामी समाज द्वारा हाथीपोल स्थित नर्बदेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में आद्य शंकराचार्य जयंती समारोह सन्त दयाराम महाराज के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता समाज के अध्यक्ष गजेन्द्र पुरी गोस्वामी ने की। उदयपुर महिला एवं बाल विकास समिति के व्यवस्थापक रमेश गोस्वामी ने बताया कि समारोह में समिति की संस्थापक सचिव शकुन्तला गोस्वामी का समाज सेवा के लिए सम्मान किया गया। इस अवसर पर राजेश भारती, त्रिलोकपुरी, हरीशपुरी, गीता भारती सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

विशाल जैन बने मेजर

उदयपुर। शहर के विशाल जैन ने भारतीय सेना में कैप्टन पद से पदोन्नत होकर मेजर बनने का गौरव हासिल किया। जैन का जयपुर से सिविल इंजीनियरिंग में डिग्री के पश्चात प्रथम प्रयास में एसएसबी उत्तीर्ण कर भारतीय सेना में चयन हुआ और चेन्नई में एक वर्ष के कठिन प्रशिक्षण के बाद मार्च 2018 में लिफ्टिनेंट पद पर कमिशन हुए। अपने अदम्य साहस व जज्बे के साथ कैप्टन पद पर सेवाएं देते हुए पदोन्नत होकर मेजर पद पर आसीन हुए।

खम्मा-घणी का विमोचन

उदयपुर। नगर के जाने माने सूक्ष्म कृतिकार चन्द्र प्रकाश चित्तौड़ा द्वारा निर्मित सूक्ष्म पुस्तिका 'खम्मा-घणी' का विमोचन वल्लभनगर विधायक प्रीति शक्तावत ने किया। पुस्तक में उदयपुर के इतिहास परम्परा व पर्यटन स्थलों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर एम.स्क्वायर के मुकेश माधवानी, रोटरी क्लब पन्ना के पीढी जी, निर्मल सिंघवी, रोटरी अध्यक्ष महेश सेन भी उपस्थित थे।

भोजन वितरण संस्थान का स्थापना दिवस

उदयपुर। निःशुल्क भोजन वितरण सेवा संस्थान का चौथा स्थापना दिवस रामपुरा स्थित शिक्षा सदन में मनाया गया। मुख्य अतिथि समाजसेवी शेख शब्बीर के. मुस्तफा ने कहा कि भूखे को भोजन कराना सच्ची ईश्वर सेवा है। अध्यक्षता करते हुए रूचिका चौधरी ने कहा कि सेवा कार्यों का मूल्यांकन नहीं हो सकता। कार्यक्रम में शहीद परिवारों के साथ रक्तवीरों और सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 26 विभूतियों का सम्मान किया गया। इस मौके पर संस्थान के संरक्षक महावीर नागदा, विशिष्ट अतिथि सुशील चित्तौड़ा और मनीष उधानी ने भी विचार व्यक्त किए।

रावत गीतांजलि यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार बने

उदयपुर। मयूर रावल ने गीतांजलि यूनिवर्सिटी में रजिस्ट्रार पद पर कार्यभार ग्रहण किया। इस दौरान गीतांजलि ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, गीतांजलि मेडिकल कॉलेज के वाइस चांसलर डॉ. एफएस मेहता, गीतांजलि हॉस्पिटल के सीइओ प्रतीम तंबोली व मेडिकल सुपरिटेंडेंट (कर्नल) डॉ. सुनीता दशोत्तर आदि मौजूद थे।

कलेक्टर मीणा का सागवाड़ा में अभिनंदन

सागवाड़ा। जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा को राज्य सरकार की ओर से सीएम एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किए जाने पर डूंगरपुर जिले के सागवाड़ा शहर में नागरिक अभिनंदन किया गया। जल संसाधन मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालवीय, टीएडी मंत्री अर्जुनसिंह बामनिया, दिनेश खोडणिया, असरार अहमद, विधायक दयाराम परमार, रामलाल मीणा, नगराज मीणा, पूर्व विधायक लालशंकर घटिया, शंकरलाल अहारी, जनजाति आयोग सदस्य पन्नालाल मीणा, सागवाड़ा नगरपालिका अध्यक्ष नरेन्द्र खोडणिया सहित कई विशिष्ट जनों की मौजूदगी में कलक्टर मीणा को फूलमालाओं, शॉल ओढ़ाकर व अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया।

निरोगी राजस्थान का संकल्प पूर्ण कर रही नारायण सेवा: शकुंतला रावत

उदयपुर। राजस्थान को सशक्त और निरोगी बनाने के सरकार के संकल्प में नारायण सेवा संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह बात गत दिनों उद्योग एवं देवस्थान मंत्री शकुंतला रावत ने कही। उन्होंने यहां 101 दिव्यांगजन के निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि नारायण सेवा संस्थान दिव्यांगजन को उनके पांवों पर खड़ा कर ईश्वरीय सेवा को साकार कर रही है। उन्होंने संस्थान द्वारा दिव्यांगजन को दिए जा रहे रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षणों का भी अवलोकन किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि श्रम कल्याण बोर्ड के उपाध्यक्ष जगदीश राज श्रीमाली, गांधी दर्शन समिति के जिला संयोजक पंकज कुमार शर्मा व पार्षद गिरीश भारती थे। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने उद्योग मंत्री का स्वागत करते हुए बताया कि संस्थान अब तक 4.50 लाख जन्मजात दिव्यांगों के ऑपरेशन तथा 32 हजार से अधिक कृत्रिम अंग प्रदान कर उन्हें अपने पांवों पर खड़ा करने में सफल हुआ है। निदेशक देवेन्द्र चौबीसा ने धन्यवाद ज्ञापन व संचालन ऐश्वर्य त्रिवेदी ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी व भगवान प्रसाद गौड़ भी उपस्थित थे।

अनुष्का की नई शाखा का शुभारंभ

डूंगरपुर। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए वागड़ के प्रतिभागियों के लिए कोचिंग संस्थान अनुष्का एकेडमी ने अपनी नई शाखा का उद्घाटन किया है। डूंगरपुर शहर के बीच माथुगामडा रोड के पास शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि गौड़ नवयुवक सेवा संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेंद्र उपाध्याय, वरिष्ठ सदस्य नन्दलाल जोशी, कोषाध्यक्ष हरिश गामोट, व्यवस्थापक रूद्रेश भट्ट, लाल बहादुर गौड़ आदि थे। संस्थापक डॉ. एसएस सुराणा ने फीता काटकर उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों को संस्कारवान शिक्षा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। सचिव राजीव सुराणा, भूपेश परमार, प्रणय जैन, जितेंद्र मेनारिया, शैलेन्द्र चारण, अध्यक्ष कमला सुराणा ने विचार व्यक्त रखे। संचालन ज्योति जैन ने किया। रंजना सुराणा ने आभार जताया।

गोठवाल सचिव मनोनीत

उदयपुर। रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3056 के प्रान्तपाल डॉ. निर्मल कुणावत ने रोटरी क्लब उदय के सदस्य दिनेश गोठवाल को रोटरी वर्ष 2023-24 के लिए जिला रोटरी मीडिया प्रचार समिति के सचिव पद पर मनोनीत किया।

सुनील दाधीच सम्मानित

जयपुर। अंतरराष्ट्रीय नर्सेज दिवस के मौके पर यहां बिरला ऑडिटोरियम में चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा, शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला व राजस्थान नर्सिंग कौंसिल के रजिस्ट्रार शशिकांत शर्मा द्वारा मेवाड़ बीएससी नर्सिंग कॉलेज, उदयपुर के प्राचार्य सुनील दाधीच को फ्लोरेंस नाइटेंगल अवार्ड 2023 से सम्मानित किया गया।

रॉयल संस्थानः टॉपर्स को बाइक व स्कूटी

उदयपुर। रॉयल संस्थान के वार्षिक उत्सव में टॉपर्स को बाइक व स्कूटी देकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़, विशिष्ट अतिथि डॉ. एन.एस. राठौड़ एवं कलेक्टर ताराचंद मीणा थे। संस्थान के 100000 से अधिक डाउनलोड होने पर क्लास प्लस की ओर से डायमण्ड पुरस्कार दिए गए। अतिथियों ने प्रतियोगी परीक्षाओं में टॉप करने वाले छात्र-छात्राओं को 11-11 हजार रूपए के चेक दिए। निदेशक जी.एल. कुमावत ने सर्वश्रेष्ठ परिणाम का श्रेय गुरू जन एवं अभिभावकों को दिया।

जय दृष्टि आई हॉस्पिटल ने मनाया स्थापना दिवस

उदयपुर। जय दृष्टि आई हॉस्पिटल ने 13वां स्थापना दिवस मनाया। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. शर्वा पंड्या ने बताया कि हॉस्पिटल मेवाड़-वागड़ और मारवाड़ सहित पूरे राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में सेवा दे रहा है। संस्थापक डॉ. उपवन पंड्या ने बताया कि इस हॉस्पिटल में मरीजों का आधुनिक तकनीक से इलाज किया जा रहा है। विस्तार के क्रम में शीघ्र ही चित्रकूट नगर में भी ओपीडी नेत्र चिकित्सा सेवा शुरू की जाएगी।

रॉकवुड के छात्रों का राष्ट्रीय स्तर पर चयन

उदयपुर। सेंट्रल पब्लिक स्कूल में रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता की ट्रायल हुई। इसमें रॉकवुड्स स्कूल के तीन छात्रों लब्धि सुराणा, सोमिल, निवृति परमार का चयन राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए हुआ। तीनों छात्रों को निदेशक दीपक शर्मा ने बधाई दी।

डॉ. लुहाड़िया को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के चेस्ट एवं टीबी विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. एसके लुहाड़िया को थोरेसिक एंडोस्कोपी क्षेत्र में विशेष योगदान देने के लिए जालंधर में थोरेसिक एंडोस्कोपी सोसायटी द्वारा आयोजित छठे राष्ट्रीय सम्मेलन टेस्कॉन में विश्व स्वास्थ्य दिवस पर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. लुहाडिया को इस प्रतिष्ठित अवार्ड से सम्मानित होने पर गीतांजलि समूह के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, गीतांजलि हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतीम तंबोली, डीन डॉ. डीसी कुमावत आदि ने बधाई दी।

माधवानी तीसरी बार अध्यक्ष

उदयपुर। शक्तिनगर व्यापार मंडल की बैठक में मुकेश माधवानी को तीसरी बार निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। कार्यकारिणी में महासचिव जितेंद्र कालरा, गोवर्धन राठौड़ एवं नक्षत्र तलेसरा वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कमलेश राजानी, पुष्पेंद्र शर्मा, अनिल सचदेव और भगवान को उपाध्यक्ष, आशीष गखरेजा सहसचिव एवं पुनीत आहूजा को सांस्कृतिक मंत्री बनाया गया।

नर्सिंग डे पर विविध आयोजन

उदयपुर। स्थानीय नर्सिंग कॉलेजों में अन्तर्राष्ट्रीय नर्सेज दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। संजीवनी कॉलेज ऑफ नर्सिंग में छात्र व छात्राओं ने फ्लोरेंस नाइटेंगल के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया एवं समाज व देश सेवा की शपथ ग्रहण की। कार्यक्रम में निदेशक अशोक लिंजारा, भव्य लिंजारा, प्राचार्य युगल स्वर्णकार, विनोद कुमार यदुवंशी एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहे।

इसी प्रकार अरिहन्त नर्सिंग इन्स्टिट्यूट सहेली मार्ग में छात्र-छात्राओं ने रंगारंग प्रस्तुतियां दी। अध्यक्षता संस्थान निदेशक मयंक कोठारी ने की। मुख्य अतिथि शिक्षाविद् एवं अर्हम् शिक्षा एवं शोध संस्थान के संस्थापक डॉ. देव कोठारी थे। अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि के द्वारा दीप प्रज्वलन, एवं छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुख्य अतिथि ने छात्रों से नर्सिंग कार्य के प्रति हमेशा ईमानदार बने रहने की अपील की। अध्यक्ष कोठारी ने छात्रों को वर्तमान परिपेक्ष्य में नर्सिंग क्षेत्र की महत्ता बताते हुए कोविड महामारी के दौरान नर्सिंग छात्रों द्वारा किये गये कार्यों की सराहना की।

शहीद मुस्तफा के जन्मदिन पर रक्तदान

उदयपुर। शहीद मेजर मुस्तफा के जन्मदिन के उपलब्ध में शहीद मेजर मुस्तफा ट्रस्ट की ओर से आयोजित शिविर में 131 लोगों द्वारा रक्तदान किया गया। सभी रक्तदाताओं को सम्मानित किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि असम के राज्यपाल गुलाब चंद्र कटारिया थे। इसके अलावा कलक्टर ताराचंद मीणा, समाज कल्याण बोर्ड की सदस्य दिव्यानी कटारा समाजसेवी पंकज कुमार शर्मा, पूर्व सभापति रवींद्र श्रीमाली मौजूद रहे। ट्रस्ट की ओर से फातेमा, जकिउद्दीन, डॉ. अलेफिया, अली भाई उपस्थित रहे। संचालन रोहित बंसल द्वारा किया गया।

घुमंतू जातियों को सामाजिक दृष्टि से आगे लाने की जरूरत

उदयपुर। राजस्थान विमुक्त घुमंतू एवं अर्द्धघुमंतू कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष एवं राज्य मंत्री श्रीमती उर्मिला योगी ने समाज के प्रबुद्ध लोगों एवं सामाजिक संस्थाओं से आग्रह किया कि विमुक्त घुमंतू जातियों के कल्याण के राज्य सरकार ने जो अनेक कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं। उनका लाभ उन तक पहुंचाने में मदद करें। वे प्रत्यूष पत्रिका कार्यालय में आयोजित एवं संगोष्ठी को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि आज भी इन जातियों को आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से आगे लाने की जरूरत है।

पत्रिका के प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने उनका स्वागत किया एवं पिछड़ी जातियों के कल्याण के लिये अलग से शिविर लगाए जाने की आवश्यकता बताई। विशिष्ट अतिथि डॉ. ओपी महात्मा, भगवान प्रसाद गौड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संयोजन नंद किशोर शर्मा ने व धन्यवाद ज्ञापन दुर्गेश मेनारिया ने किया। इस अवसर पर मोहम्मद अबरार, उदयलाल प्रजापत, अशोक शर्मा, सरला शर्मा भी मौजूद थे। पत्रिका द्वारा शॉल,उपरणा ओढाकर अभिनन्दन किया गया।

नीरजा मोदी स्कूल में परिंडों का वितरण

उदयपुर। नीरजा मोदी स्कूल में गर्मी में भूख प्यास से व्याकुल पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था हेतु सभी बच्चों को परिंडे वितरित किए गए। मुख्य अतिथि वल्लभनगर विधायक प्रीति गजेंद्र सिंह शक्तावत ने कहा कि बच्चों को उच्चसंस्कार देने के लिए स्कूल मैनेजमेंट धन्यवाद का पात्र है, चेयरमैन डॉ महेंद्र सोजतिया ने बच्चों से कहा कि पक्षियों के प्रति दया भाव रखते हुए वे इन परिंडो को अवश्य लगाएं और नियमित रूप से पक्षियों के लिए दाना पानी डालें। निदेशिका साक्षी सोजतिया ने कहा कि पशु पक्षियों की सेवा हमारा धर्म है।

पालीवाल महासचिव बने

उदयपुर। देहात जिला युवक कांग्रेस के महासचिव पद पर अमित पालीवाल निर्वाचित घोषित किए गए।

डॉ. पानेरी के काव्य संग्रह का विमोचन

उदयपुर। लोकजन सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित डॉ. ममता पानेरी के काव्य संग्रह 'कविता की अनुगूंज' का विमोचन मुख्य अतिथि न्यायाधीश शिवकुमार शर्मा ने किया। मुख्य वक्ता डॉ. मंजु चतुर्वेदी व डॉ. चंद्रकांता व लेफ्टिनेंट जनरल एन.के सिंह विशिष्ट अतिथि थे। माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय के कुलसचिव डॉ. धर्मेन्द्र राजोरा, राजस्थान विद्यापीठ हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. मलय पानेरी, डॉ. प्रीति भट्ट, डॉ. राजेश शर्मा आदि ने भी विचार रखे।

नए एआरओ ने संभाली जिम्मेदारी

उदयपुर। सिटी रेलवे स्टेशन पर नए एआरओ ने जिम्मेदारी संभाल ली। एआरओ बद्रीप्रसाद स्वमी का स्थानांतरण जयपुर हुआ और उनकी जगह अजमेर में महेंद्र देपाल को यहां नियुक्त किया गया। उत्तर-पश्चिम रेलवे मजदूर संघ के सदस्यों ने नए एआरओ का स्वागत किया और पुराने एआरओ का अभिनंदन किया। इस दौरान उमराव मीणा, संजय शमार, नरेंद्र शर्मा, हसंराज मीणा, रतनसिंह, हरिकेश मीणा, पूखराल चौधरी, सय्यद सजाद आलम, प्रकाश सुखवाल, विकास मीणा आदि मौजूद थे।

'नृत्यम' में रंगारंग प्रस्तुतियों ने किया मोहित

उदयपुर। भारतीय लोक कला मंडल में विश्व नृत्य दिवस पर आयोजित 'नृत्यम 2023' में प्रतिभाओं ने रंगारंग प्रस्तुतियों से दर्शकों को मोहित किया। मंडल के निदेशक डॉ. लईक हुसैन ने बताया कि आयोजन मुक्ताकाशी रंगमंच पर किया गया। संस्था के मानद सचिव सत्य प्रकाश गौड़, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश कुलदीप शर्मा, गांधी दर्शन समिति के संयोजक पंकज कुमार शर्मा, तारिक खान आदि ने कार्यक्रम की शुरूआत की। कत्थक नृत्य गुरू रेणु गरेरे के शिष्यों द्वारा गुरू एवं गणेश वंदना की प्रस्तुति दी गई। उसके पश्चात पूजा नाथावत की भरत नाट्यम, गीतांजलि इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजिकल स्टडीज के छात्रों द्वारा

राजस्थानी लोक नृत्य, ओडीसी नृत्य की गुरू श्रीमती शैली श्रीवास्तव के शिष्यों द्वारा स्तुति, स्थाई एवं वंदेमातरम, कत्थक नृत्य गुरू डॉ. सरोज शर्मा के शिष्यों ने इंद्र धनुष, ओडीसी नृत्य गुरू कृष्णानेंदू साहा के शिष्यों ने पल्लवी एवं मंगला चरण, कत्थक नृत्य गुरू शिप्रा चटर्जी के शिष्यों ने सम सामूहिक कत्थक शैली में महिला सशक्तिकरण की प्रस्तुतियां दी।

बीएन में भी मनाया नृत्य दिवस: भूपाल नोबल्स पब्लिक स्कूल में नृत्य दिवस के अवसर पर एकल नृत्य प्रतियोगिता का रंगारंग आयोजन हुआ। प्राचार्य डॉ. सीमा नरूका ने बताया कि नर्सरी से 12वीं तक के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में उत्साह से भाग लिया। प्री-प्राइमरी विंग से महेंद्र प्रताप सिंह ने प्रथम और कनिष्का चूंडावत ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जूनियर वर्ग के प्रथम स्थान पर आराध्या एवं निवेदिया राव रहे एवं द्वितीय स्थान पर मिताली एवं साक्षी सैनी रहे। सीनियर वर्ग में महिमा मीणा ने प्रथम स्थान एवं मनस्वी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

पांच शहीदों सहित इक्कीस को 'उदयपुर रत्न सम्मान'

उदयपुर/ प्रब्यू। बहुत कम आयोजन ऐसे होते हैं जिनके मंच पर 10 साल की उम्र से लेकर 100 साल तक की प्रतिभाओं को चुनकर एक साथ सम्मानित किया जाता है। लेकिन झीलों की नगरी उदयपुर में पिछले दिनों एक कार्यक्रम ऐसा सम्पन्न हुआ जहां शिल्प, शिक्षा, साहित्य, स्वरोजगार, प्रशिक्षण और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी बीसियों शख्सियतों का नागरिक अभिनंदन किया गया। मौका था सुखाड़िया विश्व विद्यालय अतिथि सभागार में राजस्थान संस्कृति एवम साहित्य संस्थान द्वारा आयोजित उदयपुर रत्न सम्मान समारोह की तीसरी कड़ी का। जहां मेजर अनुज सूद (चंडीगढ़) कैप्टन अनुज नैय्यर और लेफ्टिनेंट किरण शेखावत (दिल्ली) मेजर मुस्तफा (उदयपुर) रामकिशोर पांडे (लखनऊ) सहित कुल पांच शहीदों को मरणोपरांत सम्मानित कर गौरव प्रदान किया गया। जिस पल उनके परिजनों को खचाखच भरे सभागार में खड़े होकर गरिमापूर्ण सम्मान प्रदान किया, उस दौरान हर आंख नम थीं लेकिन मन में शहीदों और वीर परिवारों के प्रति आदर भाव की गहरी चमक भी थीं।

इन्हें मिला सम्मानः सर्वश्री हीरालाल सुहालका (शतायु स्वतंत्रता सेनानी) लाड लोहार (वुमन वेलफेयर) नीरज सनाढ्य (साहित्य) भुवनेश्वर श्रीमाली (यंग अचीवर) दिग्विजय सिंह (यंग अचीवर) मनन जैन (12) चंद्रप्रकाश चित्तौड़ा (सूक्ष्म पुस्तिका निर्माण) डॉ. निर्मल यादव (युवा चित्रकार) चमन सिंह (वाइल्ड एनिमल रेस्क्यू) डॉ. अंजू बेनीवाल (शिक्षा) डॉ. नीता परिहार (इंटीरियर डिजाइनर) चारूलता पालीवाल (नाथद्वारा - वुमन वेलफेयर) डॉ. नीता त्रिवेदी (शिक्षा) निखिल मेहता (सीए यंग अचीवर) सुनील लड्ढा (आर्किटेक्चर) विश्व मेहता (यंग अचीवर) इस ख़ास मौके पर मुख्य अतिथि डॉ. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी (महामंडलेश्वर किन्नर अखाड़ा) व पवित्रानंद गिरी (महामंडलेश्वर उज्जैन किन्नर अखाड़ा) थे। विशिष्ठ अतिथि के रूप में युवा उद्यमी सौरभ पालीवाल, प्रो. अल्पना सिंह उपस्थित थे। अध्यक्षता आकाशवाणी उदयपुर के कार्यक्रम प्रमुख महेंद्रसिंह लालस ने की। इनके अलावा नेहा पालीवाल, प्रिंकेश जैन, चेतन श्रीमाली, डॉ. श्वेता शर्मा, शानू लोढ़ा की भी महत्वपूर्ण भागीदारी रही। संस्थापक अध्यक्ष रोहित बंसल ने बताया कि प्रति वर्ष आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज और आसपास क्षेत्र से ऐसी प्रतिभाओं को चुनकर सम्मानित करना है जो या तो गुमनामियों के अंधेरों में खोई है या जिनको अपनी पहचान बनाने का कभी कोई मंच नहीं मिलता। चंद्रकला चौधरी के संस्थान कथक आश्रम की छात्राओं द्वारा गणेश वंदना प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम संचालन शालिनी भटनागर व भावना व्यास तथा सचिव मधु औदिच्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आंचलिया और सीमा का अभिनंदन

उदयपुर। महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति व शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के जिला संयोजक पंकज कुमार शर्मा ने कांग्रेस मीडिया सेंटर पर आजादी के इतिहास की और हजारों गुमनाम शहीदों की वीरगाथा लिखने वाले मनोज आंचलिया और सीमा वेद को महात्मा गांधी प्राइम मेडल अवार्ड का सर्टिफिकेट जारी होने पर उन्हें प्रदान किया। इस अवसर पर पंकज कुमार शर्मा ने मनोज आंचलिया को उपरणा पहना कर अभिनंदन किया।

प्रो. व्यास सम्मानित

उदयपुर। शिक्षाविद् प्रो. पीआर व्यास को पृथ्वी दिवस पर हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड राजस्थान राज्य द्वारा उनके अनुकरणीय कार्यों के लिए राज्य मुख्यालय पर सम्मानित किया गया।

ईकॉन उदयपुर के एमडी तायलिया को अंतरराष्ट्रीय सम्मान

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय ग्लोबल अचीवर अवार्ड समारोह का आयोजन मेरीयट होटल में हुआ। कई देशों से सीइओ, चेयरमैन, डायरेक्टर, राजनायिक और मीडिया की मौजूदगी रही। इसमें ईकॉन उदयपुर के एमडी शुभम तायलिया को सम्मानित किया गया। शुभम ने अपने गुरू व पिता उद्यमी डॉ. जे.के. तायलिया के मार्गदर्शन में सफलता की कहानी बताई। उन्होंने कहा कि भारत के युवा उद्यमियों के मेक इन इंडिया से भारत पुनः सोने की चिड़िया बन रहा है। व्यवसाय टर्न ओवर नहीं, बल्कि मूल्यों पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने अवार्ड अपने परिवार, टीम, कस्टमर और उदयपुर को समर्पित किया।

पाठक पीठ

गीता तिवारी का 'शिक्षा का लक्ष्य चरित्र निर्माण' आलेख हर दृष्टि से अच्छा था। चरित्र के संकट को संस्कार युक्त शिक्षा ही समाप्त कर सकती है। जब तक पारिवारिक परिवेश भारतीय संस्कृति, उसके मूल्यों और मान्यताओं के अनुसार नहीं होगा। बच्चा व्यक्तित्व निर्माण की दौड़ में पीछे ही रहेगा। अत: इस ओर ध्यान दिलाने के लिए लेखिका बधाई की पात्र है।

राहुल अग्रवाल, चेयरमैन,
पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल

प्रत्यूष नियमित रूप से प्रति माह प्राप्त हो रही है। मई के अंक में अमित शर्मा का आलेख 'मन की शांति के चार धाम' अच्छा लगा। इस सामयिक आलेख के माध्यम से हमने मानसिक रूप से इस आध्यात्मिक यात्रा को एक तरह से पूर्ण किया। चारों धाम सहित गुरुद्वारा हेमकुण्ड साहिब के बारे में भी नई जानकारी मिली।

राजेन्द्र पारीक, सीनियर वाईस
प्रेसिडेंट, गोलछा ग्रुप

प्रत्यूष के मई अंक में अंतर्राष्ट्रीय खेलों में भारतीय बेटियों की निरंतर बढ़ती धमक से संबंधित प्रिशा शर्मा का आलेख निश्चित रूप से लड़कियों का उत्साहवर्द्धन करेगा। इसी आलेख में उदयपुर निवासी वृद्ध दंपती द्वारा ऑल इंडिया मास्टर्स बैडमिंटन के मिक्स डबल में शानदार प्रदर्शन कर कांस्य पदक जीतने की जानकारी से भी खुशी हुई। उन्हें बधाई।

प्रियराज सिंह राठौड़,
उद्योगपति

इसी माह 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। इस संबंध में मई के अंक में योगाचार्य कौशल कुमार ने जो योगासन बताएं हैं, निश्चित ही इस मौसम में उसका अभ्यास किया जाना चाहिए। योग तन की ही नहीं मन की बीमारियों को भी ठीक करने वाला है।

महेन्द्रपाल सिंह छाबड़ा,
उद्योगपति

अध्ययन

धरती से दूर जा रहा चंद्रमा

चंद्रमा धीरे-धीरे पृथ्वी से दूर होता जा रहा है। एक अध्ययन के मुताबिक इसकी कक्षा नाखून बढ़ने की दर से धरती से दूरी हो रही है। अगर यह क्रम जारी रहा तो 5 अरब वर्षों में चंद्रमा लगभग एक लाख 89 हजार किमी और दूर चला जाएगा। इस दौरान वह सूरज में जाकर भस्म हो जाएगा। इस अध्ययन को लाइव साइंस जर्नल में प्रकाशित किया गया है। वैज्ञानिकों ने परावर्तक पैनलों की मदद से इस दर को निर्धारित किया है। ये पैनल अपोलो मिशन के दौरान वहां रखा गया था। शोधकर्ताओं ने प्रकाश की गति का उपयोग करते हुए पता लगाया कि चंद्रमा प्रति वर्ष लगभग 1.5 इंच यानी नाखून बढ़ने की दर से पृथ्वी से दूर जा रहा है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के खगोल वैज्ञानिक मैडलिन ब्रूम ने बताया कि लगभग 4.5 अरब साल पहले चंद्रमा बना था। इस दौरान पृथ्वी की घूमने की दर काफी तेज रही होगी, चूंकि पृथ्वी और चंद्रमा एक ही गुरूत्वाकर्षण रूप से क्रिया करते हैं। ऐसे में पृथ्वी घूमने की गति का असर चंद्रमा की कक्षा पर पड़ रहा है।

एक ही हिस्सा दिखाई देगा

रॉयल ऑब्जर्वेटरी का अनुमान है कि लगभग 5 अरब वर्षों में पृथ्वी के घूमने की दर इतनी धीमी हो जाएगी कि पृथ्वी से चंद्रमा सिर्फ एक ही तरफ दिखाई देगा। इस बिंदु पर चंद्रमा और पृथ्वी एक दूसरे से दूर जाना बंद कर देंगे। शोधकर्ताओं ने बताया कि यह पृथ्वी के चक्कर लगाना नहीं छोड़ेगा, लेकिन यह धीरे-धीरे काफी दूर जाकर सूरज में भस्म हो जाएगा।

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्री किशोरीलाल जी माथुर का 23 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र डॉ. विपिन माथुर (प्राचार्य आरएनटी मेडिकल कॉलेज), डॉ. संजय माथुर, भाई-भतीजों, बहिनों का संपन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक व चिकित्सा संगठनों ने शोकाभिव्यक्ति के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की।

उदयपुर। श्री बोहरा गणेशजी मंदिर के पुजारी एवं मुख्य ट्रस्टी श्री भैरूलाल जी जोशी का 20 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती नानीबाई, पुत्र नरेश, कैलाश व पंकज जोशी, पुत्री श्रीमती राजकुमारी नागदा, भाई-भतीजों, बहिनों व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। आकाशवाणी के पूर्व उप महानिदेशक स्व. माणिक आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती आशा आर्य का 9 मई को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र सौरभ, पुत्रियां श्रीमती कामिनी व दामिनी आर्य तथा जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी एवं दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री वृद्धिशंकर जी औदिच्य का 14 मई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती भगवती देवी, पुत्र भगवान लाल, वैद्य शोभालाल औदिच्य (वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी) व पौत्र-पौत्रियों, भतीजों सहित संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

VIJETA NAMKEEN PRODUCTS

Main Road Bhupalpura, Udaipur-313001, Rajasthan INDIA, Contact No. : 0294-2415817, Mob. : 09828555227
E-mail ID. : vijetanamkeen@gmail.com

With Best Compliments from

NAHAR

COLOURS & COATING LTD.

Certified ISO 9001 by BVQI UKAS QUALITY MANAGEMENT

NCCL, House, G-1, 90-93, Sukher Industrial Park
Udaipur-313004 INDIA
Tel. : +91-294-2440307-309 | Fax : +91-294-2440310
E-mail : ramesh@naharcolours.net

SHREEJI EXOTICA

Amenities

Temple
Aroma Floral Garden
Guest Room
GYM/Indoor Games
Kid's Play Area

MTR GROUP

M.T.R. INFRAPROJECTS

(ENGINEERS & CONTRACTORS)

ISO 9001:2008
Email: mtr.udaipur@gmail.com
web: www.MTR-CONSTRUCTION.COM

Head Off:
49, Tirupati Vihar, Pulla
Udaipur (Raj.) 313 001

Branch Office:
19, Roopmadhuban, Shobhagpura Circle, 100 Feet Road, Udaipur (Raj.)

Geetanjali Cancer Centre
Excellence in Cancer Care... Everyday

GMCH
GEETANJALI HOSPITAL

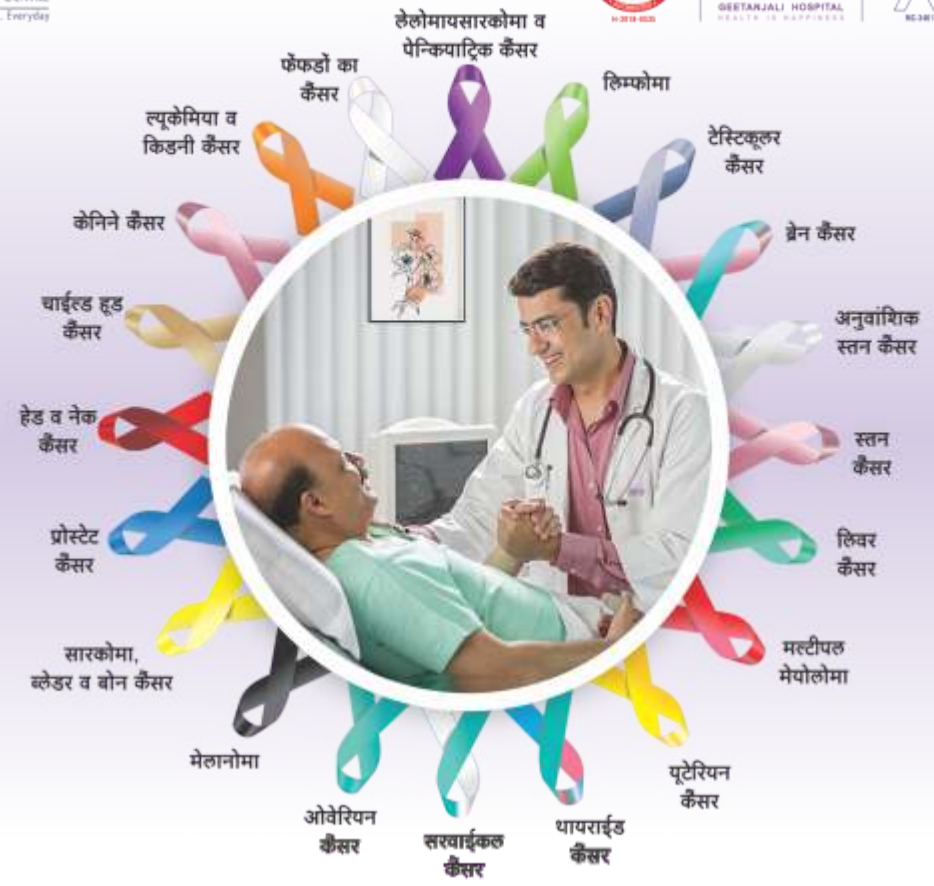

जब हो कैंसर के उपचार से जुड़ी कोई की बात

गीतांजली कैंसर सेंटर है सदा आपके साथ

इस भागीदारी को सतत् 11 वर्षों से निभाता आया है, यहाँ कुशल व प्रतिष्ठित डॉक्टर्स की टीम द्वारा विश्वस्तर पर लागू प्रोटोकॉल आधारित तकनीकों द्वारा निरंतर इलाज किया जा रहा है।

मेडिकल ऑन्कोलोजिस्ट	सर्जिकल ऑन्कोलोजिस्ट	रेडियेशन ऑन्कोलोजिस्ट	न्यूक्लियर मेडिसिन	ऑन्को एनेस्थेटिस्ट एवं पेन एंड पैलिएटिव केयर
डॉ. अंकित अग्रवाल डॉ. रेणु मिश्रा	डॉ. आशीष जाखेटिया डॉ. अजय कुमार यादव	डॉ. ए.आर. गुप्ता डॉ. रमेश पुरोहित	डॉ. रितेश उपाध्याय	डॉ. सीमा परतानी डॉ. नवीन पाटीदार

दक्षिणी राजस्थान का एकमात्र 30 बेडेड कीमोथेरेपीडे–केयर सेन्टर

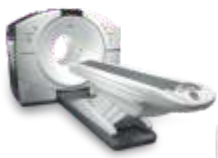

PET-CT SCAN
Discovery IQ Gen 2, 3 Rings

ट्यूमर बोर्ड / TUMOR BOARD

इस बोर्ड के अन्तर्गत कैंसर की चारों शाखाएं प्रत्येक कैंसर ट्यूमर का समन्वित एवं योजनाबद्ध तरीके से उपचार को सुनिश्चित करती है।

अब तक के लाभार्थी	45,062+ कीमोथेरेपी	4,224+ सर्जरी	2,48,372+ रेडियोथेरेपी	1,100+ ब्रेकिथेरेपी	303+ रेडियोसर्जरी

Linear Accelerator
Elekta Versa HD
SRS, SBRT, IGRT, VMAT, IMRT, 3D CRT

मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना | राजस्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम (RGHS)

• भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ECHS) • कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) • उत्तर पश्चिमी रेलवे (NWR) • हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (HZL)
• स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (SBI) • भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL) • भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI) • भारतीय खाद्य निगम (FCI)
• राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड (RSMML) • सभी महत्वपूर्ण टी.पी.ए. (TPA) व इन्श्योरेन्स से अधिकृत।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल | नेशनल हाईवे-8 बायपास, एकलिंगपुरा चौराहा के पास, उदयपुर (राज.) | +91 91161 51129 +91 294 250 0044

RK GROUP

वंडर लाइए
फर्क नज़र
आएगा

Toll-Free No.: 1800 31 31 31 | www.wondercement.com

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 21 अंक 02, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur
'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001